'कौल-कल्पतरु'
चण्डी

श्री श्रीविद्या-साधना

श्रीललिता-आराधना

भगवती श्री ललिता का
सूर्य-मण्डल,
चन्द्र-मण्डल एवं
सुधा-सागर में
ध्यान

पुष्प ३

प्रकाशक : परा-वाणी आध्यात्मिक शोध-संस्थान
श्रीचण्डी-धाम, अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-२११००६

भगवती श्रीललिता-ध्यान-योग

भगवती श्रीललिता की आराधना के लिए अपने से बाहर बाह्य-वातावरण में मन-ही-मन मुख्य रूप से तीन प्रकार से ध्यान करना चाहिए। यथा- १ '**सुधा-सागर**' के मध्य में, २ '**सूर्य**'-**मण्डल** के मध्य में और ३ '**चन्द्र**'-**मण्डल** के मध्य में। तीनों प्रकार के ध्यानों से विभिन्न प्रकार की अनुभूतियाँ होती हैं।

(१)'**सुधा**'-**सागर** में **भगवती ललिता** का ध्यान-

विन्दु-स्थानं सुधा-सिन्धुः, पञ्च-योन्यः सुरद्रुमाः।
तत्रैव नीप-श्रेणी च, तन्मध्ये मणि-मण्डपम्।।
तत्र चिन्तामणि-कृतं, देव्या मन्दिरमुत्तमम्।
शिवात्मके महा - मञ्चे, महेशानोपबर्हणे।।
अति-रम्यतरे तत्र, कशिपुश्च सदा-शिवः।
भृतकाश्च चतुष्पादा, महेन्द्रश्च पतद् ग्रहः।।
तत्रास्ते परमेशानी, महा - त्रिपुर - सुन्दरी।
शिवार्क-मण्डलं भित्वा, द्रावयन्तीन्दु-मण्डलम्।।
तदुद्भूताऽमृतस्यन्दि - परमानन्द - नन्दिता।
कुल-योषित् कुलं त्यक्त्वा, परं वर्षणमेत्य सा।।

अर्थात् **भगवती ललिता** की आराधना के लिए मन-ही-मन अपने चारों ओर एक अनन्त '**सुधा**'-**सागर** की कल्पना करनी चाहिए। उस '**सुधा**'-**सागर** के बीच में '**कल्प**'-**वृक्षों की वाटिका** से घिरे हुए एक '**मणि**'-**मय मण्डप** की कल्पना करनी चाहिए। '**मणि**'-**मय मण्डप** में '**चिन्तामणि**' से निर्मित उस गृह की कल्पना करनी चाहिए, जिसमें **भगवती ललिता** निवास करती हैं और जिनके **मञ्च** के चार पायों के रूप में **ब्रह्मा, विष्णु, महेश** और **सदा-शिव** विराजमान हैं।

(२)'**सूर्य**'-**मण्डल** में **भगवती ललिता** का ध्यान-

सूर्य-मण्डल-मध्यस्थां, देवीं त्रिपुर-सुन्दरीम् ।
पाशांकुश-धनुर्बाण-हस्तां ध्यायेत् सु-साधकः।।
-'सुभगोदय'

अर्थात् **भगवती ललिता** की आराधना के लिए **सूर्य-मण्डल** के बीच **पाश, अंकुश, धनुष** और **बाण** धारण किए हुए **भगवती ललिता** का ध्यान करना चाहिए।

(३)'**चन्द्र**'-**मण्डल** में **भगवती ललिता** का ध्यान-

पौर्णमास्यां चन्द्र-बिम्बे, ध्यात्वा श्रीललिताम्बिकाम् । -'श्रीललिता-सहस्र-नाम'

अर्थात् **भगवती ललिता** की आराधना के लिए पूर्णिमा के चन्द्रमा के मण्डल के बीच ध्यान करना चाहिए।

'कौल-कल्पतरु' चण्डी की विशेष प्रस्तुति

श्री श्रीविद्या-साधना

(श्री श्रीविद्या-स्तव-मञ्जरी) पुष्प-३

श्रीललिता-आराधना

प्रेरणा-स्तम्भ

प्रातः-स्मरणीय 'कुल-भूषण' पं० रमादत्त शुक्ल

सम्पादक

ऋतशील शर्मा

★

प्रकाशक

पण्डित देवीदत्त शुक्ल स्मारक

परा-वाणी आध्यात्मिक शोध-संस्थान

कल्याण मन्दिर प्रकाशन

श्रीचण्डी-धाम, प्रयाग-राज-२११००६ ☎ ९४५०२२२७६७

Website : www.paravani.org Email : chandi_dham@rediffmail.com

अनुदान ३५/-

प्रकाशक

पण्डित देवीदत्त शुक्ल स्मारक

परा-वाणी आध्यात्मिक शोध-संस्थान

कल्याण मन्दिर प्रकाशन

श्रीचण्डी-धाम, प्रयाग-राज-२११००६ ☎ ९४५०२२२७६७

श्रद्धाञ्जलि!

जिनकी 'दिव्य कृपा' से

प्रस्तुत **श्री श्रीललिता-आराधना** का प्रकाशन हो रहा है

गुप्तावतार
बाबाश्री

कौल-कल्पतरु
पं० देवीदत्त शुक्ल

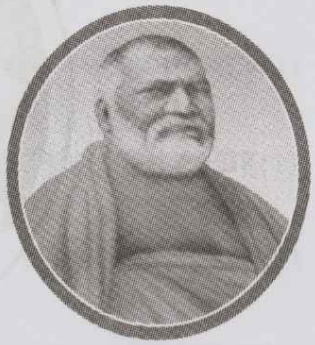

राष्ट्र-गुरु
स्वामी जी महाराज

कुल-मार्तण्ड
पं० योगीन्द्रकृष्ण दौर्गादत्ति शास्त्री

कुल-भूषण
पं० रमादत्त शुक्ल

तृतीय संस्करण

अक्षय तृतीया (परशुराम-जयन्ती), शोभन सं० २०६७ वि०-१६ मई, २०१०

सर्वाधिकार सुरक्षित

परा-वाणी प्रेस, अलोपी-देवी मार्ग, प्रयाग-राज (उ०प्र०)

प्राक्कथन

श्रीं राजेश्वरि! ह्रीं ललिताम्बिका । 'क ए ई ल ह्रीं' जगदम्बिका ।। श्रीं ०
'ह स क ह ल ह्रीं' कूट 'स क ल' च 'ह्रीं' त्वं । विश्व-जननि! मन-यन्त्रिका ।। श्रीं ०
पाप विकृति कलमष हरि जन निज । पालन पावन मन्त्रिका ।। श्रीं ०
विद्या पार परात्पर सुन्दरि! 'मोती' तारणि तन्त्रिका ।। श्रीं ०

-गुप्तावतार बाबाश्री

भगवती ललिता की आराधना को सम्पूर्ण भारत में एक महत्त्व-पूर्ण स्थान प्राप्त है। **जगद्-गुरु श्री शङ्कराचार्य** के **चारों मठों** में इन्हीं का यजन-पूजन होता है। इसके अतिरिक्त **कश्मीर** से लेकर **कन्या-कुमारी** तक लगभग पूरे **भारत** में इन्हीं या इनके उप-भेदों की आराधना का व्यापक प्रचार है।

भगवती ललिता की आराधना बहुत विस्तार के साथ सम्पन्न होती है। इस सम्बन्ध में विशाल साहित्य भी है, जिसका विद्वान् लोग ही अध्ययन एवं प्रयोग कर पाते हैं। **परशुराम तन्त्र, तत्त्व-चिन्तामणि, तन्त्रराज तन्त्र, श्रीविद्यार्णव तन्त्र, त्रिपुरार्णव तन्त्र, परमानन्द तन्त्र** आदि ग्रन्थ **भगवती ललिता** की आराधना के लिए उपयोगी ग्रन्थ हैं। ये ग्रन्थ आज भी उपलब्ध हैं, किन्तु इनका अध्ययन कर इनके आधार पर **भगवती ललिता** की आराधना करना सबके बस की बात नहीं है। फलतः **भगवती ललिता** की आराधना के लिए प्रसिद्ध स्तोत्र, जैसे– **श्रीललिता त्रि-शती, श्रीललिता-सहस्त्र-नाम** आदि ही साधकों के काम आते हैं। वे उसके आधार पर उनकी आराधना करते हैं।

गुप्तावतार बाबा श्री, 'राष्ट्र-गुरु' स्वामी जी, 'कौल-कल्पतरु' पं० देवीदत्त शुक्ल जी, 'कुल-मार्तण्ड' पं० योगीन्द्रकृष्ण दौर्गादत्ति जी शास्त्री आदि जैसी महान् विभूतियों की कृपा से **भगवती ललिता** के अन्य अनेक उपयोगी स्तोत्र, जैसे– **प्रातः-स्तोत्र, कवच, हृदय, अष्टोत्तर-शत-नाम** आदि साधकों के लिए आज सुलभ हैं। **'कुल-भूषण' पं० रमादत्त शुक्ल जी** की कृपा से इनमें से कई स्तोत्रों का **हिन्दी रूपान्तर** भी हुआ है।

अतएव प्रस्तुत **श्रीललिता-आराधना (श्री श्रीविद्या-साधना, पुष्प ३)** में उक्त स्तोत्रों को सुलभ **हिन्दी रूपान्तर** के साथ विधि-सहित प्रकाशित करने का प्रयास किया गया है। साथ ही, पहली बार **भगवती ललिता** के तीन प्रकार के अष्टोत्तर-शत-नामों– **(१) सौभाग्य-प्रद-अष्टोत्तर-शत-नाम, (२) दिव्य-अष्टोत्तर-शत-नाम और (३) लकारादि-शत-नाम** के द्वारा **'नाम-जप', 'पूजन-तर्पण'** एवं **'होम'** को भी प्रस्तुत किया जा रहा है। आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि इसके द्वारा सभी लोग **भगवती ललिता** की आराधना विविध प्रकार से कर सकेंगे और अपना तथा **विश्व का कल्याण** करेंगे।

-ऋतशील शर्मा

अनुक्रम

०१. प्राक्कथन ७५
०२. श्री श्रीविद्या-साधना (श्रीललिता-आराधना) ७७
०३. श्रीललिता प्रातः-स्तोत्र-पञ्चकम् ७८
०४. श्रीललिता-त्रिपुर-सुन्दरी-हृदय-स्तोत्र-साधना ७९
०५. श्रीललिता-त्रिपुर-सुन्दरी-हृदय-स्तोत्र-साधना (हिन्दी-रूपान्तर) ८१
०६. श्रीललिता-सौभाग्य-प्रद-अष्टोत्तर-शत-नाम-स्तोत्र-साधना ८३
०७. श्रीललिता-सौभाग्य-प्रद-अष्टोत्तर-शत-नाम-पूजन-तर्पण-साधना ८७
०८. श्रीललिताम्बिका दिव्याष्टोत्तर-शत-नाम स्तोत्रम् ९१
०९. श्रीललिताम्बिका दिव्य-अष्टोत्तर-शत-नामावली-होम-साधना ९४
१०. श्रीललिता-लकारादि-शत-नाम-स्तोत्र-साधना ९९
११. श्रीललिता-लकारादि-शत-नाम-स्तोत्र-साधना (हिन्दी-रूपान्तर) १०४
१२. श्रीललिता-लकारादि-शत-नाम-जप-साधना १०७
१३. श्रीत्रिपुर-सुन्दरी वेद-सार-स्तवः ११०
१४. श्रीत्रिपुर-सुन्दरी वेद-सार-स्तव (हिन्दी-रूपान्तर) ११२
१५. कल्याण-वृष्टि-स्तवः ११५
१६. कल्याण-वृष्टि-स्तवः (हिन्दी-रूपान्तर) ११६
१७. श्रीललिता-पञ्च-रत्न ११८
१८. श्रीत्रिपुरोपनिषत् ११९
१९. श्रीत्रिपुरोपनिषत् (हिन्दी-रूपान्तर) १२०
२०. श्रीललितोपनिषत् १२३
२१. श्रीललितोपनिषत् (हिन्दी-रूपान्तर) १२४
२२. सिद्धि-यामलोक्त श्रीत्रिपुर-सुन्दरी स्तोत्रम् १२७
२३. श्रीत्रिपुर-सुन्दरी सान्निध्य-स्तवः १२९
२४. श्रीत्रिपुर-सुन्दरी विजय-स्तवः १३१
२५. श्रीत्रिपुर-सुन्दरी चक्र-राज-स्तोत्रम् १३३
२६. श्रीललिता-नीराजन १३५
२७. श्रीललिता-पुष्पाञ्जलि-स्तोत्रम् १३५

श्री श्रीविद्या-साधना

दूसरा सोपान

श्रीललिता-त्रिपुर-सुन्दरी-आराधना

विश्व-शान्ति हेतु
असुरों को मारनेवाली

कलि-काल में
कल्याण-कारिणी कालिका

इच्छा-क्रिया-ज्ञान
शक्ति-स्वरूपिणी

कुबेर द्वारा
वन्दिता

बुद्धिमानों द्वारा
उपास्या

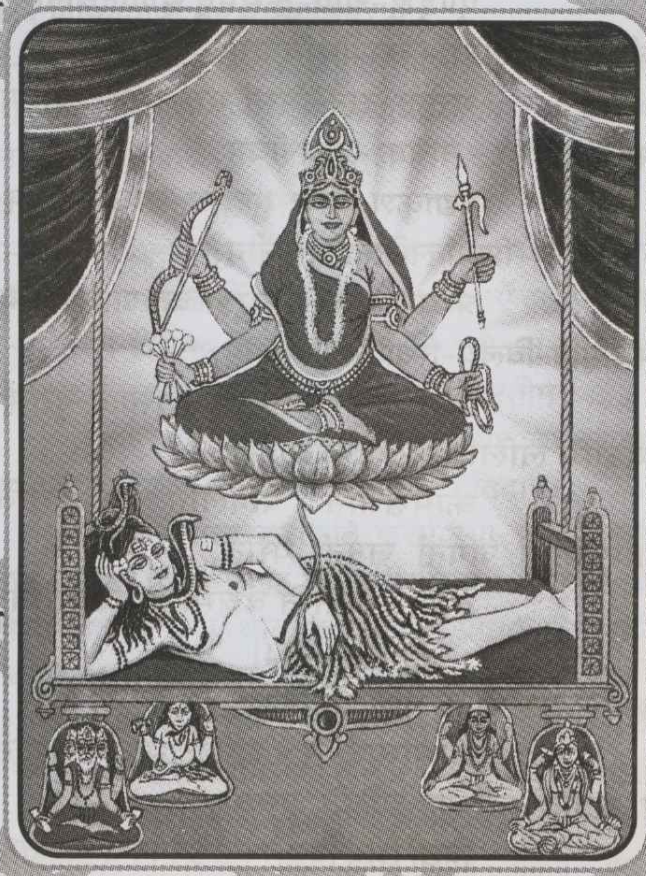

भुक्ति-मुक्ति
फल-प्रदा

सर्व-साक्षिणी

सर्व-जन-प्रिया

कल्याणी

षड्-शास्त्र-निपुणा

अखिल लोकों की
रक्षिता

चतुर्वेद-विशेषज्ञा

।।श्रीललिता-त्रिपुर-सुन्दर्यै नमः।।

श्रीललिता प्रातः-स्तोत्र-पञ्चकम्

प्रातः स्मरामि ललिता - वदनारविन्दम्,
बिम्बाधरं पृथुल-मौक्तिक-शोभि-नासाम् ।
आकर्ण-दीर्घ-नयनं मणि-कुण्डलाढ्यम्,
मन्द-स्मितं मृग-मदोज्ज्वल-भाल-देशम् ।।१।।

प्रातर्भजामि ललिता-भुज-कल्प-वल्लीम्,
रक्तांगुलीय-लसदंगुलि-पल्लवाढ्याम् ।
माणिक्य-हेम-वलयाङ्गद-शोभ-मानाम्,
पुण्ड्रेक्षु-चाप-कुसुमेषु सृणीर्दधानाम् ।।२।।

प्रातर्नमामि ललिता - चरणारविन्दम्,
भक्तेष्ट-दान-निरतं भव-सिन्धु-पोतम् ।
पद्मासनादि - सुर - नायक - पूजनीयम्,
पद्मांकुश-ध्वज-सुदर्शन-लाञ्छनाढ्यम् ।।३।।

प्रातः स्तुवै पर-शिवां ललितां भवानीम्,
त्रय्यन्त-वेद्य-विभवां करुणानवद्याम् ।
विश्वस्य सृष्टि-विलय-स्थिति-हेतु-भूताम्,
विश्वेश्वरीं निगम-वाङ्-मनसादि-दूराम् ।।४।।

प्रातर्वदामि ललिते ! तव पुण्य नाम,
कामेश्वरीति कमलेति महेश्वरीति ।
श्रीशाम्भवीति जगतां जननी परेति,
वाग् - देवतेति वचसा त्रिपुरेश्वरीति ।।५।।

।।फल-श्रुति।।

यच्छ्लोक-पञ्चकमिदं ललिताम्बिकायाः,
सौभाग्यदं सु - ललितं पठति प्रभाते ।
तस्मै ददाति ललिता झटिति प्रसन्ना,
विद्यां श्रियं विमल-सौख्यमनन्त-कीर्तिम् ।।१।।

॥ श्रीललिता-त्रिपुर-सुन्दर्यै नमः॥

श्रीललिता-त्रिपुर-सुन्दरी-हृदय-स्तोत्र-साधना

विनियोग—ॐ अस्य श्रीललिता-त्रिपुर-सुन्दरी-हृदय-स्तोत्र-मन्त्रस्य श्रीआनन्द-भैरव ऋषिः। अनुष्टुपादि छन्दः। श्रीललिता-त्रिपुर-सुन्दरी देवता। 'ऐं क-ए-ई-ल-ह्रीं' वीजं। 'सौः स-क-ल-ह्रीं' शक्तिः। 'क्लीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं' कीलकं। श्रीललिता-त्रिपुर-सुन्दरी-देवता-प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास—ॐ श्रीआनन्द-भैरव -ऋषये नमः—शिरसि, ॐ अनुष्टुपादि-छन्दसे नमः—मुखे, ॐ श्रीललिता-त्रिपुर-सुन्दरी-देवतायै नमः—हृदि, ॐ 'ऐं क-ए-ई-ल-ह्रीं'-बीजाय नमः—गुह्ये, ॐ 'सौः स-क-ल-ह्रीं'-शक्तये नमः—पादयोः, ॐ 'क्लीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं'-बीजाय नमः—नाभौ, ॐ श्रीललिता - त्रिपुर - सुन्दरी-देवता-प्रीत्यर्थे जपे विनियोगाय नमः—सर्वाङ्गेषु।

कर-न्यास—ॐ 'ऐं क-ए-ई-ल-ह्रीं' अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ 'क्लीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं' तर्जनीभ्यां नमः। ॐ 'सौः स-क-ल-ह्रीं' मध्यमाभ्यां नमः। ॐ 'ऐं क-ए-ई-ल-ह्रीं' अनामिकाभ्यां नमः। ॐ 'क्लीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं' कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ 'सौः स-क-ल-ह्रीं' करतल-कर-पृष्ठाभ्यां नमः।

अङ्ग-न्यास—ॐ 'ऐं क-ए-ई-ल-ह्रीं' हृदयाय नमः। ॐ 'क्लीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं' शिरसे स्वाहा। ॐ 'सौः स-क-ल-ह्रीं' शिखायै वषट्। ॐ 'ऐं क-ए-ई-ल-ह्रीं' कवचाय हुम्। ॐ 'क्लीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं' नेत्र-त्रयाय वौषट्। ॐ 'सौः स-क-ल-ह्रीं' अस्त्राय फट्।

ध्यान—बाल-व्यक्त-दिवाकराऽमित-निभां भद्र-प्रदां भारतीम्।
ईषत्-फुल्ल-मुखाम्बुज-स्मित-करैराशान्धकारापहाम्।।
पाशं चाभयमंकुशं च वरदं संविभ्रतीं भूतिदाम्।
भ्राजन्तीं चतुरम्बुजाकृति-करैर्भक्त्या भजे सुन्दरीम्।।

मानस-पूजन—ॐ लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीललिता-त्रिपुरा-प्रीतये समर्पयामि नमः। ॐ हं आकाश-तत्त्वात्मकं पुष्पं श्रीललिता-त्रिपुरा-प्रीतये समर्पयामि नमः। ॐ यं वायु-तत्त्वात्मकं धूपं श्रीललिता-त्रिपुरा-प्रीतये घ्रापयामि नमः। ॐ रं अग्नि-तत्त्वात्मकं दीपं श्रीललिता-त्रिपुरा-प्रीतये दर्शयामि नमः। ॐ वं जल-तत्त्वात्मकं नैवेद्यं श्रीललिता- त्रिपुरा-प्रीतये निवेदयामि नमः। ॐ सं सर्व-तत्त्वात्मकं ताम्बूलं श्रीललिता-त्रिपुरा-प्रीतये समर्पयामि नमः।

।। मूल हृदय-स्तोत्र-पाठ ।।

सुन्दरी सकल-कल्मषापहा, कोटि-कञ्ज - प्रिय - काम्य - कान्तिका।
कोटि-कल्प-कृत-पुण्य-कर्मणा, पूजनीय-पद-मदाच्च भक्तितः ।।१।।

शर्वरीश - सम - सुन्दरानना, श्रीश - शक्ति-सुकृताश्रयाश्रिता ।
सज्जनानुसरणीय - सत् -पदा, सङ्कटे सुर-गणैः सु-वन्दिता ।।२।।
याऽसुरोग्र-सङ्गरे जवान्विता, सा जघान जगदम्बिका स्वयम् ।
तां भजामि भव-शान्ति-कृज्जयां, युद्ध-लग्न-दितिजान् सु-दुर्जयान् ।।३।।
योगिनां हृदय-सङ्गतां शिवां, योग-युक्त-मनसां यतात्मनाम् ।
जाग्रतीं जगति यत्नतो द्विजा, यां जपन्ति हृदि तां स्मराम्यहम् ।।४।।
कौलिकास्तु कलयन्ति कालिकां, यत्-कला कलि-जनोप-कारिणीम्।
कौल-वृन्द-कलितांघ्रि-पङ्कजां, तां भजामि कलि-कल्मषापहाम्।।५।।
बालार्कानन्तशोऽर्चिर्निज-तनु-किरणैर्दीपयन्तीं दिगन्तान्,
दीप्तैर्ददीप्य - मानां दनुज-दल-वनानल्प-दावानलाभाम् ।
देवीं दर्पाभि-तप्तां दलित-दिति-सुतां दर्शनीयां दुरन्ताम्,
दीप्तां भक्तार्द्र-चित्तां हृदि मुदित-मनाः भारतीं भावयामि ।।६।।
ध्वस्त-ध्वान्तां धरित्री-धर-विधृत-शिरो-न्यस्त-पादाब्ज-पासूम्,
धूम्रां धीराधरामां तडिदिव चपलां चारु-चन्द्र-प्रभाभाम् ।
धृत्वा पूजोपहारान् धरणि-सुर-कुलोद्धारिणीं ध्यान-गम्याम्,
धी-मद्-ध्येयाऽद्वितीयां धनद-नमितां सुन्दरीं चिन्तयामि ।।७।।
जयतु जयतु खर्वा भारती वेद-हस्ता, जयतु जयतु धात्री धर्मिणी धातृ-शक्तिः ।
जयतु जयतु वाणी ब्राह्मणैर्ब्रह्म-वन्द्या, जयतु जयतु दुर्गा दारिणी देव-शत्रून् ।।८।।
जयतु जयतु माता योगिनी योग-युक्ता, जयतु जयतु पद्मा पद्मिनी केशवस्य ।
जयतु जयतु सौम्या सुन्दरी सुन्दरास्या, जयतु जयतु काली कालिनी काल-कान्ता ।।९।।
देवि! त्वं सृष्टि-काले सकल-भव-भृता राजसी रक्त-वर्णा,
रक्षा-काले त्वमम्बा हरि-हृदय-धृता सात्त्विकी श्वेत-रूपा।
भूरि-क्रोधा भवान्ते भव-भवन-गता तामसी नील-वर्णा,
ह्येताश्चान्यास्त्वमेव क्षिति-मनुज-मता सुन्दरी केवलाद्या ।।१०।।

।। फल-श्रुति ।।

स्तवनमिदममोघं देशिकैर्नित्य-जाप्यम्, श्रवण-मनन-वेद्यं स्तोत्रमेतदघघ्नम्।
सुर-तरु-वर-तुल्यं मोदकं पाठकानां, प्रभवति हृदयाख्यं स्तोत्रमत्यन्त-गुह्यम् ।।१।।
इदं त्रिपुर-सुन्दर्या हृदयं परमाद्भुतम्, यः पठेत्तु नरो भक्त्या स सदा सुखमेधते ।।२।।

।। श्रीललिता-त्रिपुर-सुन्दरी-हृदय-स्तोत्रम् ।।

॥ श्रीललिता-त्रिपुर-सुन्दरी को नमस्कार॥

श्रीललिता-त्रिपुर-सुन्दरी-हृदय-स्तोत्र-साधना (हिन्दी-रूपान्तर)

विनियोग और **ऋष्यादि-न्यास** मूल-पाठ के अनुसार कर **ध्यान** करें। यथा—

बाल सूर्य के समान आभावाली, **कल्याण-दायिनी**, **ज्ञान-दात्री**, हल्की मुस्कान से खिले हुए मुख-कमल के प्रकाश से दिशाओं के **अँधेरे को दूर करनेवाली**, चार कमलों के समान हाथों में **पाश, अंकुश, अभय** और **वर-मुद्रा** धारण करनेवाली, **ऐश्वर्य-दायिनी भगवती सुन्दरी** का मैं भजन करता हूँ।

मानसोपचारों से पूजा कर प्रणाम करें। तब **'हृदय-स्तोत्र'** का पाठ करें। यथा—

भगवती सुन्दरी सभी पापों को नष्ट करनेवाली हैं। **करोड़ों कमलों** के समान सुन्दर कान्ति-वाली हैं। करोड़ों युगों के पुण्य कर्मों से उनके चरणों की **भक्ति-पूर्वक पूजा** करने का अवसर मिलता है ।।१।।

चन्द्रमा के समान सुन्दर मुख है, **लक्ष्मी-पति विष्णु** की शक्ति से सम्पन्न हैं, **सज्जन लोग** उनकी शरण लेते हैं और सङ्कट में **देवता** उनकी ही वन्दना करते हैं ।।२।।

उग्र राक्षसों के युद्ध में लड़ते हुए असुरों को **विश्व-शान्ति** के लिए जो **जगदम्बा** स्वयं मारती हैं, उनको मैं भजता हूँ ।।३।।

योग में निमग्न मनवाले **योगियों** के हृदय में जो रहती हैं और संसार में **द्विज-गण** जिन **जाग्रत शिवा** का हृदय में जप करते हैं, उन्हीं को मैं स्मरण करता हूँ ।।४।।

कलि-काल के लोगों की **कल्याण-कारिणी कालिका** की जिस कला का ध्यान **कौल साधक** किया करते हैं और **कलि के पापों को नष्ट करनेवाले** उनके **चरण-कमलों** की सेवा करते रहते हैं, उन्हीं को मैं भजता हूँ ।।५।।

बाल-सूर्य की असंख्य किरणों जैसी अपनी शरीर की आभा से दिशाओं को प्रकाशित करनेवाली, **असुरों के समूह-रूप वन के लिए दावानल जैसी उग्र दीप्ति** रखनेवाली, **राक्षसों के गर्व को अपनी तेजस्विता से दग्ध** करनेवाली और **भक्तों के लिए दया-पूर्ण चित्त** रखनेवाली **ज्ञान-दायिनी** का मैं सानन्द ध्यान करता हूँ ।।६।।

अज्ञान-नाशिनी, **शेष-नाग के शिर पर चरण-कमल** रखनेवाली, **विद्युत्** और **सुन्दर चन्द्रमा** जैसी आभावाली, पूजोपचारों को स्वीकार कर **पृथ्वी के देव-कुलों का उद्धार** करनेवाली, **ध्यान-गम्या**, **बुद्धिमानों द्वारा उपास्या, कुबेर द्वारा वन्दिता, त्रिपुर-सुन्दरी** की मैं भावना करता हूँ ।।७।।

वेद-हस्ता सरस्वती की जय हो, जो **विधाता की शक्ति** और **ब्राह्मणों की वन्दनीया** हैं। **देव-शत्रुओं का संहार करनेवाली दुर्गा** की जय हो ।।८।।

योगिनी माता की जय हो। **विष्णु की लक्ष्मी** की जय हो। **सुन्दर मुखवाली त्रिपुर-सुन्दरी** की जय हो। **महा-काल की सुन्दर शक्ति काली** की जय हो, जो काल का भी लय करती हैं ।।९।।

हे देवि! सृष्टि के समय तुम **रक्त-वर्णा राजसी** हो, रक्षा करते समय तुम **श्वेत-वर्णा सात्त्विकी माता** हो, संहार के समय तुम **नील-वर्णा तामसी** हो। ये सब तथा अन्य रूप जो पृथ्वी-लोक में पूजनीय हैं, तुम्हारे ही हैं। तुम्हीं एक-मात्र **आद्या त्रिपुर-सुन्दरी** हो ।।१०।।

।। फल-श्रुति ।।

यह **अमोघ स्तवन** साधकों द्वारा प्रति-दिन जपनीय है। **श्रवण** और **मनन** द्वारा ही यह समझ में आता है। यह स्तोत्र **पाप-नाशक** है। **कल्प-वृक्ष** के समान यह फल-दायक है और पाठ-कर्त्ता को आनन्दित कर देता है। **'हृदय'** नामक यह स्तोत्र बड़ा गुप्त है ।।१।। **त्रिपुर-सुन्दरी** का यह **हृदय-स्तोत्र** अति विलक्षण है। जो मनुष्य भक्ति-पूर्वक इसे पढ़ता है, वह सदा सुख पाता है ।।२।।

भगवती श्री ललिता

बाल-रवि-सम सुठि वदन है कमनीय,
कुच-भार नम्रा देह छविहि लजावै है।
कुंमकुम-समान रक्त-अम्बर शरीर सोहै,
अङ्ग-अङ्ग भूषण अनूप छटा छावै है।
चाप-वाण-अंकुश औ पाश धारे करन में,
चकित मृगी से नैन काको नाहिं भावै है।
अर्ध-चन्द्र भाल-मध्य-शशि के समान मुख,
ऐसी मातु 'सुन्दरी' को, को न शीश नावै है।।

—'कौल-कल्पतरु' पं० देवीदत्त शुक्ल

॥ श्रीललिता-त्रिपुर-सुन्दर्यै नमः॥

श्रीललिता-सौभाग्य-प्रद-अष्टोत्तर-शत-नाम-स्तोत्र-साधना

।। विनियोग ।।

ॐ अस्य श्रीसौभाग्याष्टोत्तर-शत-नाम-स्तोत्रस्य श्रीभार्गव ऋषिः । अनुष्टुप् छन्दः। श्रीललिताम्बा देवता। 'क-ए-ई-ल-ह्रीं' बीजं। 'स-क-ल-ह्रीं' शक्तिः। 'ह-स-क-ह-ल-ह्रीं' उत्कीलनं। श्रीललिताम्बा-देवता-प्रसाद-सिद्धये पाठे विनियोगः।

।। ऋष्यादि-न्यास ।।

ॐ श्रीभार्गव - ऋषये नमः – शिरसि। ॐ अनुष्टुप् - छन्दसे नमः – मुखे । ॐ श्रीललिताम्बा - देवतायै नमः–हृदि। ॐ 'क-ए-ई-ल-ह्रीं' बीजाय नमः – लिङ्गे । ॐ 'स-क-ल-ह्रीं' शक्तये नमः – नाभौ । ॐ 'ह-स-क-ह-ल-ह्रीं' उत्कीलनाय नमः – सर्वाङ्गे । ॐ श्रीललिताम्बा-देवता-प्रसाद-सिद्धये पाठे विनियोगाय नमः – अञ्जलौ ।

।। कर-न्यास ।।

ॐ 'ऐं क-ए-ई-ल-ह्रीं' अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ 'क्लीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं' तर्जनीभ्यां नमः। ॐ 'सौः स-क-ल-ह्रीं' मध्यमाभ्यां नमः। ॐ 'ऐं क-ए-ई-ल-ह्रीं' अनामिकाभ्यां नमः। ॐ 'क्लीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं' कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ 'सौः स-क-ल-ह्रीं' करतल-कर-पृष्ठाभ्यां नमः।

।। अङ्ग-न्यास ।।

ॐ 'ऐं क-ए-ई-ल-ह्रीं' हृदयाय नमः। ॐ 'क्लीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं' शिरसे स्वाहा। ॐ 'सौः स-क-ल-ह्रीं' शिखायै वषट्। ॐ 'ऐं क-ए-ई-ल-ह्रीं' कवचाय हुम्। ॐ 'क्लीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं' नेत्र-त्रयाय वौषट्। ॐ 'सौः स-क-ल-ह्रीं' अस्त्राय फट्।

।। ध्यान ।।

बालार्क-मण्डलाभासां, चतुर्बाहुं त्रि-लोचनाम् ।
पाशांकुश-धनुर्वाणान्, धारयन्तीं शिवां भजे ।।

।। मानस-पूजन ।।

ॐ लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीललिता-त्रिपुरा-प्रीतये समर्पयामि नमः। ॐ हं आकाश-तत्त्वात्मकं पुष्पं श्रीललिता-त्रिपुरा-प्रीतये समर्पयामि नमः। ॐ यं वायु-तत्त्वात्मकं धूपं श्रीललिता-त्रिपुरा-प्रीतये घ्रापयामि नमः। ॐ रं अग्नि-तत्त्वात्मकं दीपं श्रीललिता-

त्रिपुरा-प्रीतये दर्शयामि नमः। ॐ वं जल-तत्त्वात्मकं नैवेद्यं श्रीललिता-त्रिपुरा-प्रीतये निवेदयामि नमः। ॐ सं सर्व-तत्त्वात्मकं ताम्बूलं श्रीललिता-त्रिपुरा-प्रीतये समर्पयामि नमः।

।। मूल श्रीललिता-सौभाग्य-प्रदाष्टोत्तर-शत-नाम-स्तोत्रम् ।।

ॐ कामेश्वरी[१] काम-शक्तिः[२], काम-सौभाग्य-दायिनी[३-४]।
काम-रूपा[५] काम-कला[६], कामिनी[७] कमलासना[८] ।। १।।
कमला[९] कलना-हीना[१०], कमनीया[११] कला-वती[१२] ।
पद्मपा[१३] भारती[१४] सेव्या[१५], कल्पिताऽशेष-संस्थितिः[१६] ।। २।।
अनुत्तराऽनघाऽनन्ताऽद्भुत - रूपाऽनलोद्भवा[१७-२१] ।
अति-लोक-चरित्राऽति-सुन्दर्यति-शुभ-प्रदा[२२-२४] ।। ३।।
विश्वाद्या[२५-२६] चाति-विस्ताराऽर्चन-तुष्टाऽमित-प्रभा[२७-२९] ।
एक - रूपैक - वीरैक -नाथैकान्तार्चन-प्रिया[३०-३४] ।। ४।।
एकैक-भाव - तुष्टैक - रसैकान्त -जन -प्रिया[३५-३८] ।
एध-मान - प्रभा[३९] वैध -भक्त -पातक -नाशिनी[४०-४१] ।। ५।।
एलामोद-मुखैर्नोऽद्रि - शक्तायुध - सम - स्थितिः[४२-४४] ।
ईहा - शून्येप्सितेशादि - सेव्येशान - वराङ्गना[४५-४६] ।। ६।।
ईश्वराज्ञापिकेकार - भाव्येप्सित - फल - प्रदा[४७] ।
ईशानेति[४८] हरेशैषा[४९], चारुणाक्षीश्वरेश्वरी[५०] ।। ७।।
ललिता[५१] ललना-रूपा[५२], लय- हीना[५३] लसत् -तनुः[५४] ।
लय-सर्वा[५५] लय -क्षोणिर्लय-कर्त्री[५६-५७] लयात्मिका[५८] ।। ८।।
लघिमा[५९] लघु - मध्याढ्या[६०], लल-माना[६१] लघु-द्रुता[६२] ।
हयारूढा[६३] हताऽमित्रा[६४-६५], हर-कान्ता[६६] हरि-स्तुता[६७] ।। ९।।
हय-ग्रीवेष्टदा[६८] हाला - प्रिया हर्ष[६९] - समुद्भवा[७०]।
हर्षणा[७१] हल्लकाभाङ्गी[७२], हस्त्यन्तैश्वर्य-दायिनी[७३] ।। १०।।
हल - हस्तार्चित - पदा[७४], हविर्दान - प्रसादिनी[७५-७६] ।
रामा[७७] रामार्चिता[७८] राज्ञी[७९], रम्या[८०] रव-मयी[८१] रतिः[८२] ।। ११।।
रक्षिणी[८३] रमणी[८४] राकाऽऽदित्यादि-मण्डल-प्रिया[८५] ।
रक्षिताऽखिल - लोकेशी[८६], रक्षो-गण - निषूदिनी[८७] ।।१२।।
अन्तान्त - कारिण्यम्भोज - क्रियान्तक - भयङ्करी[८८] ।
अम्बु-रूपाम्बुज-कराऽम्बुज-जात-वर-प्रदा[८९-९२] ।।१३।।

अन्तः-पूजा-क्रियान्तःस्था[९३], अन्तर्ध्यान- वचो-मयी[९४] ।
अन्तकाऽराति-वामाङ्क-स्थिताऽन्तः-सुख-रूपिणी[९५-९६] ।। १४।।

सर्वज्ञा[९७] सर्वगा[९८] सारा[९९], समा[१००] सम-सुखा[१०१] सती[१०२]।
सन्ततिः[१०३] सन्तता[१०४] सोमा[१०५], सर्वा[१०६] सांख्या[१०७] सनातनी[१०८] ।। १५।।

।। फल-श्रुति ।।

एतत् ते कथितं देवि!, नाम्नामष्टोत्तरं शतम् ।
अति-गोप्यमिदं स्तोत्रं, सर्वतो सारमुद्धृतम् ।।१।।

हे देवि! यह **एक सौ आठ नाम** तुम्हारे सामने कहे गए। यह स्तोत्र बड़ा **गोपनीय** और सबका सार-भूत है ।।१।।

एतच्छदृशं स्तोत्रं, त्रिषु लोकेषु दुर्लभम् ।
अप्रकाश्यमभक्तानां, पुरतो देवता - द्विषम् ।।२।।

इसके समान स्तोत्र तीनों लोकों में दुर्लभ है। **अभक्तों** और **देव-द्वेषी** लोगों के सामने इसे प्रकट न करे ।।२।।

एतत् सदा - शिवो नित्यं, पठन्त्यन्ये हरादयः ।
एतत्-प्रभावात् कन्दर्पः, त्रैलोक्यं जयति क्षणात् ।।३।।

इसे **सदा-शिव** और **शङ्कर** आदि अन्य देवता नित्य पढ़ते हैं । इसके प्रभाव से **काम-देव** क्षण भर में तीनों लोकों को जीत लेते हैं ।।३।।

सौभाग्याष्टोत्तर-शत - नाम-स्तोत्र - मनोहरम् ।
यस्त्रि-सन्ध्यं पठेन्नित्यं, न तस्य भुवि दुर्लभम् ।।४।।

इस मनोहर **'सौभाग्याष्टोत्तर-शत-नाम स्तोत्र'** को जो **तीनों सन्ध्याओं** में नित्य पढ़ता है, उसके लिए पृथ्वी पर कुछ भी दुर्लभ नहीं रह जाता ।।४।।

श्रीविद्योपासन - वतौ, एतदावश्यकं मतम् ।
सकृदेतत् प्रपठतां, नान्य - कर्म विलुप्यते ।। ५।।

श्रीविद्या के उपासकों के लिए यह स्तोत्र आवश्यक है। इसका एक बार पाठ करनेवाले के अन्य कर्म भी सार्थक हो जाते हैं ।।५।।

अपठित्वा स्तोत्रमिदं, नित्यं नैमित्तिकं कृतम् ।
व्यर्थी भवति तन्नर - कृतं कर्म यथा - तथा ।। ६।।

इस स्तोत्र का पाठ न कर जो भी **'नित्य'** या **'नैमित्तिक'**-कर्म किया जाता है, वह व्यर्थ हो जाता है-उसका फल नहीं मिलता ।। ६।।

सहस्र-नाम - पाठादौ, पठेत् स्तोत्रं शुभ-प्रदम् ।
सहस्र-नाम-पाठस्य, फलं शत - गुणं भवेत् ।। ७।।

सहस्र-नाम स्तोत्र का पाठ करने के पूर्व इस **शुभ-दायक स्तोत्र** का पाठ करे, तो **सहस्र-नाम** के पाठ का सौ गुना अधिक फल मिलता है ।।७।।

सहस्र पठनाद् ध्याता, वीक्षणान्नाशयेद् रिपून् ।
करवीरैः रक्त - पुष्पैर्हुत्वा लोकान् वशं नयेत् ।। ८।।

इस स्तोत्र का **एक सहस्र पाठ** करनेवाला केवल दृष्टि-पात द्वारा **शत्रुओं का नाश** करता है। **करवीर** के **रक्त-पुष्पों** द्वारा **हवन** करने से **वशीकरण** होता है ।।८।।

स्तम्भयेत् पीत- कुसुमैर्नीलैरुच्चाटयेद् रिपून ।
मरीचिर्विद्वेषणाय, लवङ्गैर्व्याधिं नश्यते ।। ९।।

पीले पुष्पों के **हवन** से **स्तम्भन**, **नीले पुष्पों** से **उच्चाटन**, **काली मिर्च** से **विद्वेषण** और **लौंग** के **हवन** से **रोग-नाश** होता है ।।९।।

पत्र-पुष्पैः फलैर्वापि, पूजयेत् प्रति-नामभिः ।
चक्र-राजेऽथवाऽन्यत्र, स वसेच्छ्री-पुरं चिरम्।। १०।।

पत्तों, पुष्पों या **फलों** द्वारा भी प्रत्येक नाम से **यन्त्र-राज** में अथवा अन्यत्र पूजन करने से साधक चिर काल तक **मणिपुर** में निवास करता है ।।१०।।

यः सदाऽऽवर्तयन् आस्ते,नामाष्ट-शतमुत्तमम् ।
तस्य श्रीललिता माता, प्रसन्ना वाञ्छित-प्रदा ।।११।।

जो **१०८ नामों** का सदा **जप** करता है, उससे **माता श्री ललिता** प्रसन्न होकर उसके अभीष्ट को प्रदान करती हैं ।। ११।।

।। श्रीललिता सौभाग्य-प्रदाष्टोत्तर-शत-नाम-स्तोत्रम् ।।

भगवती ललिता की स्तुति

महा-माये! तेरा परम-शिव है मञ्चक बना,
बड़े चारों देव द्रुहिण हरि रुद्रेश्वर मुदा।
बने प्यारे चारों चरण जिसके चारु-चरिते!
विराजै तू माता उस पर पराऽऽनन्द-लहरी।।
महा-शक्ते! तू है सकल जग की प्रेरण-करी,
तवाऽऽज्ञा पाके ही यह चल रही नित्य ललिते!
बिना तेरे माता! नर-असुर औ सर्व सुर भी,
हिले-डोले नाहीं बनकर महाऽशक्त मृत से।।

-'कुल-मार्तण्ड' पं० योगीन्द्रकृष्ण दौर्गादत्ति शास्त्री

॥ श्रीललिता-त्रिपुर-सुन्दर्यै नमः॥

श्रीललिता-सौभाग्य-प्रद-अष्टोत्तर-शतनाम-पूजन-तर्पण-साधना

॥ विनियोग ॥

ॐ अस्य श्रीसौभाग्याष्टोत्तर-शत-नाम-माला-मन्त्रस्य श्रीभार्गव ऋषिः । अनुष्टुप् छन्दः। श्रीललिताम्बा देवता। 'क-ए-ई-ल-ह्रीं' बीजं। 'स-क-ल-ह्रीं' शक्तिः। 'ह-स-क-ह-ल-ह्रीं' उत्कीलनं। श्रीललिताम्बा-देवता-प्रसाद-सिद्धये पूजने तर्पणे च विनियोगः।

॥ ऋष्यादि-न्यास ॥

ॐ श्रीभार्गव-ऋषये नमः – शिरसि। ॐ अनुष्टुप् - छन्दसे नमः – मुखे । ॐ श्रीललिताम्बा - देवतायै नमः– हृदि। ॐ 'क-ए-ई-ल-ह्रीं' बीजाय नमः– लिङ्गे । ॐ 'स-क-ल-ह्रीं' शक्तये नमः–नाभौ। ॐ 'ह-स-क-ह-ल-ह्रीं' उत्कीलनाय नमः– सर्वाङ्गे । ॐ श्रीललिताम्बा-देवता-प्रसाद-सिद्धये पूजने तर्पणे च विनियोगाय नमः– अञ्जलौः।

॥ कर-न्यास ॥

ॐ 'ऐं क-ए-ई-ल-ह्रीं' अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ 'क्लीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं' तर्जनीभ्यां नमः। ॐ 'सौः स-क-ल-ह्रीं' मध्यमाभ्यां नमः। ॐ 'ऐं क-ए-ई-ल-ह्रीं' अनामिकाभ्यां नमः। ॐ 'क्लीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं' कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ 'सौः स-क-ल-ह्रीं' करतल-कर-पृष्ठाभ्यां नमः।

॥ अङ्ग-न्यास ॥

ॐ 'ऐं क-ए-ई-ल-ह्रीं' हृदयाय नमः । ॐ 'क्लीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं' शिरसे स्वाहा । ॐ 'सौः स-क-ल-ह्रीं' शिखायै वषट् । ॐ 'ऐं क-ए-ई-ल-ह्रीं' कवचाय हुम् । ॐ 'क्लीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं' नेत्र-त्रयाय वौषट्। ॐ 'सौः स-क-ल-ह्रीं' अस्त्राय फट्।

॥ ध्यान ॥

बालार्क-मण्डलाभासां, चतुर्बाहुं त्रि-लोचनाम् ।
पाशांकुश-धनुर्वाणान्, धारयन्तीं शिवां भजे ॥

॥ मानस-पूजन ॥

ॐ लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीललिता-त्रिपुरा-प्रीतये समर्पयामि नमः। ॐ हं आकाश-तत्त्वात्मकं पुष्पं श्रीललिता-त्रिपुरा-प्रीतये समर्पयामि नमः। ॐ यं वायु-तत्त्वात्मकं

धूपं श्रीललिता-त्रिपुरा-प्रीतये घ्रापयामि नमः। ॐ रं अग्नि-तत्त्वात्मकं दीपं श्रीललिता-त्रिपुरा-प्रीतये दर्शयामि नमः। ॐ वं जल-तत्त्वात्मकं नैवेद्यं श्रीललिता-त्रिपुरा-प्रीतये निवेदयामि नमः। ॐ सं सर्व-तत्त्वात्मकं ताम्बूलं श्रीललिता-त्रिपुरा-प्रीतये समर्पयामि नमः।

।। सौभाग्य-प्रद-अष्टोत्तर-शत-नामावली द्वारा पूजन एवं तर्पण ।।

१- श्रीकामेश्वर्यै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। २- श्रीकाम-शक्त्यै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ३- श्रीकाम-दायिन्यै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ४- श्रीसौभाग्य - दायिन्यै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ५- श्रीकाम - रूपायै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ६- श्रीकाम-कलायै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ७- श्रीकामिन्यै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ८- श्रीकमलासनायै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ९- श्रीकमलायै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। १०- श्रीकलना - हीनायै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ११- श्रीकमनीयायै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः । १२- श्रीकला - वत्यै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः । १३- श्रीपद्मपायै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः । १४- श्रीभारत्यै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। १५- श्रीसेव्यायै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। १६- श्रीकल्पिताऽशेष - संस्थित्यै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। १७- श्रीअनुत्तरायै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। १८- श्रीअनघायै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। १९- श्रीअनन्तायै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। २०- श्रीअद्भुत-रूपायै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। २१- श्रीअनलोद्भवायै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। २२- श्रीअति - लोक - चरित्रायै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। २३- श्रीअति-सुन्दर्यै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। २४- श्रीशुभ-प्रदायै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। २५- श्रीविश्वायै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः।

२६- श्रीआद्यायै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। २७- श्रीअति-विस्तारायै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। २८- श्रीअर्चन-तुष्टायै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। २९- श्रीअमित - प्रभायै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ३०- श्रीएक - रूपायै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ३१- श्रीएक - वीर - प्रियायै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ३२- श्रीएक - नाथ - प्रियायै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ३३- श्रीएकान्त - प्रियायै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ३४- श्रीअर्चन-प्रियायै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ३५- श्रीएकायै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ३६- श्रीएक-भाव-तुष्टायै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ३७- श्रीएक-रस-प्रियायै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ३८- श्रीएकान्त-जन-प्रियायै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ३९- श्रीएध-मान-प्रभायै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ४०- श्रीवैध-भक्तायै पूजयामि नमः

तर्पयामि नमः। ४१- श्रीपातक-नाशिन्यै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ४२- श्रीएलामोद-मुखाये पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ४३- श्रीर्नोऽदि-शक्तायुधायै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ४४- श्रीसम-स्थित्यै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ४५- श्रीईहा - शून्येप्सितेशादि - सेव्येशानायै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ४६- श्रीवराङ्गनायै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ४७- श्रीईश्वराज्ञापिकेकार - भाव्येप्सित - फल - प्रदायै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ४८- श्रीईशानेत्यै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ४९- श्रीहरेशैषायै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ५०- श्रीअरुणाक्षीश्वरेश्वर्यै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः।

५१- श्रीललितायै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ५२- श्रीललना-रूपायै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ५३- श्रीलय- हीनायै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ५४- श्रीलसत् - तनवे पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ५५- श्रीलय - सर्वायै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ५६- श्रीलय-क्षोण्यै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ५७- श्रीलय-कर्त्रे पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ५८- श्रीलयात्मिकायै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ५९- श्रीलघिमायै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ६०- श्रीलघु - मध्याढ्यायै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ६१- श्रीलल-मानायै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ६२- श्रीलघु-द्रुतायै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ६३- श्रीहयारूढायै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ६४- श्रीहतायै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ६५- श्रीअमित्रायै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ६६- श्रीहर - कान्तायै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ६७- श्रीहरि - स्तुतायै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ६८- श्रीहय-ग्रीवेष्टदायै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ६९- श्रीहाला-प्रियायै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ७०- श्रीहर्ष-समुद्भवायै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ७१- श्रीहर्षणायै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ७२- श्रीहल्लकाभाङ्ग्यै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ७३- श्रीहस्त्यन्तैश्वर्य-दायिन्यै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ७४- श्रीहल-हस्तार्चित-पदायै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ७५- श्रीहवि-प्रसादिन्यै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः।

७६- श्रीदान-प्रसादिन्यै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ७७- श्रीरामायै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ७८- श्रीरामार्चितायै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ७९- श्रीराज्ञ्यै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ८०- श्रीरम्यायै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ८१- श्रीरव-मय्यै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ८२- श्रीरत्यै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ८३- श्रीरक्षिण्यै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ८४- श्रीरमण्यै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ८५- श्रीराकाऽऽदित्यादि-मण्डल-प्रियायै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ८६- श्रीरक्षिताऽखिल-लोकेश्यै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ८७- श्रीरक्षो-गण-निषूदिन्यै पूजयामि नमः तर्पयामि

नमः। ८८- श्रीअन्तान्त-कारिण्यम्भोज-क्रियान्तक-भयङ्कर्यै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ८९- श्रीअम्बु-रूपायै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ९०- श्रीअम्बुजायै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ९१- श्रीकराम्बुजायै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ९२- श्रीजात-वर-प्रदायै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ९३- श्रीअन्तः-पूजा-क्रियान्तः स्थायै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ९४- श्रीअन्तर्ध्यान - वचो - मय्यै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः । ९५- श्रीअन्तकाऽराति-वामाङ्क-स्थितायै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ९६- श्रीअन्तः-सुख-रूपिण्यै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ९७- श्रीसर्वज्ञायै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ९८- श्रीसर्वगायै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। ९९- श्रीसारायै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। १००- श्रीसमायै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः।

१०१- श्रीसम - सुखायै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः । १०२- श्रीसत्यै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। १०३- श्रीसन्तत्यै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। १०४- श्री सन्ततायै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः । १०५- सोमायै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः । १०६- श्रीसर्वायै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। १०७- श्रीसांख्यायै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः। १०८- श्रीसनातन्यै पूजयामि नमः तर्पयामि नमः।

भगवती के नामों के द्वारा पूजन-तर्पण

भगवती ललिता के 'नामों' को *'चतुर्थ्यन्त'* बनाकर उनके अन्त में *'पूजयामि नमः तर्पयामि नमः'* जोड़कर *'श्रीयन्त्र'* में अथवा अन्यत्र *'पूजन'* तथा अपने सिर पर *'तर्पण'* किया जा सकता है। इसके द्वारा *पर-ब्रह्म-स्वरूपा भगवती ललिता* और *आत्मा* की एकता का प्रत्यक्षीकरण होता है।

श्री ललिता-सौभाग्य-प्रद-अष्टोत्तर-शत-नाम-स्तोत्र की १०वीं *'फल-श्रुति'* में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि जो इस प्रकार *'पूजन'* करता है, वह चिर-काल तक भगवती के समीप *'मणिपुर'* में निवास करता है।

॥ श्रीललिता-त्रिपुर-सुन्दर्यै नमः॥

श्रीललिताम्बिका दिव्याष्टोत्तर-शत-नाम स्तोत्रम्

।। पूर्व-पीठिका—श्रीषण्मुख उवाच ।।

वन्दे विघ्नेश्वरं शक्तिं, वन्दे वाणीं विधिं हरिम्।
वन्दे लक्ष्मीं हरं गौरीं, वन्दे माया महेश्वरम् ।।१।।
वन्दे मनोन्मयीं देवीं, वन्दे देवं सदा-शिवम्।
वन्दे पर-शिवं वन्दे, श्रीमत्-त्रिपुर-सुन्दरीम् ।।२।।
पञ्च-ब्रह्मासनासीनां, सर्वाभीष्टार्थ-सिद्धये।
सर्वज्ञ! सर्व-जनक!, सर्वेश्वर! शिव! प्रभो! ।।३।।
नाम्नामष्टोत्तर-शतं, श्रीदेव्याः सत्यमुत्तमम्।
श्रोतुमिच्छाम्यऽहं तात!, नाम-सारात्मकं स्तवम् ।।४।।

।। श्रीशिव उवाच ।।

तद् वदामि तव स्नेहाच्छृणु षण्मुख! तत्त्वतः।
महा-मनोन्मनी[१] शक्तिः[२], शिव-शक्तिः[३] शिव-शङ्करी[४]।
इच्छा-शक्ति[५]: क्रिया-शक्तिः[६], ज्ञान-शक्ति-स्वरूपिणी[७] ।। १।।
शान्त्यातीता कला[८] नन्दा[९], शिव-माया[१०] शिव-प्रिया[११] ।
सर्वज्ञा[१२] सुन्दरी[१३] सौम्या[१४], सच्चिदानन्द - विग्रहा[१५] ।।२।।
परात्परा-मयी[१६] बाला[१७], त्रिपुरा[१८] कुण्डली[१९] शिवा[२०]।
रुद्राणी[२१] विजया[२२] सर्वा[२३], सर्वाणी[२४] भुवनेश्वरी[२५] ।। ३।।
कल्याणी[२६] शूलिनी[२७] कान्ता[२८], महा - त्रिपुर - सुन्दरी[२९]।
मालिनी[३०] मानिनी[३१] शर्वा[३२], मग्नोल्लासा[३३] च मोहिनी[३४]।।४।।
माहेश्वरी[३५] च मातङ्गी[३६], शिव-कामा[३७] शिवात्मिका[३८] ।
कामाक्षी[३९] कमलाक्षी[४०] च, मीनाक्षी[४१] सर्व-साक्षिणी[४२] ।।५।।
उमा-देवी[४३] महा-काली[४४], श्यामा[४५] सर्व-जन-प्रिया[४६] ।
चित्-परा[४७] चिद्-घनानन्दा[४८], चिन्मया[४९] चित्-स्वरूपिणी[५०]।।६।।
महा-सरस्वती[५१] दुर्गा[५२], ज्वाला दुर्गाऽति - मोहिनी[५३-५४]।
नकुली[५५] शुद्ध-विद्या[५६] च, सच्चिदानन्द - विग्रहा[५७] ।। ७।।
सु-प्रभा[५८] स्व-प्रभा[५९] ज्वाला[६०], इन्द्राक्षी[६१] विश्व-मोहिनी[६२]।
महेन्द्र-जाल-मध्यस्था[६३], माया-मय-विनोदिनी[६४] ।। ८।।

शिवेश्वरी[६५] वृषारूढा[६६], विद्या - जाल - विनोदिनी[६७] ।
मन्त्रेश्वरी[६८] महा-लक्ष्मीर्महा-काली[६९-७०] फल-प्रदा[७१] ।। ९।।
चतुर्वेद - विशेषज्ञा[७२], सावित्री[७३] सर्व - देवता[७४] ।
महेन्द्राणी[७५] गणाध्यक्षा[७६], महा-भैरव-मोहिनी[७७] ।।१०।।
महा-मयी[७८] महा - घोरा[७९], महा - देवी[८०] मदापहा[८१] ।
महिषासुर-संहन्त्री[८२], चण्ड - मुण्ड - कुलान्तका[८३] ।।११।।
चक्रेश्वरी चतुर्वेदा[८४], सर्वादि:[८५] सुर - नायिका[८६] ।
षड्-शास्त्र-निपुणा[८७] नित्या[८८], षड्-दर्शन-विचक्षणा[८९] ।।१२।।
काल - रात्रि:[९०] कलातीता[९१], कवि-राज - मनोहरा[९२] ।
शारदा तिलका[९३] तारा[९४], धीरा[९५] शूर-जन-प्रिया[९६] ।।१३।।
उग्र-तारा[९७] महा -मारी[९८], क्षिप्र-मारी[९९] रण-प्रिया[१००] ।
अन्न-पूर्णेश्वरी माता[१०१], स्वर्ण-कान्ति-तटि-प्रभा[१०२] ।। १४।।
स्वर-व्यञ्जन-वर्णाढ्या[१०३], गद्य-पद्यादि -कारणा[१०४]।
पद-वाक्यार्थ-निलया[१०५], विन्दु-नादादि-कारणा[१०६] ।। १५।।
मोक्षेशी महिषी नित्या[१०७], भुक्ति-मुक्ति - फल - प्रदा[१०८] ।
विज्ञान-दायिनी प्राज्ञा[१०९], प्रज्ञान-फल-दायिनी[११०] ।। १६।।
अहङ्कारा कलातीता[१११], परा - शक्ति: परात्परा[११२] ।
नाम्नामष्टोत्तर-शतं, श्रीदेव्या: परमाद्भुतम् ।। १७।।

।। फल-श्रुति ।।

सर्व - पाप - क्षय करं, महा-पातक - नाशनम् ।
सर्व-व्याधि-हरं सौख्यं, सर्व - ज्वर - विनाशनम् ।। १।।
ग्रह - पीडा - प्रशमनं, सर्व - शत्रु - विनाशनम् ।
आयुरारोग्य - धनदं, सर्व - मोक्ष - शुभ - प्रदम् ।। २।।
देवत्वममरेशत्वं, ब्रह्मत्वं सकल - प्रदम् ।
अग्नि-स्तम्भं जल-स्तम्भं, सेना-स्तम्भादि-दायकम् ।। ३।।
शाकिनी - डाकिनी-पीडा, हाकिन्यादि-निवारणम् ।
देह - रक्षा - करं नित्यं, पर - तन्त्र - निवारणम् ।। ४।।
मन्त्रं यन्त्रं महा-तन्त्रं, सर्व - सिद्धि - प्रदं नृणाम् ।
सर्व - सिद्धि - करं पुंसां, अदृश्यत्वाकरं वरम् ।। ५।।

सर्वाकर्ष-करं नित्यं, सर्व -स्त्री - वश्य-मोहनम् ।
मणि - मन्त्रौषधीनां च, सिद्धिदं शीघ्रमेव च ।। ६।।
भयश्चौरादि - शमनं, दुष्ट - जन्तु - निवारणम् ।
पृथिव्यादि-जनानां च, वाक्-स्थानादि-परो वशम् ।। ७।।
नष्ट - द्रव्यागमं सत्यं, निधि - दर्शन - कारणम् ।
सर्वथा ब्रह्मचारीणां, शीघ्र - कन्या - प्रदायकम् ।। ८।।
सुपुत्र - फलदं शीघ्रं, अश्व - मेध - फल-प्रदम् ।
योगाभ्यासादि-फलदं, श्री-करं तत्त्व - साधनम् ।। ९।।
मोक्ष - साम्राज्य - फलदं, देहान्ते परमं पदम् ।
देव्याः स्तोत्रमिदं पुण्यं, परमार्थं परमं पदम् ।। १०।।
विधिना विष्णुना दिव्यं, सेवितं मया च पुरा ।
सप्त - कोटि-महा - मन्त्र-पारायण- फल - प्रदम् ।। ११।।
चतुर्वर्ग - प्रदं नृणां, सत्यमेव मयोदितम् ।
नाम्नामष्टोत्तर - शतं, यच्छाम्यऽहं सुख - प्रदम् ।। १२।।
कल्याणीं परमेश्वरीं पर-शिवां श्रीमत्-त्रिपुर-सुन्दरीम्,
मीनाक्षीं ललिताम्बिकामनुदिनं वन्दे जगन्मोहिनीम् ।
चामुण्डां पर-देवतां सकल - सौभाग्य - प्रदां सुन्दरीम्,
देवीं सर्व-परां शिवां शशि-निभां श्रीराज-राजेश्वरीम् ।। १३।।

।। मन्त्र-राज-कल्पे मोक्ष-पादे स्कन्देश्वर-संवादे श्रीललिता-दिव्य-अष्टोत्तर-शत-नाम- स्तोत्रम् ।।

इस स्तोत्र के प्रारम्भ में **गणेश, सरस्वती, ब्रह्मा, विष्णु, लक्ष्मी, शिव, पार्वती, त्रिपुर-सुन्दरी** आदि की **वन्दना** कर **कार्तिकेय** जी- **श्रीदेवी के १०८ नामों** की जिज्ञासा करते हैं और **शिव जी** उन नामों को सुनाते हैं, जो १ से १७ तक श्लोकों में स्पष्ट ही हैं।

फल-श्रुति के अनुसार सभी **रोगों**, सभी **ज्वरों, ग्रह-पीड़ादि** को शान्त करनेवाला और सभी **शत्रुओं** का नाशक यह स्तोत्र है। इसके पाठ करने से **दीर्घायु, आरोग्य, धन** और **मोक्ष** की प्राप्ति होती है।

अन्त में **श्रीराज-राजेश्वरी श्री त्रिपुर-सुन्दरी की वन्दना** की गई है।

परम पूज्य गुप्तावतार बाबाश्री के संग्रह के अनुसार **श्रीषोडशी** के उपासकों को उक्त स्तोत्र की अन्तिम पंक्ति निम्न प्रकार पढ़ना चाहिए-

सर्वानन्द-प्रदां सदा-शिव-मयीं वन्दे परां षोडशीम् ।।

॥ श्रीललिता-त्रिपुर-सुन्दर्यै नमः॥

श्रीललिताम्बिका-दिव्य-अष्टोत्तर-शत-नामावली-होम-साधना

।। विधि ।।

अपने दाहिने एक हाथ लम्बी-चौड़ी तथा एक अङ्गुल ऊँची बालुका (रेत) की '**वेदी**' बनाए। '**वेदी**' को '**मूल-मन्त्र**' अथवा **श्रीललितायै नमः** नमस्कार-मन्त्र पढ़कर देखे। '**फट्**'-मन्त्र पढ़कर '**पञ्च-पात्र**' के पवित्र जल से '**वेदी**' का '**प्रोक्षण**' करे। दुबारा '**फट्**'-मन्त्र पढ़कर '**कुश**' के अग्र भाग से '**वेदी**' का '**ताड़न**' करे। '**हुम्**'-मन्त्र पढ़कर एक मूठी जल द्वारा '**वेदी**' का '**सिञ्चन**' करे।

फिर '**अग्नि**' लाए। '**अग्नि**' का एक अङ्गार-'**मूलं हूं फट् क्रव्यादेभ्यः**'-यह मन्त्र पढ़कर '**नैर्ऋत्य कोण**' में क्रव्याद का अंश समझ कर गिरा दे। तब '**अग्नि**' को '**मूल-मन्त्र**' पढ़ते हुए '**वेदी**' पर रखे और '**समिधा**' रखकर अग्नि प्रज्वलित कर यह मन्त्र पढ़े-

ॐ अग्निं प्रज्वलितं वन्दे, जातवेदं हुताशनम् ।
सुवर्ण - वर्णमनलं, ममीद्धः सर्वतो मुखम् ।।

इसके बाद दाहिने हाथ में जल लेकर '**सङ्कल्प**' पढ़े। यथा-

ॐ तत्सत् । अद्यैतस्य, ब्रह्मणोऽह्नि-द्वितीय-प्रहरार्द्धे, श्वेत-वराह-कल्पे, जम्बू-द्वीपे, भरत-खण्डे, आर्यावर्त्त-देशे, अमुक-पुण्य-क्षेत्रे, कलि-युगे कलि-प्रथम-चरणे, अमुक-संवत्सरे, अमुक-मासे, अमुक-पक्षे, अमुक-तिथौ, अमुक-वासरे, अमुक-गोत्रोत्पन्नो, अमुक-नाम-शर्मा/वर्मा/गुप्त/दास, श्राललिता-प्रीत्यर्थे सर्वाभीष्ट-सिद्ध्यर्थे श्रीललिताम्बिका-दिव्य-अष्टोत्तर-शत-नाम-मन्त्रैः यथा-शक्ति होमं करिष्ये।

अब '**मूल-मन्त्र**' से '**प्राणायाम**' कर '**विनियोग-ऋष्यादि-न्यास**' करे और '**भगवती ललिता का ध्यान**' एवं '**मानस-पूजन**' करे। यथा-

।। ध्यान ।।

बालार्क-मण्डलाभासां, चतुर्बाहुं त्रि-लोचनाम् ।
पाशांकुश-धनुर्वाणान्, धारयन्तीं शिवां भजे।।

।। मानस-पूजन ।।

ॐ लं पृथ्वी-तत्त्वात्मकं गन्धं श्रीललिताम्बिका-प्रीतये समर्पयामि नमः। ॐ हं आकाश-तत्त्वात्मकं पुष्पं श्रीललिताम्बिका-प्रीतये समर्पयामि नमः। ॐ यं वायु-तत्त्वात्मकं धूपं श्रीललिताम्बिका-प्रीतये घ्रापयामि नमः। ॐ रं अग्नि-तत्त्वात्मकं दीपं श्रीललिताम्बिका-प्रीतये दर्शयामि नमः। ॐ वं जल-तत्त्वात्मकं नैवेद्यं श्रीललिताम्बिका-

प्रीतये निवेदयामि नमः। ॐ सं सर्व-तत्त्वात्मकं ताम्बूलं श्रीललिताम्बिका-प्रीतये समर्पयामि नमः।

फिर 'मूल-मन्त्र' पढ़कर अथवा श्रीललिताम्बिकायै नमः कहकर 'अग्नि' के ऊपर जल छिड़के। 'अग्नि' का 'पञ्चोपचारों से पूजन' करे तथा भगवती ललिता का अग्नि-रूप में ध्यान कर उनका 'पञ्चोपचारों से पूजन' करे।

अब 'अग्नि' में 'घृत' या 'पायस' की आहुतियाँ निम्न मन्त्रों से प्रदान करे–ॐ स्यूं हिरण्यायै स्वाहा। ॐ ष्यूं गगनायै स्वाहा। ॐ श्यूं रक्तायै स्वाहा। ॐ व्यूं कृष्णायै स्वाहा। ॐ ल्यूं सुप्रभायै स्वाहा। ॐ रयूं बहु-रूपायै स्वाहा। ॐ य्यूं अति-रक्तायै स्वाहा। ॐ भूः स्वाहा। ॐ भुवः स्वाहा। ॐ स्वः स्वाहा। ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा।

फिर 'मूलं श्रीललिताम्बिकायै स्वाहा श्रीललिताम्बिकाया इदं'-यह मन्त्र तीन बार पढ़कर तीन आहुतियाँ दे।

इसके बाद–१. 'ॐ गुरवे स्वाहा', २. 'ॐ परम-गुरवे स्वाहा', ३. 'ॐ परापर-गुरवे स्वाहा', ४. 'ॐ परमेष्ठि-गुरवे स्वाहा'–इन चार मन्त्रों से चारों गुरुओं के लिए और १. 'ॐ कामेश्वर्यै स्वाहा', २. 'ॐ भग-मालिन्यै स्वाहा', ३. 'ॐ नित्य-क्लिन्नायै स्वाहा'–इन तीन मन्त्रों से तीन प्रधान आवरण-शक्तियों को आहुतियाँ प्रदान करे।

फिर इष्ट-देवता के षडङ्गों के लिए छः आहुतियाँ दे–ॐ ऐं क-ए-ई-ल-ह्रीं हृच्छक्त्यै स्वाहा। ॐ क्लीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं शिरः-शक्त्यै स्वाहा। ॐ सौः स-क-ल-ह्रीं शिखा-शक्त्यै स्वाहा। ॐ ऐं क-ए-ई-ल-ह्रीं कवच-शक्त्यै स्वाहा। ॐ क्लीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं नेत्र-शक्त्यै स्वाहा। ॐ सौः स-क-ल-ह्रीं अस्त्र-शक्त्यै स्वाहा।

इसके बाद कामदेवों को आहुतियाँ प्रदान करे। यथा– ॐ मनोभवाय स्वाहा, ॐ मकर-ध्वजाय स्वाहा, ॐ कन्दर्पाय स्वाहा, ॐ मन्मथाय स्वाहा, ॐ कामदेवाय स्वाहा।

तब काम-देवों की शक्तियों को आहुतियाँ प्रदान करे। यथा–ॐ द्राविण्यै स्वाहा, ॐ क्षोभिण्यै स्वाहा, ॐ आकर्षिण्यै स्वाहा, ॐ वशीकरिण्यै स्वाहा, ॐ सम्मोहिन्यै स्वाहा।

फिर आठ शक्तियों को आहुतियाँ प्रदान करे–१. ॐ सुभगायै स्वाहा, २. ॐ भगायै स्वाहा, ३. ॐ भग-सर्पिण्यै स्वाहा, ४. ॐ भग-मालायै स्वाहा, ५. ॐ अनङ्गायै स्वाहा, ६. ॐ अनङ्ग-कुसुमायै स्वाहा, ७. ॐ अनङ्ग-मेखलायै स्वाहा, ८. ॐ अनङ्ग-मदनायै स्वाहा।

तब अष्ट-मातृकाओं को आहुतियाँ दे–१. ॐ ब्राह्म्यै स्वाहा, २. ॐ माहेश्वर्यै स्वाहा, ३. ॐ कौमार्यै स्वाहा, ४. ॐ वैष्णव्यै स्वाहा, ५. ॐ वाराह्यै स्वाहा, ६. ॐ इन्द्राण्यै स्वाहा, ७. ॐ चामुण्डायै स्वाहा, ८. ॐ महा-लक्ष्म्यै स्वाहा।

फिर आठ भैरवों को आहुतियाँ दे– १. ॐ असिताङ्ग-भैरवाय स्वाहा, २. ॐ रुरु-भैरवाय स्वाहा, ३. ॐ चण्ड-भैरवाय स्वाहा, ४. ॐ क्रोध-भैरवाय स्वाहा, ५. ॐ उन्मत्त-भैरवाय स्वाहा, ६. ॐ कपालि-भैरवाय स्वाहा, ७. ॐ भीषण-भैरवाय स्वाहा, ८. ॐ संहार-भैरवाय स्वाहा।

पुनः आठ पीठों को आहुतियाँ दे–१. ॐ काम-रूप-पीठाय स्वाहा, २. ॐ मलय-पीठाय स्वाहा, ३. ॐ कुल - नाग - पीठाय स्वाहा, ४. ॐ कुलान्त - पीठाय स्वाहा, ५. ॐ चौहार-पीठाय स्वाहा, ६. ॐ जालन्धर-पीठाय स्वाहा, ७. ॐ उड्डीयान-पीठाय स्वाहा, ८. ॐ देवी-कोट-पीठाय स्वाहा।

तब दस भैरवों को आहुतियाँ दे–१. ॐ हेतुकाय स्वाहा, २. ॐ त्रिपुरान्तकाय स्वाहा, ३. ॐ वेतालाय स्वाहा, ४. ॐ अग्नि - जिह्वाय स्वाहा, ५. ॐ कालान्तकाय स्वाहा, ६. ॐ कपालाय स्वाहा, ७. ॐ एक - पादाय स्वाहा, ८. ॐ भीम - रूपाय स्वाहा, ९. ॐ मलयाय स्वाहा, १०. ॐ हाटकेश्वराय स्वाहा।

फिर दस दिक्-पालों को आहुतियाँ दे–१. ॐ इन्द्राय स्वाहा, २. ॐ अग्नये स्वाहा, ३. ॐ यमाय स्वाहा, ४. ॐ निर्ऋताय स्वाहा, ५. ॐ वरुणाय स्वाहा, ६. ॐ वायवे स्वाहा, ७. ॐ कुबेराय स्वाहा, ८. ॐ ईशानाय स्वाहा, ९. ॐ ब्रह्मणे स्वाहा, १०. ॐ अनन्ताय स्वाहा।

पुनः दिक्-पालों के आयुधों को आहुतियाँ दे–१. ॐ वज्राय स्वाहा, २. ॐ शक्त्यै स्वाहा, ३. ॐ दण्डाय स्वाहा, ४. ॐ खड्गाय स्वाहा, ५. ॐ पाशाय स्वाहा, ६. ॐ अंकुशाय स्वाहा, ७. ॐ गदायै स्वाहा, ८. ॐ त्रिशूलाय स्वाहा, ९. ॐ पद्माय स्वाहा, १०. ॐ चक्राय स्वाहा।

तब बलि-देवताओं को आहुतियाँ दे–१. ॐ वटुकाय स्वाहा, २. ॐ योगिन्यै स्वाहा, ३. ॐ क्षेत्रपालाय स्वाहा, ४. ॐ गणेशाय स्वाहा, ५. ॐ वसवे स्वाहा, ६. ॐ सूर्याय स्वाहा, ७. ॐ शिवाय स्वाहा, ८. ॐ भूताय स्वाहा।

फिर 'स्वाहा'-युक्त चतुर्थ्यन्त भगवती ललिता के नामों को क्रम से पढ़ते हुए आहुतियाँ प्रदान करे। यथा–

१- ॐ श्रीमहा-मनोन्मन्यै नमः स्वाहा। २- ॐ श्रीशक्त्यै नमः स्वाहा। ३- ॐ श्रीशिव-शक्त्यै नमः स्वाहा। ४- ॐ श्रीशि-शङ्कर्यै नमः स्वाहा। ५- ॐ श्रीइच्छा-शक्ति-स्वरूपिण्यै नमः स्वाहा। ६- ॐ श्रीक्रिया-शक्ति-स्वरूपिण्यै नमः स्वाहा। ७- ॐ श्रीज्ञान-शक्ति - स्वरूपिण्यै नमः स्वाहा। ८- ॐ श्रीशान्त्यातीता कलायै नमः स्वाहा। ९- ॐ श्रीनन्दायै नमः स्वाहा। १०- ॐ श्रीशिव - मायायै नमः स्वाहा। ११- ॐ श्रीशिव - प्रियायै नमः स्वाहा। १२- ॐ श्रीसर्वज्ञायै नमः स्वाहा। १३- ॐ श्रीसुन्दर्यै नमः स्वाहा।

१४- ॐ श्रीसौम्यायै नमः स्वाहा । १५- ॐ श्रीसच्चिदानन्द - विग्रहायै नमः स्वाहा । १६- ॐ श्रीपरात्परा-मय्यै नमः स्वाहा । १७- ॐ श्रीबालायै नमः स्वाहा । १८- ॐ श्रीत्रिपुरायै नमः स्वाहा। १९- ॐ श्रीकुण्डल्यै नमः स्वाहा। २०- ॐ श्रीशिवायै नमः स्वाहा। २१- ॐ श्रीरुद्राण्यै नमः स्वाहा। २२- ॐ श्रीविजयायै नमः स्वाहा। २३- ॐ श्रीसर्वायै नमः स्वाहा। २४- ॐ श्रीसर्वाण्यै नमः स्वाहा। २५- ॐ श्रीभुवनेश्वर्यै नमः स्वाहा।

२६- ॐ श्रीकल्याण्यै नमः स्वाहा। २७- ॐ श्रीशूलिन्यै नमः स्वाहा। २८- ॐ श्रीकान्तायै नमः स्वाहा। २९- ॐ श्रीमहा-त्रिपुर-सुन्दर्यै नमः स्वाहा। ३०- ॐ श्रीमालिन्यै नमः स्वाहा। ३१- ॐ श्रीमानिन्यै नमः स्वाहा। ३२- ॐ श्रीशर्वायै नमः स्वाहा। ३३- ॐ श्रीमग्नोल्लासायै नमः स्वाहा। ३४- ॐ श्रीमोहिन्यै नमः स्वाहा। ३५- ॐ श्रीमाहेश्वर्यै नमः स्वाहा। ३६- ॐ श्रीमातङ्ग्यै नमः स्वाहा। ३७- ॐ श्रीशिव-कामायै नमः स्वाहा। ३८- ॐ श्रीशिवात्मिकायै नमः स्वाहा। ३९- ॐ श्रीकामाक्ष्यै नमः स्वाहा। ४०- ॐ श्रीकमलाक्ष्यै नमः स्वाहा। ४१- ॐ श्रीमीनाक्ष्यै नमः स्वाहा। ४२- ॐ श्रीसर्व-साक्षिण्यै नमः स्वाहा। ४३- ॐ श्रीउमा-देव्यै नमः स्वाहा। ४४- ॐ श्रीमहा-काल्यै नमः स्वाहा। ४५- ॐ श्रीश्यामायै नमः स्वाहा। ४६- ॐ श्रीसर्व-जन-प्रियायै नमः स्वाहा। ४७- ॐ श्रीचित्-परायै नमः स्वाहा। ४८- ॐ श्रीचिद्-घनानन्दायै नमः स्वाहा। ४९- ॐ श्रीचिन्मयायै नमः स्वाहा। ५०- ॐ श्रीचित्-स्वरूपिण्यै नमः स्वाहा।

५१- ॐ श्रीमहा-सरस्वत्यै नमः स्वाहा। ५२- ॐ श्रीदुर्गायै नमः स्वाहा। ५३- ॐ श्रीज्वाला दुर्गायै नमः स्वाहा। ५४- ॐ श्रीअति-मोहिन्यै नमः स्वाहा। ५५- ॐ श्रीनकुल्यै नमः स्वाहा। ५६- ॐ श्रीशुद्ध-विद्यायै नमः स्वाहा। ५७- ॐ श्रीसच्चिदानन्द-विग्रहायै नमः स्वाहा। ५८- ॐ श्रीसु - प्रभायै नमः स्वाहा। ५९- ॐ श्रीस्व-प्रभायै नमः स्वाहा। ६०- ॐ श्रीज्वालायै नमः स्वाहा। ६१-ॐ श्रीइन्द्राक्ष्यै नमः स्वाहा। ६२- ॐ श्रीविश्व - मोहिन्यै नमः स्वाहा। ६३- ॐ श्रीमहेन्द्र - जाल - मध्यस्थायै नमः स्वाहा। ६४- ॐ श्रीमाया-मय-विनोदिन्यै नमः स्वाहा। ६५- ॐ श्रीशिवेश्वर्यै नमः स्वाहा। ६६- ॐ श्रीवृषारूढायै नमः स्वाहा। ६७- ॐ श्रीविद्या - जाल -विनोदिन्यै नमः स्वाहा। ६८- ॐ श्रीमन्त्रेश्वर्यै नमः स्वाहा। ६९- ॐ श्रीमहा - लक्ष्म्यै नमः स्वाहा। ७०- ॐ श्रीमहा - काल्यै नमः स्वाहा। ७१- ॐ श्रीफल-प्रदायै नमः स्वाहा। ७२- ॐ श्रीचतुर्वेद-विशेषज्ञायै नमः स्वाहा। ७३- ॐ श्रीसावित्र्यै नमः स्वाहा। ७४- ॐ श्रीसर्व - देवतायै नमः स्वाहा। ७५- ॐ श्रीमहेन्द्राण्यै नमः स्वाहा।

७६- ॐ श्रीगणाध्यक्षायै नमः स्वाहा। ७७- ॐ श्रीमहा - भैरव - मोहिन्यै नमः स्वाहा। ७८- ॐ श्रीमहा - मय्यै नमः स्वाहा। ७९- ॐ श्रीमहा - घोरायै नमः स्वाहा। ८०- ॐ श्रीमहा - देव्यै नमः स्वाहा। ८१- ॐ श्रीमदापहायै नमः स्वाहा। ८२- ॐ श्रीमहिषासुर - संहन्त्र्यै नमः स्वाहा। ८३- ॐ श्रीचण्ड - मुण्ड - कुलान्तकायै नमः स्वाहा। ८४- ॐ श्रीचक्रेश्वरी चतुर्वेदायै नमः स्वाहा। ८५- ॐ श्रीसर्वाद्यै नमः स्वाहा। ८६- ॐ श्रीसुर - नायिकायै नमः स्वाहा। ८७- ॐ श्रीषड्-शास्त्र-निपुणायै नमः स्वाहा। ८८- ॐ श्रीनित्यायै नमः स्वाहा। ८९- ॐ श्रीषड् - दर्शन-विचक्षणायै नमः स्वाहा। ९०- ॐ श्रीकाल-रात्र्यै नमः स्वाहा। ९१- ॐ श्रीकलातीतायै नमः स्वाहा। ९२- ॐ श्रीकवि-राज - मनोहरायै नमः स्वाहा। ९३- ॐ श्रीशारदा तिलकायै नमः स्वाहा। ९४- ॐ श्रीतारायै नमः स्वाहा। ९५- ॐ श्रीधीरायै नमः स्वाहा। ९६- ॐ श्रीशूर - जन - प्रियायै नमः स्वाहा। ९७- ॐ श्रीउग्र - तारायै नमः स्वाहा। ९८- ॐ श्रीमहा -मार्यै नमः स्वाहा। ९९- ॐ श्रीक्षिप्र-मार्यै नमः स्वाहा। १००- ॐ श्रीरण-प्रियायै नमः स्वाहा।

१०१- ॐ श्रीअन्न-पूर्णेश्वरी मात्रे नमः स्वाहा। १०२- ॐ श्रीस्वर्ण-कान्ति-तटि-प्रभायै नमः स्वाहा। १०३- ॐ श्रीस्वर-व्यञ्जन-वर्णाढ्यायै नमः स्वाहा। १०४- ॐ श्रीगद्य - पद्यादि - कारणायै नमः स्वाहा। १०५- ॐ श्रीपद - वाक्यार्थ - निलयायै नमः स्वाहा। १०६- ॐ श्रीविन्दु - नादादि-कारणायै नमः स्वाहा। १०७- ॐ श्रीमोक्षेशी-महिषी-नित्यायै नमः स्वाहा। १०८- ॐ श्रीभुक्ति-मुक्ति -फल-प्रदायै नमः स्वाहा। १०९- ॐ श्रीविज्ञान-दायिनी प्राज्ञायै नमः स्वाहा। ११०- ॐ श्रीप्रज्ञान-फल-दायिन्यै नमः स्वाहा। १११- ॐ श्रीअहङ्कारा कलातीतायै नमः स्वाहा। ११२- ॐ श्रीपरा-शक्तिः परात्परायै नमः स्वाहा।

उक्त 'नाम-मन्त्रों' से आहुति देने के बाद 'श्रीललिताम्बिकार्पणमस्तु' ऐसा कहकर 'वेदी' के सम्मुख जल छोड़े। फिर चार आहुतियाँ घी की दें—१ ॐ भूः स्वाहा, २ ॐ भुव स्वाहा, ३ ॐ स्वः स्वाहा, ४ ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा।

अन्त में श्रीललिताम्बिका के पुनः श्रीचक्र अथवा हृदय में विराजने के भावना करते हुए 'भस्म-वन्दन' तथा 'विसर्जन' करना चाहिए। यथा—

ॐ त्र्यायुषं जमदग्ने कश्यपस्य त्र्यायुषं । यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नो अस्तु त्र्यायुषं।।

ॐ भो भो वह्ने महा-शक्ते, सर्व-काम-प्रसाधक।
कर्मान्तरेऽपि सम्प्राप्ते, सान्निध्यं कुरु सादरम्।।

॥ श्रीललिता-त्रिपुर-सुन्दर्यै नमः॥

श्री ललिता-लकारादि-शत-नाम-स्तोत्र-साधना

॥ पूर्व-पीठिका ॥

कैलास-शिखरासीनं, देव-देवं जगद्-गुरुम् ।
पप्रच्छेशं परानन्दं, भैरवी परमेश्वरम् ॥१॥

॥ श्रीभैरव्युवाच ॥

कौलेश! श्रोतुमिच्छामि, सर्व - मन्त्रोत्तमोत्तमम्।
ललिताया शत-नाम,सर्व-काम-फल-प्रदम् ॥२॥

॥ श्रीभैरवोवाच ॥

शृणु देवि महा - भागे!, स्तोत्रमेतदनुत्तमम्।
पठनाद् धारणादस्य, सर्व-सिद्धीश्वरो भवेत् ॥३॥
षट्-कर्माणि सिद्ध्यन्ति, स्तवस्यास्य प्रसादतः।
गोपनीयं पशोरग्रे, स्व-योनिमपरे यथा ॥४॥

॥ विनियोग ॥

ललिताया लकारादि, नाम-शतकस्य देवि!।
राज-राजेश्वरो ऋषिः, प्रोक्तो छन्दोऽनुष्टुप् तथा ॥५॥
देवता ललिता-देवी, षट्-कर्म-सिद्ध्यर्थे तथा।
धर्मार्थ-काम-मोक्षेषु, विनियोगः प्रकीर्तितः ॥६॥
वाक्-काम-शक्ति-वीजेन, कर-षडङ्गमाचरेत्।
प्रयोगे बाला-त्र्यक्षरी, योजयित्वा जपं चरेत् ॥७॥

॥ मूल श्रीललिता लकारादि-शत-नाम स्तोत्रम् ॥

ललिता[१] लक्ष्मी[२] लोलाक्षी[३], लक्ष्मणा[४] लक्ष्मणार्चिता[५]।
लक्ष्मण-प्राण - रक्षिणी[६], लाकिनी[७] लक्ष्मण-प्रिया[८] ॥१॥
लोला[९] लकारा[१०] लोमशा[११], लोल-जिह्वा [१२] लज्जा-वती[१३] ।
लक्ष्या[१४] लाक्ष्या[१५] लक्ष-रता[१६], लकाराक्षर-भूषिता[१७] ॥२॥
लोल-लयात्मिका[१८] लीला[१९], लीला-वती[२०] च लाङ्गली[२१] ।
लावण्यामृत - सारा[२२] च, लावण्यामृत -दीर्घिका[२३] ॥३॥
लज्जा[२४] लज्जा-मती[२५] लज्जा[२६], ललना[२७] ललन-प्रिया[२८]।
लवणा[२९] लवली[३०] लसा[३१], लाक्षकी[३२] लुब्धा[३३] लालसा[३४] ॥४॥

लोक-माता[३५] लोक-पूज्या[३६], लोक - जननी[३७] लोलुपा[३८] ।
लोहिता[३९] लोहिताक्षी[४०] च, लिङ्गाख्या[४१] चैव लिङ्गेशी[४२] ।।५।।
लिङ्ग-गीतिः[४३] लिङ्ग-भवा[४४], लिङ्ग-माला[४५] लिङ्ग-प्रिया[४६]।
लिङ्गाभिधायिनी[४७] लिङ्गा[४८], लिङ्ग-नाम-सदानन्दा[४९] ।।६।।
लिङ्गामृत-प्रीता[५०] लिङ्गार्चन-प्रीता[५१] लिङ्ग-पूज्या[५२] ।
लिङ्ग-रूपा[५३] लिङ्गस्था[५४] च, लिङ्गालिङ्गन-तत्परा[५५] ।।७।।
लता-पूजन-रता[५६] च, लता - साधक - तुष्टिदा[५७] ।
लता - पूजक - रक्षिणी[५८], लता-साधन-सिद्धिदा[५९] ।।८।।
लता - गृह - निवासिनी[६०], लता-पूज्या[६१] लताराध्या[६२] ।
लता-पुष्पा[६३] लता-रता[६४], लता-धारा[६५] लता-मयी[६६] ।।९।।
लता - स्पर्शन - सन्तुष्टा[६७], लताऽऽलिङ्गन-हर्षिता[६८]।
लता-विद्या[६९] लता-सारा[७०], लताऽऽचारा[७१] लता-निधिः[७२] ।।१०।।
लवङ्ग - पुष्प - सन्तुष्टा[७३], लवङ्ग-लता-मध्यस्था[७४] ।
लवङ्ग - लतिका - रूपा[७५], लवङ्ग-होम-सन्तुष्टा[७६] ।।११।।
लकाराक्षर - पूजिता[७७], च लकार - वर्णोद्भवा[७८] ।
लकार-वर्ण-भूषिता[७९], लकार-वर्ण-रुचिरा[८०] ।।१२।।
लकार - बीजोद्भवा[८१] तथा लकाराक्षर-स्थिता[८२] ।
लकार-बीज-निलया[८३], लकार-वीज-सर्वस्वा[८४] ।।१३।।
लकार - वर्ण - सर्वाङ्गी[८५], लक्ष्य-छेदन-तत्परा[८६] ।
लक्ष्य-धरा[८७] लक्ष्य-घूर्णा[८८], लक्ष-जापेन-सिद्धिदा[८९] ।।१४।।
लक्ष-कोटि-रूप-धरा[९०], लक्ष-लीला-कला-लक्ष्या[९१] ।
लोक-पालेनार्चिता[९२] च, लाक्षा-राग-विलेपना[९३] ।।१५।।
लोकातीता[९४] लोपा-मुद्रा[९५], लज्जा-बीज-स्वरूपिणी[९६] ।
लज्जा-हीना[९७] लज्जा-मयी[९८], लोक-यात्रा-विधायिनी[९९] ।।१६।।
लास्य-प्रिया[१००] लय-करी[१०१], लोक-लया[१०२] लम्बोदरी[१०३]।
लघिमादि - सिद्धि-दात्री[१०४], लावण्य-निधि-दायिनी[१०५] ।
लकार-वर्ण-ग्रथिता[१०६], लं-बीजा[१०७] ललिताम्बिका[१०८] ।।१७।।

।। फल-श्रुति ।।

इति ते कथितं देवि!, गुह्याद् गुह्य-तरं परम् ।
प्रातः-काले च मध्याह्ने, सायाह्ने च सदा निशि ।
यः पठेत् साधक-श्रेष्ठो, त्रैलोक्य-विजयी भवेत् ।।१।।

सर्व - पापि - विनिर्मुक्तः, स याति ललिता-पदम् ।
शून्यागारे शिवारण्ये, शिव-देवालये तथा ।।२।।
शून्य - देशे तडागे च, नदी - तीरे चतुष्पथे ।
एक-लिङ्गे ऋतु-स्नाता-गेहे वेश्या-गृहे तथा ।।३।।
पठेदष्टोत्तर - शत - नामानि सर्व - सिद्धये ।
साधको वाञ्छां यत्-कुर्यात्, तत्तथैव भविष्यति ।।४।।
ब्रह्माण्ड-गोलके याश्च, याः काश्चिज्जगती-तले ।
समस्ताः सिद्धयो देवि!, करामलक-वत् सदा ।।५।।
साधक - स्मृति - मात्रेण, यावन्त्यः सन्ति सिद्धयः ।
स्वयमायान्ति पुरतो, जपादीनां तु का कथा ।।६।।
अयुतावर्त्तनाद् देवि!, पुरश्चर्याऽस्य गीयते ।
पुरश्चर्या-युतः स्तोत्रः, सर्व-कर्म-फल-प्रदः ।।७।।
सहस्रं च पठेद्यस्तु, मासार्धं साधकोत्तमः ।
दासी-भूतं जगत्-सर्वं, मासार्धाद् भवति ध्रुवम् ।।८।।
नित्यं प्रति - नाम्ना हुत्वा, पलाश - कुसुमैर्नरः ।
भू-लोकस्थाः सर्व-कन्याः, सर्व-लोक-स्थितास्तथा ।।९।।
पातालस्थाः सर्व-कन्याः,नाग-कन्याः यक्ष-कन्याः ।
वशीकुर्यान्मण्डलार्धात्, संशयो नात्र विद्यते ।।१०।।
अश्वत्थ - मूले पठेत् शत - वारं ध्यान - पूर्वकम् ।
तत्-क्षणाद् व्याधि-नाशश्च, भवेद् देवि! न संशयः।।११।।
शून्यागारे पठेत् स्तोत्रं, सहस्रं ध्यान - पूर्वकम् ।
लक्ष्मी प्रसीदति ध्रुवं, स त्रैलोक्यं वशिष्यति ।।१२।।
प्रेत - वस्त्रं भौमे ग्राह्यं, रिपु - नाम च वेष्टितम् ।
प्राण-प्रतिष्ठां कृत्वा तु, पूजां चैव हि कारयेत् ।।१३।।
श्मशाने निखनेद् रात्रौ, द्वि - सहस्रं पठेत् ततः ।
जिह्वा-स्तम्भनमाप्नोति, सद्यो मूकत्वमाप्नुयात् ।।१४।।
श्मशाने पठेत् स्तोत्रं, अयुतार्धं सु - बुद्धिमान् ।
शत्रु-क्षयो भवेत् सद्यो, नान्यथा मम भाषितम् ।।१५।।
प्रेत - वस्त्रं शनौ ग्राह्यं, प्रति - नाम्ना सम्पुटितम् ।
शत्रु-नाम लिखित्वा च, प्राण-प्रतिष्ठां कारयेत् ।।१६।।

ततः ललितां सम्पूज्य, कृष्ण - धत्तूर - पुष्पकैः।
श्मशाने निखनेद् रात्रौ, शत-वारं पठेत् स्तोत्रम् ।।१७।।
ततो मृत्युमवाप्नोति, देव - राज - समोऽपि सः।
श्मशानाङ्गारमादाय, मङ्गले शनिवारे वा ।।१८।।
प्रेत - वस्त्रेण संवेष्ट्य, बध्नीयात् प्रेत - रज्जुना ।
दशाभिमन्त्रितं कृत्वा, खनेद् वैरि-वेश्मनि ।।१९।।
सप्त - रात्रान्तरे तस्योच्चाटनं भ्रामणं भवेत्।
कुमारीं पूजयित्वा तु, यः पठेद् भक्ति-तत्परः ।।२०।।
न किञ्चिद् दुर्लभं तस्य, दिवि वा भुवि मोदते ।
दुर्भिक्षे राज-पीडायां, संग्रामे वैरि-मध्यके ।।२१।।
यत्र यत्र भयं प्राप्तः, सर्वत्र प्रपठेन्नरः ।
तत्र तत्राभयं तस्य, भवत्येव न संशयः ।।२२।।
वाम-पार्श्वे समानीय, शोधितां वर-कामिनीम् ।
जपं कृत्वा पठेद् यस्तु, तस्य सिद्धिः करे स्थिता ।।२३।।
दरिद्रस्तु चतुर्दश्यां, कामिनी - सङ्गमैः सह ।
अष्ट-वारं पठेद् यस्तु, कुबेर-सदृशो भवेत् ।।२४।।
श्रीललितां महा-देवीं, नित्यं सम्पूज्य मानवः ।
प्रति-नाम्ना जुहुयात् स, धन-राशिमवाप्नुयात् ।।२५।।
नवनीतं चाभिमन्त्र्य, स्त्रीभ्यो दद्यान्महेश्वरि !
वन्ध्यां पुत्र-प्रदं देवि!, नात्र कार्या विचारणा।।२६।।
कण्ठे वा वाम-बाहौ वा, योनौ वा धारणाच्छिवे !
बहु-पुत्र-वती नारी, सुभगा जायते ध्रुवम् ।।२७।।
उग्रं उग्रं महदुग्रं, स्तवमिदं ललितायाः ।
सु-विनीताय शान्ताय, दान्तायाति- गुणाय च ।।२८।।
भक्ताय ज्येष्ठ - पुत्राय, गुरु - भक्ति - पराय च ।
भक्त - भक्ताय योग्याय, भक्ति-शक्ति-पराय च ।।२९।।
वेश्या - पूजन - युक्ताय, कुमारी - पूजकाय च ।
दुर्गा-भक्ताय शैवाय, कामेश्वर-प्रजापिने ।।३०।।
अद्वैत - भाव - युक्ताय, शक्ति - भक्ति - पराय च ।
प्रदेयं शत-नामाख्यं, स्वयं ललिताज्ञया ।।३१।।

खलाय पर - तन्त्राय, पर - निन्दा - पराय च ।
भ्रष्टाय दुष्ट-सत्त्वाय, परी-वाद-पराय च ।।३२।।
शिवाभक्ताय दुष्टाय, पर - दार - रताय च ।
वेश्या-स्त्री-निन्दकाय च, पञ्च-मकार-निन्दके ।।३३।।
न स्तोत्रं दर्शयेद् देवि!, मम हत्या-करो भवेत् ।
तस्मान्न दापयेद् देवि!, मनसा कर्मणा गिरा ।।३४।।
अन्यथा कुरुते यस्तु, स क्षीणायुर्भवेद् ध्रुवम् ।
पुत्र-हारी च स्त्री-हारी, राज्य-हारी भवेद् ध्रुवम् ।।३५।।
मन्त्र - क्षोभश्च जायते, तस्य मृत्युर्भविष्यति ।
क्रम-दीक्षा-युतानां च, सिद्धिर्भवति नान्यथा ।।३६।।
क्रम-दीक्षा-युतो देवि!, क्रमाद् राज्यमवाप्नुयात् ।
क्रम-दीक्षा-समायुक्तः, कल्पोक्त-सिद्धि-भाग् भवेत् ।।३७।।
विधेर्लिपिं तु सम्मार्ज्य, किङ्करत्वं विसृज्य च ।
सर्व-सिद्धिमवाप्नोति, नात्र कार्या विचारणा ।।३८।।
क्रम - दीक्षा - युतो देवि!, मम समो न संशयः ।
गोपनीयं गोपनीयं, गोपनीयं सदाऽनघे ।।३९।।
स दीक्षितः सुखी साधुः, सत्य-वादी जितेन्द्रियः ।
स वेद-वक्ता स्वाध्यायी, सर्वानन्द-परायणः ।।४०।।
स्वस्मिन् ललितां सम्भाव्य, पूजयेज्जगदम्बिकाम् ।
त्रैलोक्य-विजयी भूयान्नात्र कार्या विचारणा ।।४१।।
गुरु-रूपं शिवं ध्यात्वा, शिव-रूपं गुरुं स्मरेत् ।
सदा-शिवः स एव स्यान्नात्र कार्या विचारणा ।।४२।।

।। श्रीकौलिकार्णवे श्रीभैरवी-संवादे षट्-कर्म-सिद्ध-दायकं
श्रीमल्ललिताया लकारादि-शत-नाम-स्तोत्रम्।।

॥ श्रीललिता-त्रिपुर-सुन्दरी को नमस्कार॥

श्रीललिता-लकारादि-शत-नाम-स्तोत्र-साधना (हिन्दी-रूपान्तर)

कौलिकार्णव-तन्त्रोक्त **'श्री ललिता शत-नाम स्तोत्र'** यहाँ प्रकाशित किया जा रहा है। यह स्तोत्र **जगदलपुर** के **करिया पाथर श्मशान** में प्रवास कर रहे **अवधूत श्री चिदानन्द- जी** से प्राप्त हुआ था। **अवधूत श्री चिदानन्द जी** ने अपना कोई परिचय नहीं दिया, किन्तु उनका ज्ञान-भण्डार असीमित था। उन्हीं के कथनानुसार इसकी साधना **श्रीगुरुदेव** के द्वारा अत्यन्त ही योग्य शिष्य को बतलाई जाती है। **पश्वाचारी साधक** यदि इसका प्रयोग करे, तो उसका अनिष्ट हो सकता है। अतः **वीराचारी साधक** को ही इसकी साधना करनी चाहिए। प्रयोगों में जहाँ प्रत्येक नाम का अलग-अलग प्रयोग करना है, वहाँ प्रत्येक नाम **'चतुर्थ्यन्त'** प्रयुक्त होगा, अन्यत्र केवल **स्तोत्र का पाठ** करना चाहिए। अधिक पाठ करते समय **प्रथम आवृत्ति** में **पूरा स्तोत्र** (अन्तिम श्लोक तक) तथा **मध्य की सभी आवृत्तियों** में **केवल नामों का पाठ** और **अन्तिम आवृत्ति** में **नामों के पाठ** के बाद पूरी **फल-श्रुति** का पाठ करना चाहिए। शेष विधि जैसी **फल-श्रुति** में वर्णित है, वैसी ही है। *-श्री भैरवानन्दनाथ*

कैलास शिखर पर बैठे हुए देवों के देव **जगद्-गुरु परमेश्वर** से **भैरवी** ने कहा- **हे कौलेश !**, सभी मन्त्रों में उत्तम से भी उत्तम समस्त कामनाओं के फल को देनेवाला **'श्रीललिता शत-नाम स्तोत्र'** सुनने की इच्छा है ।।१-२।।

श्रीभैरव ने कहा- **हे महा-भागे !** इस **उत्तम स्तोत्र** को सुनो। इसे पढ़ने और धारण करनेवाला समस्त सिद्धियों का स्वामी होता है। इस स्तव की कृपा से षट्-कर्मों की सिद्धि होती है। पशुओं के आगे इसे स्व-योनि के समान गुप्त रखना चाहिए ।।३-४।।

विनियोग-श्रीललिता के इस **नाम-शतक** के **राज-राजेश्वर** ऋषि, **अनुष्टुप्** छन्द, **श्रीललिता देवी** देवता तथा **षट्-कर्मों** की सिद्धि-सहित **धर्म-अर्थ-काम** व **मोक्ष** की प्राप्ति के लिए विनियोग है। वाक् (**ऐं**), काम (**क्लीं**), शक्ति (**सौः**), वीजों से **कर-षडङ्ग-न्यास** करें और प्रयोगों में बाला त्र्यक्षरी (**ऐं क्लीं सौः**) की योजना करें।

श्लोक १ से श्लोक १८ तक प्रथम नाम **'ललिता'** से लेकर **'ललिताम्बिका'** तक **१०८ नाम** स्पष्ट रूप से वर्णित हैं।

फल-श्रुति-जो श्रेष्ठ साधक सदा **प्रातः-काल, मध्याह्न** (दोपहर), **सन्ध्या** और **रात्रि-काल** में इसका पाठ करते हैं, वे सभी पापों से मुक्त होकर त्रैलोक्य-विजयी होते हैं और अन्त में **ललिता** के पद (स्वरूप या मुक्ति) को प्राप्त होते हैं ।।१-२।।

निर्जन भवन, श्मशान, शिवालय, निर्जन स्थान, तालाब और **नदी** के किनारे, **चतुष्पथ** पर, **एक-लिङ्ग** (जिस **शिव-लिङ्ग** के चारों तरफ पाँच कोस तक दूसरा **शिव-लिङ्ग** न हो), **ऋतु-स्नाता स्त्री** या **वेश्या** के घर में समस्त सिद्धियों की प्राप्ति के लिए **अष्टोत्तर-शत-नामों** का पाठ करना चाहिए। इन स्थानों पर पाठ करनेवाला जो भी कामना करता है, वह पूरी होती है। इस पृथ्वी पर और ब्रह्माण्ड में जितनी भी सिद्धियाँ हैं, सभी कर-तल-गत हो जाती हैं और स्मरण करने मात्र से साधक को बिना जप आदि के ही वे प्रत्यक्ष हो जाती हैं ।। ३-६ ।।

अयुत (दस हजार) आवृत्तियों में इसका **पुरश्चरण** होता है। **पुरश्चरण** से सिद्ध स्तोत्र सभी कर्मों के फल को देने में समर्थ होता है ।।७।।

पुरश्चरण के बाद **एक सहस्र** बार इसका पाठ करने से १५ दिन में सारे जगत् का वशीकरण होता है ।।८।।

नित्य प्रत्येक **नाम** द्वारा **पलाश** के पुष्पों से हवन करने से छः मास में सभी लोकों की कन्याओं का वशीकरण होता है ।।९-१०।।

अश्वत्थ वृक्ष के मूल भाग में बैठकर ध्यान-पूर्वक **१०८ बार पाठ** करने से रोग नष्ट होता है ।।११।।

शून्य गृह में ध्यान-पूर्वक **१००० बार पाठ** करने से **लक्ष्मी** प्रसन्न होती है और तीनों लोक वशीभूत होते हैं ।।१२।।

मङ्गल के दिन प्रेत-वस्त्र लाए, शत्रु-नाम उसमें लपेटे, प्राण-प्रतिष्ठा कर उसकी पूजा करे, रात्रि में उस वस्त्र को **श्मशान** में गाड़कर, **२००० पाठ** करे, तो शत्रु की जिह्वा स्तम्भित होती है। वह गूँगा हो जाता है ।।१३-१४।।

श्मशान में इस स्तोत्र का **५००० पाठ** करे, तो **शत्रु-नाश** होता है ।।१५।।

शनि के दिन प्रेत-वस्त्र लाए, प्रत्येक नाम से सम्पुटित शत्रु-नाम लिखे, प्राण-प्रतिष्ठा कर **ललिता** की पूजा **काले धतूर-पुष्पों** से करे, रात्रि में **श्मशान** में गाड़ कर **१०० बार स्तोत्र का पाठ** करे, तो शत्रु की मृत्यु होती है ।।१६-१७।।

मङ्गल या **शनि** के दिन **श्मशान** से अङ्गार लेकर प्रेत-वस्त्र में लपेट कर प्रेत-रस्सी से बाँधे, उसे १० बार अभिमन्त्रित कर शत्रु-गृह में गाड़ दे। सात रात्रि के भीतर शत्रु का उच्चाटन होता है ।।१८-१९।।

कुमारी-पूजा कर **भक्ति - पूर्वक पाठ** करे, तो पृथ्वी पर कुछ भी दुर्लभ नहीं रहता ।।२०।।

दुर्भिक्ष, राज-भय, युद्ध और **शत्रुओं** के मध्य जहाँ कहीं भय हो, इसका पाठ करे, तो सङ्कट दूर होता है ।।२१-२२।।

शोधिता श्रेष्ठ कामिनी को अपने बाँई ओर बैठा कर **जप-पूर्वक स्तोत्र का पाठ** करे, तो सिद्धि शीघ्र मिलती है ।।२३।।

चतुर्दशी के दिन **कामिनी** के साथ जो दरिद्र व्यक्ति **८ बार स्तोत्र-पाठ** करता है, वह **कुबेर** के समान धनाढ्य होता है ।।२४।।

नित्य **श्री महा-देवी ललिता** की पूजा कर **प्रत्येक नाम से हवन** करे, तो विपुल धन प्राप्त होता है ।।२५।।

मक्खन को अभिमन्त्रित कर **बाँझ स्त्री** को खिलाए, तो वह पुत्र-वती होती है ।।२६।।

कण्ठ, बाँई भुजा या **योनि** में धारण करने से स्त्री पुत्र लाभ करती है ।।२७।।

श्रीललिता का यह स्तोत्र **महा - उग्र** है। **विनम्र, शान्त, भक्त, ज्येष्ठ पुत्र, गुरु-भक्ति-परायण, भक्तों के भक्त, वेश्या** और **कुमारी-पूजन-कर्ता, दुर्गा-भक्त, शिव के भक्त, कामेश्वर-मन्त्र के जप-कर्ता, अद्वैत-भावापन्न** और **शक्ति में भक्ति रखनेवाले साधक** को यह **शत-नाम** देना चाहिए, ऐसी स्वयं **ललिता** की आज्ञा है ।।२८-३१।।

खल (दुष्ट प्रकृतिवाला), **पर-तन्त्र** (जो किसी दूसरे के अधीन हो), **दूसरों की निन्दा** करनेवाला, **भ्रष्ट** (पतित या अधर्मी), **परोवादी** (दूसरों की निन्दा करनेवाला), **शिव में अभक्ति** रखनेवाला, दूसरे की स्त्री में आसक्त, वेश्या और स्त्रियों की निन्दा करनेवाला तथा पञ्च-मकारों की निन्दा करनेवाला-इनको यह स्तोत्र दिखाने से मेरी हत्या लगती है। अत: मन, वचन और कर्म से भी स्तोत्र नहीं देना चाहिए। जो इसके विपरीत करता है, वह पुत्र, स्त्री और राज्य से वञ्चित होता है। उसकी आयु निश्चित-रूप से कम हो जाती है। उसका मन्त्र क्षुभित होकर उसी का नाश कर देता है।।३२-३५।।

क्रम-दीक्षा से युक्त साधक को सिद्धि मिलती है। वह कल्पोक्त सिद्धियों को प्राप्त कर क्रमश: राज्य-वैभव को प्राप्त करता है।वह **ब्रह्मा** के लेख (प्रारब्ध) को भी मिटाकर संसार-बन्धन से छूटकर सभी सिद्धियाँ प्राप्त करता है। **क्रम-दीक्षा** से युक्त साधक मेरे समान ही है। वही दीक्षित है, सुखी, साधु, सत्य-वादी, जितेन्द्रिय, वेद-वक्ता, स्वाध्यायी और समस्त आनन्दों में मग्न रहनेवाला है।। ३६-४०।।

जो स्वयं को **ललिता**-रूप जानकर **जगदम्बा** का पूजन करता है, वह त्रैलोक्य-विजयी होता है। जो **शिव** को **गुरु** और **गुरु** को **शिव-रूप** में जानता है, वही **सदा-शिव** है, इसमें सन्देह नहीं। **हे देवि**, प्रयत्न-पूर्वक इसे गोपनीय रखना चाहिए ।।४१-४२।।

॥ श्रीललिता-त्रिपुर-सुन्दर्यै नमः॥

श्रीललिता-लकारादि-शत-नाम-जप-साधना

।। विनियोग ।।

ॐ अस्य श्रीललिता-लकारादि-शत-नाम-माला-मन्त्रस्य श्रीराज-राजेश्वरो ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। श्रीललिताम्बा देवता। 'क-ए-ई-ल-ह्रीं' बीजं। 'स-क-ल-ह्रीं' शक्तिः। 'ह-स-क-ह-ल-ह्रीं' उत्कीलनं। श्रीललिताम्बा-देवता-प्रसाद-सिद्धये षट्-कर्म-सिद्ध्यर्थे तथा धर्मार्थ-काम-मोक्षेषु पूजने तर्पणे च विनियोगः।

।। ऋष्यादि-न्यास ।।

ॐ श्रीराज-राजेश्वरो-ऋषये नमः— शिरसि। ॐ अनुष्टुप्-छन्दसे नमः— मुखे । ॐ श्रीललिताम्बा-देवतायै नमः— हृदि । ॐ 'क-ए-ई-ल-ह्रीं' बीजाय नमः— लिङ्गे । ॐ 'स-क-ल-ह्रीं' शक्तये नमः— नाभौ । ॐ 'ह-स-क-ह-ल-ह्रीं' उत्कीलनाय नमः— सर्वाङ्गे। ॐ श्रीललिताम्बा-देवता-प्रसाद-सिद्धये षट्-कर्म-सिद्ध्यर्थे तथा धर्मार्थ - काम-मोक्षेषु पूजने तर्पणे च विनियोगाय नमः— अञ्जलौ ।

।। कर-न्यास ।।

ॐ 'ऐं क-ए-ई-ल-ह्रीं' अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ 'क्लीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं' तर्जनीभ्यां नमः। ॐ 'सौः स-क-ल-ह्रीं' मध्यमाभ्यां नमः। ॐ 'ऐं क-ए-ई-ल-ह्रीं' अनामिकाभ्यां नमः। ॐ 'क्लीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं' कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ 'सौः स-क-ल-ह्रीं' करतल-कर-पृष्ठाभ्यां नमः।

।। अङ्ग-न्यास ।।

ॐ 'ऐं क-ए-ई-ल-ह्रीं' हृदयाय नमः। ॐ 'क्लीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं' शिरसे स्वाहा। ॐ 'सौः स-क-ल-ह्रीं' शिखायै वषट्। ॐ 'ऐं क-ए-ई-ल-ह्रीं' कवचाय हुम्। ॐ 'क्लीं ह-स-क-ह-ल-ह्रीं' नेत्र-त्रयाय वौषट्। ॐ 'सौः स-क-ल-ह्रीं' अस्त्राय फट्।

।। ध्यान ।।

बालार्क-मण्डलाभासां, चतुर्बाहुं त्रि-लोचनाम् ।
पाशांकुश-धनुर्वाणान्, धारयन्तीं शिवां भजे ।।

।। मानस-पूजन ।।

ॐ लं पृथिव्यात्मकं गन्धं श्रीललिता-त्रिपुरा-प्रीतये समर्पयामि नमः। ॐ हं आकाश-तत्त्वात्मकं पुष्पं श्रीललिता-त्रिपुरा-प्रीतये समर्पयामि नमः। ॐ यं वायु-तत्त्वात्मकं

धूपं श्रीललिता-त्रिपुरा-प्रीतये घ्रापयामि नमः। ॐ रं अग्नि-तत्त्वात्मकं दीपं श्रीललिता-त्रिपुरा-प्रीतये दर्शयामि नमः। ॐ वं जल-तत्त्वात्मकं नैवेद्यं श्रीललिता-त्रिपुरा-प्रीतये निवेदयामि नमः। ॐ सं सर्व-तत्त्वात्मकं ताम्बूलं श्रीललिता-त्रिपुरा-प्रीतये समर्पयामि नमः।

।। श्रीललिता- लकारादि-शत-नामावली द्वारा जप ।।

१- श्रीललितायै नमः। २- श्रीलक्ष्म्यै नमः। ३- श्रीलोलाक्ष्यै नमः। ४-श्रीलक्ष्मणायै नमः। ५- श्रीलक्ष्मणार्चितायै नमः। ६- श्रीलक्ष्मण - प्राण - रक्षिण्यै नमः। ७- श्रीलाकिन्यै नमः। ८- श्रीलक्ष्मण-प्रियायै नमः। ९- श्रीलोलायै नमः। १०- श्रीलकारायै नमः। ११- श्रीलोमशायै नमः। १२- श्रीलोल-जिह्वायै नमः। १३- श्रीलज्जा-वत्यै नमः। १४- श्रीलक्ष्यायै नमः। १५- श्रीलाक्ष्यायै नमः। १६- श्रीलक्ष-रतायै नमः। १७- श्रीलकाराक्षर - भूषितायै नमः। १८- श्रीलोल - लयात्मिकायै नभः। १९- श्रीलीलायै नमः। २०- श्रीलीला - वत्यै नमः। २१- श्रीलाङ्गल्यै नमः। २२- श्रीलावण्यामृत-सारायै नमः। २३- श्रीलावण्यामृत -दीर्घिकायै नमः। २४- श्रीलज्जायै नमः। २५- श्रीलज्जा-मत्यै नमः।

२६ - श्रीलज्जायै नमः । २७ - श्रीललनायै नमः । २८ - श्रीललन - प्रियायै नमः। २९- श्रीलवणायै नमः। ३०- श्रीलवल्यै नमः। ३१- श्रीलसायै नमः। ३२- श्रीलाक्षक्यै नमः । ३३- श्रीलुब्धायै नमः । ३४- श्रीलालसायै नमः। ३५- श्रीलोक - मातायै नमः। ३६- श्रीलोक - पूज्यायै नमः । ३७- श्रीलोक - जनन्यै नमः । ३८- श्रीलोलुपायै नमः। ३९- श्रीलोहितायै नमः। ४०- श्रीलोहिताक्ष्यै नमः। ४१- श्रीलिङ्गाख्यायै नमः। ४२- श्रीलिङ्गेश्यै नमः। ४३- श्रीलिङ्ग-गीत्यै नमः। ४४- श्रीलिङ्ग-भवायै नमः। ४५- श्रीलिङ्ग-मालायै नमः। ४६- श्रीलिङ्ग-प्रियायै नमः। ४७- श्रीलिङ्गाभिधायिन्यै नमः। ४८- श्रीलिङ्गायै नमः।, ४९- श्रीलिङ्ग-नाम-सदानन्दायै नमः। ५०-श्रीलिङ्गामृत-प्रीतायै नमः।

५१- श्रीलिङ्गार्चन-प्रीतायै नमः। ५२- श्रीलिङ्ग-पूज्यायै नमः। ५३- श्रीलिङ्ग-रूपायै नमः। ५४- श्रीलिङ्गस्थायै नमः। ५५- श्रीलिङ्गालिङ्गन-तत्परायै नमः। ५६- श्रीलता-पूजन-रतायै नमः। ५७- श्रीलता-साधक-तुष्टिदायै नमः। ५८- श्रीलता-पूजक-रक्षिण्यै नमः। ५९- श्रीलता -साधन-सिद्धिदायै नमः। ६०- श्रीलता-गृह-निवासिन्यै नमः। ६१- श्रीलता-पूज्यायै नमः। ६२- श्रीलताराध्यायै नमः। ६३- श्रीलता-पुष्पायै नमः। ६४- श्रीलता-रतायै नमः। ६५- श्रीलता-धारायै नमः। ६६- श्रीलता-मय्यै नमः। ६७- श्रीलता-स्पर्शन -सन्तुष्टायै नमः। ६८- श्रीलताऽऽलिङ्गन-हर्षितायै नमः। ६९- श्रीलता-विद्यायै नमः । ७०- श्रीलता - सारायै नमः। ७१- श्रीलताऽऽचारायै नमः। ७२- श्रीलता-निधये नमः। ७३- श्रीलवङ्ग-पुष्प-

सन्तुष्टायै नमः। ७४- श्रीलवङ्ग-लता-मध्यस्थायै नमः। ७५- श्रीलवङ्ग-लतिका-रूपायै नमः।

७६- श्रीलवङ्ग-होम-सन्तुष्टायै नमः। ७७- श्रीलकाराक्षर-पूजितायै नमः। ७८- श्रीलकार-वर्णोद्भवायै नमः। ७९- श्रीलकार-वर्ण-भूषितायै नमः। ८०- श्रीलकार-वर्ण-रुचिरायै नमः। ८१- श्रीलकार-बीजोद्भवायै नमः। ८२- श्रीलकाराक्षर - स्थितायै नमः। ८३- श्रीलकार-बीज-निलयायै नमः। ८४- श्रीलकार-वीज-सर्वस्वायै नमः। ८५- श्रीलकार-वर्ण- सर्वाङ्ग्यै नमः। ८६- श्रीलक्ष्य-छेदन-तत्परायै नमः। ८७- श्रीलक्ष्य-धरायै नमः। ८८- श्रीलक्ष्य-घूर्णायै नमः। ८९- श्रीलक्ष - जापेन - सिद्धिदायै नमः। ९०- श्रीलक्ष-कोटि-रूप-धरायै नमः। ९१- श्रीलक्ष-लीला-कला-लक्ष्यायै नमः। ९२- श्रीलोक-पालेनार्चितायै नमः। ९३- श्रीलाक्षा-राग-विलेपनायै नमः। ९४- श्रीलोकातीतायै नमः। ९५- श्रीलोपा-मुद्रायै नमः।९६- श्रीलज्जा-बीज - स्वरूपिण्यै नमः। ९७- श्रीलज्जा - हीनायै नमः। ९८- श्रीलज्जा - मय्यै नमः। ९९- श्रीलोक- यात्रा-विधायिन्यै नमः। १००- श्रीलास्य-प्रियायै नमः।

१०१- श्रीलय - कर्यै नमः। १०२- श्रीलोक - लयायै नमः। १०३- श्रीलम्बोदर्यै नमः। १०४- श्रीलघिमादि - सिद्धि - दात्र्यै नमः। १०५- श्रीलावण्य -निधि -दायिन्यै नमः। १०६- श्रीलकार-वर्ण-ग्रथितायै नमः। १०७- श्रीलं - बीजायै नमः। १०८- श्रीललिताम्बिकायै नमः।

भगवती के 'नाम-मन्त्रों' द्वारा आराधना

अपने श्वास-प्रश्वास के साथ *भगवती ललिता* के *'नाम-मन्त्रों'* का जप करने पर, *'नाम-मन्त्र'* श्वास-प्रश्वास के साथ एकाकार हो जाता है। ऐसी अवस्था में, *'प्राणायाम'* की क्रिया स्वतः होने लगती है। *'मन' की चञ्चलता* नष्ट हो जाती है और *मन की स्थिरता* के कारण *'स्वतः कुम्भक'* होने लगता है।

फिर क्रमशः *बाहरी 'नाम'-जप* भी बन्द हो जाता है और साधक—*'नाम-मन्त्र' का साक्षात्कार* करता है।

संक्षेप में, *'नाम'-साधना* से *'प्राणायाम'* आदि सभी क्रियाएँ स्वतः सिद्ध हो जाती हैं और *'कुण्डलिनी' का जागरण* होकर *भगवती की लीला का साक्षात्कार* होता है।

॥ श्रीललिता-त्रिपुर-सुन्दर्यै नमः॥

श्रीत्रिपुर-सुन्दरी वेद-सार-स्तवः

कस्तूरी-पङ्क-भास्वद् - गल - चलदमल - स्थूल - मुक्तावलीका,
ज्योत्स्ना शुद्धावदाता शशि-शिशु-मुकुटालंकृता ब्रह्म-पत्नी ।
साहित्याम्भोज-भृङ्गी कवि-कुल-विनुता सात्त्विकीं वाग् - विभूतिम्,
देयान्मे शुभ्र-वस्त्रा कर-चल-वलया वल्लकीं वादयन्ती ।।१।।

एकान्ते योगि-वृन्दैः प्रशमित-करणैः क्षुत् - पिपासा - विमुक्तैः,
सानन्दं ध्यान-योगाद् विस-गुण-सदृशी दृश्यते चित्त-मध्ये ।
या देवी हंस - रूपा भव - भय - हरणं साधकानां विधत्ते,
सा नित्यं नाद-रूपा त्रिभुवन-जननी मोदमाविष्करोतु ।।२।।

ईक्षित्री सृष्टि - काले त्रिभुवनमथ या तत्क्षणेऽनु - प्रविश्य,
स्थेमानं प्रापयन्ती निज-गुण-विभवैः सर्वथा व्याप्य विश्वम् ।
संहर्त्री सर्व - भासां विलयन - समये स्वात्मनि स्व-प्रकाशा,
सा देवी कर्म-बन्धं मम भव-करणं नाशयत्यादि-शक्तिः ।।३।।

लक्ष्या या चक्र-राजे नव - पुर - लसिते योगिनी-वृन्द-गुप्ते,
सौवर्णे शैल-शृङ्गे सुर-गण-रचिते तत्त्व-सोपान-युक्ते ।
मन्त्रिण्या मेचकाङ्ग्या कुच - भर - नतया कोल - मुख्या च सार्धम्,
साम्राज्ञी सा मदीया मद-गज-गमना दीर्घमायुस्तनोतु ।।४।।

ह्रींकाराम्भोज-भृङ्गी हय-मुख-विनुता हानि - वृद्ध्यादि -हीना,
हंसोऽहं मन्त्र-राज्ञी हरि-हय-वरदा हादि-मन्त्रार्थ-रूपा ।
हस्ते चिन्मुद्रिकाढ्या हत-बहु-दनुजा हस्ति-कृत्ति-प्रिया मे,
हार्दं शोकातिरेकं शमयतु ललिताधीश्वरी पाश-हस्ता ।।५।।

हस्ते पङ्केरुहाभे सरस - सरसिजं विभ्रती लोक - माता,
क्षीरोदन्वत्-सु-कन्या करि-वर-विनुता नित्य-पुष्टाब्ज-गेहा ।
पद्माक्षी हेम-वर्णा मुर - रिपु - दयिता शेवधिः सम्पदां या,
सा मे दारिद्र्य-दोषं दमयतु करुणा-दृष्टि-पातैरजस्रम् ।।६।।

सच्चिद्-ब्रह्म-स्वरूपां सकल - गुण - युतां निर्गुणां निर्विकाराम्,
राग-द्वेषादि-हन्त्रीं रवि-शशि-नयनां राज्य-दान-प्रवीणाम् ।

चत्वारिंशत्-त्रिकोणे चतुरधिक-समे चक्र-राजे लसन्तीम्,
कामाक्षीं कामितानां वितरण-चतुरां चेतसा भावयामि ।।७।।
कन्दर्पे शान्त - दर्पे त्रिनयन - नयन - ज्योतिषा देव-वृन्दैः,
साशङ्कं साश्रु-पातं स-विनय-करुणं याचिता काम-पत्न्या ।
या देवी दृष्टि-पातैः पुनरपि मदनं जीवयामास सद्यः,
सा नित्यं रोग-शान्त्यै प्रभवतु ललिताधीश्वरी चित्-प्रकाशा ।।८।।
हव्यैः कव्यैश्च सर्वैः श्रुति-चय-विहितैः कर्मभिः कर्म - शीला,
ध्यानाद्यैरष्टभिश्च प्रशमित - कलुषा योगिनः पर्ण - भक्षाः ।
यामेवानेक - रूपां प्रति - दिनमवनौ संश्रयन्ते विधिज्ञाः,
सा मे मोहान्धकारं बहु - भव - जनितं नाशयत्वादि - माता ।।९।।
लक्ष्या मूल-त्रिकोणे गुरु - वर - करुणा - लेशतः काम-पीठे,
यस्या विश्वं समस्तं बहु-तर-विततं जायते कुण्डलिन्याः ।
यस्याः शक्ति - प्ररोहादविरलममृतं विन्दते योगि - वृन्दम्,
तां वन्दे नाद - रूपां प्रणव - पद - मयीं प्राणिनां प्राण - दात्रीम् ।।१०।।
ह्रींकाराम्भोधि-लक्ष्मीं हिम - गिरि - तनयामीश्वरीमीश्वराणाम्,
ह्रीं-मन्त्राराध्य-देवीं श्रुति-शत-शिखरैः मृग्यमानां मृगाक्षीम् ।
ह्रीं-मन्त्रान्तैस्त्रि-कूटैः स्थिर-तर-मतिभिर्धार्यमाणां ज्वलन्तीम्,
ह्रीं ह्रीं ह्रींमित्यजस्त्रं हृदय - सरसिजे भावयेऽहम् भवानीम् ।।११।।
सर्वेषां ध्यान-मात्रात् सवितुरुदरगा चोदयन्ती मनीषाम्,
सावित्री तत्-पदार्था शशि-युत-मुकुटा पञ्च-शीर्षा त्रि-नेत्रा।
हस्ताग्रैः शङ्ख-चक्राद्यखिल- जन - परित्राण - दक्षायुधानाम्,
विभ्राणा वृन्दमम्बा विशदयतु मतिं मामकीनां महेशी ।।१२।।
कर्त्री लोकस्य लीला-विलसित - विधिना कारयित्री क्रियाणाम्,
भर्त्री स्वानु-प्रवेशाद् वियदनिल-मुखैः पञ्च-भूतैः स्व-सृष्टैः ।
हर्त्री स्वेनैव धाम्ना पुनरपि विलये काल - रूपं दधाना,
हन्यादामूलमस्मत् - कलुष - भरमुमा भुक्ति - मुक्ति - प्रदात्री ।।१३।।
लक्ष्या या पुण्य-जालैर्गुरु-वर - चरणाम्भोज - सेवा-विशेषात्,
दृश्या स्वान्ते सुधीभिर्दर - दलित - महा - पद्म-कोशेन तुल्ये।

लक्षं जप्त्वाऽपि यस्या मनु-वरमणिमा-सिद्धिमन्तो महान्तः सा,
नित्यं मामकीने हृदय - सरसिजे वासमङ्गी - करोतु ।।१४।।
ह्रीं श्रीमैं-मन्त्र-रूपा हरि-हर-विनुताऽगस्त्य-पत्नी - प्रदिष्टा,
हादिः काद्यर्ण-तत्त्वा सुर-पति-वरदा काम-राज-प्रदिष्टा ।
दुष्टानां दानवानां मद-भर-हरणा दुःख- हन्त्री बुधानाम्,
साम्राज्ञी चक्र - राज्ञी प्र - दिशतु कुशलं मह्यमोङ्कार - रूपा ।।१५।।
श्रीं-मन्त्रार्थ-स्वरूपाश्रित-जन-दुरित-ध्वान्त-हन्त्री शरण्या,
श्रौत-स्मार्त-क्रियाणामविकलं फलदा काल-नेत्रस्य दाराः ।
श्रीचक्रान्तर्निषणा गुह-वर-जननी दुष्ट-हन्त्री वरेण्या,
श्रीमत् - सिंहासनेशीं प्र - दिशतु विपुलां कीर्तिमानन्द - रूपा ।। १६।।
।। श्रीमत्-त्रिपुर-सुन्दरी वेद-सार-स्तवः ।।

॥ श्रीललिता-त्रिपुर-सुन्दरी को नमस्कार॥

श्रीत्रिपुर-सुन्दरी वेद-सार-स्तवः (हिन्दी-रूपान्तर)

कस्तूरी के लेप से उज्ज्वल जिनके गले में निर्मल बड़े-बड़े **मोतियों का हार** कम्पायमान है; **चाँदनी** के शुभ्र प्रकाश-जैसी भासमाना जो **बाल-चन्द्र** से युक्त मुकुट से विभूषिता हैं; **साहित्य-रूपी कमल** की भ्रमरी, **कवि-जनों** द्वारा वन्दिता, **श्वेत वस्त्र**-धारिणी, कर-कमलों से **वीणा** बजाती हुई वे **ब्रह्म-पत्नी सरस्वती देवी** मुझे **सतो-गुण से परिपूर्ण वागैश्वर्य** प्रदान करें ।।१।।

जितेन्द्रिय और भूख-प्यास से रहित **योगियों** द्वारा एकान्त में आनन्द-पूर्वक ध्यान किए जाने से जो उनके चित्त के अन्दर **ज्योति-रेखा**-सी दिखाई देती हैं; संसार के दुःख दूर करने के लिए जिन **हंस-स्वरूपा देवी** का ध्यान साधकों द्वारा किया जाता है, वे **नाद-स्वरूपा त्रिलोक-माता** सदैव मुझे **आनन्द** प्रदान करें ।।२।।

तीनों लोकों की सृष्टि के समय उन पर कृपा-दृष्टि रखनेवाली जो **आदि-शक्ति** तत्काल ही उनमें प्रवेश कर सारे जगत् को अपने गुणों के ऐश्वर्य से व्याप्त कर उनका पालन

करती हैं और संहार के समय आत्म-प्रकाश से उद्-भासिता जो **आदि-शक्ति** समस्त दृश्यमान जगत् को अपने में लीन कर लेती हैं, वे देवी संसार में डालनेवाले मेरे **कर्म-बन्धनों** का नाश कर दें।।३।।

देवताओं द्वारा **स्वर्ण - गिरि** के शिखर पर **तत्त्वात्मक सीढ़ियों** सहित निर्मित और **गुप्त योगिनियों** से युक्त **नौ पुरियों** से विशोभित **चक्रराज** में जिन्हें देखा जा सकता है, **मस्त हाथियों** की जैसी चालवाली वे **राज- राजेश्वरी** कुल-भार से झुकी हुई अपनी **सुन्दरी मन्त्रिणियों** के सहित मुझे **दीर्घायु** प्रदान करें।।४।।

'ह्रीं'-रूपी कमल की भ्रमरी, **हय-ग्रीव** द्वारा वन्दिता, **आदि-अन्त** से रहिता, **'हंसोऽहं'**- मन्त्र की अधिष्ठात्री, **विष्णु** को वर देनेवाली, **हादि**-मन्त्रार्थ-स्वरूपा, बहुत से **असुरों का नाश** करनेवाली, **शङ्कर** की प्रिया, हाथों में **चिन्मुद्रा** और **पाश** धारण करनेवाली **भगवती ललिता** मेरे **महान् दुःखों** को शान्त करें।।५।।

कमल के समान शोभावाले हाथ में **सुन्दर कमल** से सुशोभिता, **समुद्र**-तनया, **सुन्दर हाथियों** से वन्दिता, सदैव **प्रफुल्लित कमल** में निवासिनी, **कमल-नयना**, **स्वर्ण**-जैसी कान्तिवाली, **विष्णु-पत्नी**, **जगन्माता लक्ष्मी** जो सम्पत्तियों की विभूति हैं, वे मुझ पर निरन्तर अपनी **दया-दृष्टि** डाल कर मेरे **दारिद्र्य-दुःख** को शान्त करें।।६।।

सच्चिद्-ब्रह्म-स्वरूपा, **समस्त गुणों से सम्पन्ना, निर्गुणा, निर्विकारा**, **राग-द्वेष** को नष्ट करनेवाली, **सूर्य-चन्द्र**-रूपी नेत्रोंवाली, **राज्यैश्वर्य** देने में निपुणा, **चवालिस त्रिकोणों** से युक्त **चक्र-राज** में सुशोभिता, **अभीष्ट कामनाओं** की पूर्ति करने में कुशला **भगवती कामाक्षी** का मैं अपने **चित्त में ध्यान** करता हूँ।।७।।

भगवान् शङ्कर की नेत्र-ज्योति से **कामदेव** के गर्व के चूर्ण होने पर, **देवों** और **कामदेव** की पत्नी **रति** द्वारा सशङ्कित और अश्रु-पूर्ण हो करुणा-सहित प्रार्थना करने पर जिन **देवी** ने अपनी दृष्टि डालकर **कामदेव** को तुरन्त ही पुनः जीवित कर दिया, वे **चित्-प्रकाशा भगवती ललिता** सदैव मेरे **रोगों** को शान्त करें।।८।।

कर्म-काण्डी लोग श्रुतियों द्वारा निर्दिष्ट देवोपयोगी **हवनीय पदार्थों** और **पितरोपयोगी तर्पणीय द्रव्यों** से; पत्ते मात्र खाकर रहनेवाले निष्पाप **योगि-जन** ध्यानादि अष्ट-योगों से और **विधियों के जाननेवाले** विविध-रूपा जिनका आश्रय प्रति-दिन पृथ्वी पर लेते रहते हैं, वे **आदि-माता** अनेक जन्मों से उत्पन्न मेरे **मोह-रूपी अँधेरे** का नाश करें।।९।।

गुरुदेव की दया मात्र से **मूल त्रिकोणात्मक काम-पीठ** पर जो दिखाई देती हैं; जिनकी **कुण्डलिनी** द्वारा सारा संसार विविध प्रकार से विस्तृत होता है और जिनकी **शक्ति** के

स्फुरण से **योगि-जन** निरन्तर **अमृत-पान** करते हैं; प्राणियों को जीवन देनेवाली, **प्रणव-पद-मयी**, उन **नाद-स्वरूपा भगवती** की मैं **वन्दना** करता हूँ ।।१०।।

हीङ्कार-रूपी सागर की **लक्ष्मी**-स्वरूपा, **हिमालय-पुत्री**, **ईश्वरों की स्वामिनी**, **ह्रीं-मन्त्र द्वारा आराध्या देवी**, सैकड़ों श्रेष्ठ **श्रुतियों** द्वारा अन्वेषिता, मृग-नयनी, स्थिर-बुद्धि साधकों द्वारा अन्त में **'ह्रीं'**-मन्त्रवाले **तीन कूटों** से ध्यान की जानेवाली, **तेजस्विनी भवानी** का **चिन्तन** मैं अपने **हृदय-कमल** में निरन्तर **'ह्रीं ह्रीं ह्रीं'** का जप करते हुए करता हूँ ।।११।।

ध्यान करने मात्र से **सूर्य**-मध्यस्था, **चन्द्र**-युक्त मुकुटवाली, **पञ्च-मुखी**, **त्रिनेत्रा भगवती सावित्री** सभी मनीषियों को उद्बोधित करनेवाली हैं। अपने कर-कमलों में समस्त जनों की रक्षा करने में सक्षम, **शङ्ख, चक्रादि अस्त्रों** को धारण करनेवाली **माता महेशी** मेरी **मति** को विकसित करें।।१२।।

ब्रह्मा द्वारा क्रियाओं को कराती हुई **संसार-लीला** करनेवाली, अपने द्वारा उत्पन्न आकाश, वायु आदि **पञ्च-महा-भूतों** द्वारा प्रवेश कर सारे **विश्व का पालन** करनेवाली और संहार के समय **काल**-रूप धारण कर पुनः अपने तेज से उस सबका हरण करनेवाली, **भोग-मोक्ष-दायिनी उमा** मेरे **पाप-समूह** का समूल नाश करें ।।१३।।

गुरु-देव के चरण-कमलों की विशेष सेवा करने से प्राप्त पुण्यों द्वारा जो दिखाई देती हैं; अपने पापों का शमन कर लेने पर सुधी साधक जिन्हें अपने **अन्तःकरण** में देख पाते हैं; जिनके **श्रेष्ठ मन्त्र** का जप कर महान् साधक **अणिमा-सिद्धि** प्राप्त करते हैं; वे **भगवती** मेरे **हृदय-कमल** में नित्य निवास करना स्वीकार करें ।।१४।।

'ह्रीं श्रीं ऐं'- मन्त्र-स्वरूपा, **विष्णु** और **शिव** द्वारा वन्दिता, **अगस्त्य** की पत्नी **लोपामुद्रा** द्वारा उपदिष्टा, **हादि** और **कादि** तत्त्व-स्वरूपा, **इन्द्र** को वर देनेवाली, **कामराज** द्वारा उपदिष्टा, **दुष्ट दानवों** का गर्व चूर करनेवाली, **सज्जनों** का दुःख दूर करनेवाली, **ॐकार**-स्वरूपा, **चक्र-राज्ञी साम्राज्ञी** मेरा **कल्याण** करें ।।१५।।

'श्रीं'-मन्त्र के अर्थ-स्वरूपवाली, **शरणागत भक्तों** के **पाप-समूह** को नष्ट करनेवाली, **शरण-दायिनी**, **श्रुति** और **स्मृति** द्वारा निर्दिष्ट कर्मों का यथोक्त फल देनेवाली, **श्रीशिव की पत्नी**, **श्रीचक्र के मध्य में विराजमाना, कार्तिकेय की माता, दुष्टों का नाश करनेवाली, श्रेष्ठा, आनन्द-स्वरूपा, श्रीमत्-सिंहासन की ईश्वरी** मुझे **पुष्कल यश** प्रदान करें ।।१६।।

॥ श्रीललिता-त्रिपुर-सुन्दर्यै नमः॥

कल्याण-वृष्टि-स्तवः

कल्याण-वृष्टिभिरिवामृत-पूरिताभिर्लक्ष्मीः स्वयं-वरण-मङ्गल-दीपिकाभिः ।
सेवाभिरम्ब! तव पाद-सरोज-मूले, नाकारि किं मनसि भाग्य-वतां जनानाम् ।।१।।
एतावदेव जननि! स्पृहणीयमास्ते, त्वद्-वन्दनेषु सलिल-स्थगिते च नेत्रे ।
सान्निध्यमुद्यदरुणायुत-सोदरस्य, त्वद्-विग्रहस्य परया सुधयाऽऽप्लुतस्य ।।२।।
ईशत्व-नाम-कलुषाः कति नाम सन्ति, ब्रह्मादयः प्रति-भवं प्रलयाभि-भूताः ।
एकः स एव जगति स्थिर-सिद्धिरास्ते, यः पादयोस्तव सकृत् प्रणतिं करोति ।।३।।
लब्ध्वा सकृत् त्रिपुर-सुन्दरि! तावकीनं, कारुण्य-कन्दलित-कान्ति-भरं कटाक्षम् ।
कन्दर्प-कोटि-सुभगास्त्वयि भक्ति-भाजः, सम्मोहयन्ति तरुणीर्भुवन-त्रयेऽपि ।।४।।
ह्रीङ्कारमेव तव नाम गृणन्ति वेदा, मातस्त्रिकोण-निलये, त्रिपुरे, त्रिनेत्रे !
त्वत्-संस्मृतौ यम-भटादि-भयं विहाय, दीव्यन्ति नन्दन-वने सह लोक-पालैः ।।५।।
हन्तुः पुरामधि-गलं परि-पीयमानः, क्रूरः कथं न भविता गरलस्य वेगः।
नाश्वासनाय यदि मातरिदं तवार्धं, देहस्य शश्वदमृतालुप्त-शीतलस्य ।।६।।
सर्वज्ञतां सदसि वाक्-पटुतां प्रसूते, देवि! त्वदंघ्रि-सरसीरुहयोः प्रणामः ।
किं च स्फुरन्मुकुटमुज्ज्वलमात-पत्रं, द्वे चामरे च महतीं वसुधां ददाति ।।७।।
कल्प-द्रुमैरभिमत - प्रतिपादनेषु, कारुण्य - वारिधिभिरम्ब! भवत् - कटाक्षैः ।
आलोक्य त्रिपुर-सुन्दरि! मामनाथं, त्वय्येव भक्ति-भरित त्वयि बद्ध-तृष्णम् ।।८।।
हन्तेतरेष्वपि मनांसि विधाय चान्ये, भक्तिं वहन्ति किल पामर-दैवतेषु ।
त्वामेव देवि! मनसा समनु-स्मरामि, त्वामेव नौमि शरणं जननि! त्वमेव ।।९।।
लक्ष्येषु सत्स्वपि कटाक्ष-निरीक्षणानामालोकय त्रिपुर-सुन्दरि! मां कदाचित् ।
नूनं मया तु सदृशः करुणैक - पात्रं, जातो जनिष्यति जनो न च जायते वा ।।१०।।
ह्रीं ह्रीमिति प्रति-दिनं जपतां तवाख्यां, किं नाम दुर्लभमिह त्रिपुराधि-वासे !
माला-किरीट-मद-वारण-माननीयां, तां सेवते वसु-मती स्वयमेव लक्ष्मीः ।।११।।
सम्पत्कराणि सकलेन्द्रिय-नन्दनानि, साम्राज्य-दान-निरतानि सरोरुहाक्षि !
त्वद्-वन्दनानि दुरिताहरणोद्यतानि, मामेव मातरनिशं कलयन्तु नान्यम् ।।१२।।
कल्पोप- संहृतिषु कल्पित - ताण्डवस्य, देवस्य खण्ड-परशोः पर - भैरवस्य।
पाशांकुशैक्षव - शरासन - पुष्प - बाणा, सा साक्षिणी विजयते तव मूर्तिरेका ।।१३।।

लग्नं सदा भवतु मातरिदं तवार्धं, तेजः परं बहुल - कुंकुम - पङ्क - शोणम् ।
भास्वत् - किरीटममृतांशु - कलावतंसं, मध्ये त्रिकोण - निलयं परमामृतार्द्रम् ।।१४।।
ह्रीङ्कारमेव तव नाम तदेव रूपं, त्वन्नाम दुर्लभमिह त्रिपुरे! गृणन्ति ।
तत् तेजसा परिणतं वियदादिभूतं, सौख्यं तनोति सरसीरुह-सम्भवादेः ।।१५।।

।। फल-श्रुति ।।

ह्रीङ्कार- त्रय - सम्पुटेन महता मन्त्रेण सन्दीपितम् ।
स्तोत्रं यः प्रति-वासरं तव पुरो मातर्जपेन्मन्त्र-वित् ।।
तस्य क्षोणि-भुजो भवन्ति वशगा लक्ष्मीश्चिर-स्थायिनी ।
वाणी निर्मल-सूक्ति-भार-भरिता जागर्ति दीर्घं वयः ।।

।। श्रीमच्छङ्कर-भगवदाचार्य-कृतिषु कल्याण-वृष्टि-स्तवः ।।

॥ श्रीललिता-त्रिपुर-सुन्दरी को नमस्कार॥

कल्याण-वृष्टि-स्तव (हिन्दी-रूपान्तर)

हे माँ! आपके चरण-कमलों में भक्ति-युक्त लोग जो सेवाएँ करते हैं, उन सेवाओं द्वारा उनके मन में **सभी कामनाओं की पूर्ति** हो जाती है क्योंकि **धूप-दीप-नैवेद्यादि पूजा** स्वयं **लक्ष्मी** की कृपा से सम्पन्न होती है और उससे **कल्याण की वर्षा**-सी होती है और **अमृतत्त्व से युक्त मङ्गल** की प्राप्ति होती है ।।१।।

हे जननि! केवल इतना ही वाञ्छनीय है कि आपकी **वन्दना** द्वारा नेत्र आँसुओं से बन्द हो जाएँ। तभी **उदय-कालीन सूर्य** जैसे बड़े-बड़े नेत्रवाले आपके **अमृत-मय स्वरूप** का सामीप्य लाभ होता है ।।२।।

प्रभुत्व की भावना से दूषित कोई नहीं बचता। **ब्रह्मा** आदि सभी हर युग में लय को प्राप्त हो जाते हैं। **हे जननि!** केवल एक वही स्थिर-सिद्धिवाला रहता है, जो एक बार भी आपके **चरणों में नमन** करता है ।।३।।

हे त्रिपुर-सुन्दरि! आपकी **दया-पूर्ण प्रभा-मयी दृष्टि** को एक बार भी पानेवाले **भक्त कामदेव**-जैसे सुन्दर बनकर तीनों लोकों की युवतियों को आकृष्ट कर लेते हैं ।।४।।

हे त्रिकोण-वासिनि मातः! वेद आपके नाम **'ह्रीं'** का ही उच्चारण करते हैं । उसे भले प्रकार ग्रहण करनेवाले **यम-दूतों** को दूर हटाकर **देवों के नन्दन-वन** में **लोक-पालों** के साथ शोभायमान होते हैं ।।५।।

हे मातः! यदि **भगवान् शङ्कर** के अर्ध-भाग में आपका अमृत-मय शीतल स्वरूप आश्वासन देता हुआ स्थित न होता, तो पुरा-काल में उनके गले तक उतरा विष क्यों न घातक होता ? अर्थात् आपके ही प्रभाव से **नील-कण्ठ** होकर ही **शिव** रह गए, **विष का मारक प्रभाव** नहीं हो पाया ।।६।।

हे देवि! आपके **दोनों चरण-कमलों में प्रणाम** करने से **सर्वज्ञता** और **सभा में बोलने की सक्षमता** प्राप्त होती है । यही नहीं, **दो चँवरों** द्वारा आपके मुकुट की उज्ज्वलता को फैलाने से **विशाल भू-सम्पत्ति** मिलती है ।।७।।

हे त्रिपुर-सुन्दरि! मैं अनाथ आपकी ही भक्ति से पूर्ण हूँ, आप ही पर दृष्टि लगाए हूँ । आप अपनी **कृपा-दृष्टि** द्वारा दया-पूर्वक देखकर **कल्प-वृक्ष** के समान **सभी कामनाओं की पूर्ति** करते हुए मुझे कृतार्थ करें ।।८।।

अन्य लोग अन्य देवताओं को मन में रखकर **भक्ति** का निर्वाह करते हैं, किन्तु **हे देवि!** मैं मन से तुम्हीं को **स्मरण** करता हूँ, तुम्हीं को **नमन** करता हूँ और **हे जननि!** तुम्हीं मेरी **आश्रय** हो ।।९।।

हे त्रिपुर-सुन्दरि! तुम्हारी **दया-दृष्टि** की ओर देखनेवाले लाखों हैं, किन्तु मेरा जैसा दयनीय व्यक्ति न हुआ है, न होगा, अतः किसी प्रकार मुझे कृतार्थ करें ।।१०।।

हे त्रिपुर-वासिनि! जो तुम्हारे नाम **'ह्रीं ह्रीं'** को प्रति क्षण जपता रहता है, उसे इस संसार में कुछ भी दुर्लभ नहीं रहता । वह बड़े-से-बड़े लोगों के गर्व को मिटा देता है और स्वयं **वैभव-शालिनी लक्ष्मी** उसकी सेवा करती हैं ।।११।।

हे कमल-नयने! आपके नेत्र **सम्पत्ति देनेवाले, सभी इन्द्रियों को आनन्दित करनेवाले, राज्यैश्वर्य देने में समर्थ** और **पाप-समूह के विनाशक** हैं । **हे मातः!** वे मुझे सदा कृतार्थ करें ।।१२।।

सृष्टि के संहार के लिए उद्यत **परम भैरव** द्वारा किए जानेवाले **ताण्डव नृत्य** को प्रत्यक्ष देखनेवाला आपका स्वरूप **पाश, अंकुश, इक्षु-धनुष** और **पुष्प-वाणों** से युक्त अद्वितीय है। उसकी जय हो ।।१३।।

हे मातः! परमामृत से आर्द्र और **चन्द्र-कला** से युक्त चमकीले मुकुटवाला आपका यह परम तेजस्वी स्वरूप **त्रिकोणावास के मध्य में लाल कुंकुम से शोभायमान** हो ।।१४।।

हे त्रिपुरे! 'ह्रीं' ही आपका **नाम** है, वही आपका **स्वरूप** है। इस संसार में आपका **नाम** दुर्लभ कहा गया है। आपके ही तेज से **आकाशादि महा-भूत-लक्ष्मी** आदि का सुख प्रदान करते हैं ।।१५।।

।। फल-श्रुति ।।

महा-मन्त्र तीन 'ह्रीं' से सम्पुटित इस **स्तोत्र का पाठ** जो **प्रति-दिन** आपके समीप करता है, **शासक** उसके वश में रहते हैं, **लक्ष्मी** उसके पास सदा रहती हैं, उसकी **वाणी** विशुद्ध सुन्दर उक्तियों से विभूषिता होती है और वह **दीर्घायु** प्राप्त करता है।

॥ श्रीललिता-त्रिपुर-सुन्दर्यै नमः॥

श्रीललिता-पञ्च-रत्न

जय वर चाप, सु-पाश सु-अंकुश, पञ्चक-बाण-करैर्लसिते!।
जय जग-वन्दिनि!, दुष्ट-निकन्दिनि!, आनन्द-कन्दिनि मृदु हसिते!।।
जय शिव-सङ्ग-विहारिणि!, हारिणि दुर्गति!, वारुणि-पान-रते!।
जय ललिते!, जय भण्ड-विखण्डिनि!, श्रीपुर-वासिनि!, देव-नुते!।।

★★★

जय त्रिपुरे!, त्रिपुरारि प्रिये!, त्रिगुणात्मक-रूपिणि त्राण-करे!।
जय त्रि-चरित्र-निवासिनि देवि!, त्रि-कूट-शरीरिणि त्रास-हरे!।।
जय त्रय-काल-त्रिकोण-मयि!, त्रय-ताप-निवारिणि त्र्यक्ष-युते!।
जय ललिते!, जय भण्ड-विखण्डिनि!, श्रीपुर-वासिनि!, देव-नुते!।।

★★★

जय गिरिजे!, गिरि-वंश-ध्वजे!, गिरि-विन्ध्य-निवासिनि, गर्ग-नुते!।।
जय गण-राज-गुहेश्वरि!, गङ्गे!, गङ्गा-धर-गुण-गान-रते!।।
जय गुरु-मण्डल-रूपिणि!, गौतम-गुह्यक-तोषिणि गुप्त-मने!।।
जय ललिते!, जय भण्ड-विखण्डिनि!, श्रीपुर-वासिनि!, देव-नुते!।।

★★★

जय जग-तारिणि!, जन-सुख-कारिणि!, कल्मष-हारिणि, मोद-भरे!।
जय असि-शूल-गदा-सुम-धारिणि!, भक्त-मनो-मन्दिर-विहरे!।।
जय त्रि-विलोचनि!, शोच-विमोचनि!, जय शिव-सङ्ग-सुकेलि-रते!।
जय ललिते!, जय भण्ड-विखण्डिनि!, श्रीपुर-वासिनि!, देव-नुते!।।

★★★

भगवति दुर्ग-विदारिणि!, दुर्गे!, दुर्गति-हारिणि!, दुःख-हरे!।
जय मधु-कैटभ-महिषोन्मूलिनि!, धूम्र-विलोचन-नाश-करे!।।
जय जय शुम्भ-निशुम्भ-विनाशिनि!, रक्त-विमर्द्दिनि!, शूल-धृते!।।
जय ललिते!, जय भण्ड-विखण्डिनि!, श्रीपुर-वासिनि!, देव-नुते!।।

–फौजदार श्रीबलवीरसिंह जी यादव 'वीर', दतिया

श्रीत्रिपुरोपनिषत्

ॐ वाङ् मे मनसि प्रतिष्ठिता, मनो मे वाचि प्रतिष्ठितमाविरावीर्म एधि वेदस्य म आणीस्थः, श्रुतं मे म प्रहासीरनेनाहोऽधीतेनाहोरात्रान्त्संदधामि । ऋतं वदिष्यामि । सत्यं वदिष्यामि । तन्मामवतु । तद्-वक्तारमवतु । अवतु माम् । अवतु वक्तारम् ।।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

ॐ तिस्रः पुरस्त्रि-पथा विश्व-चर्षणी । अत्राकथा अक्षराः सन्निविष्टाः ।
अधिष्ठायैनामजरा पुराणी । महत्तरा महिमा देवतानाम् ।। १ ।।
नव - योनीर्नव - चक्राणि दीधिरे । नवैव योगा नव-योगिन्यश्च ।
नवानां चक्रे अधि - नाथाः स्योना । नव-मुद्रा नव-भद्रा महीनाम् ।। २ ।।
एका सा आसीत् प्रथमा सा । नवासीदासोन - विंशदासोन - त्रिंशत् ।
चत्वारिंशदथ तिस्रः समिधा । उशतीरिव मातरो माऽऽविशन्तु ।। ३ ।।
ऊर्ध्व-ज्वलज्ज्वलन-ज्योतिरग्रे । तमो वै तिरश्चीनमजरं तद्-रजोऽभूत् ।
आनन्दनं मोदनं ज्योतिरिन्दोरेता उ वै मण्डला मण्डयन्ति ।। ४ ।।
तिस्रश्च रेखाः सदनानि भूमेस्त्रि - विष्टपास्त्रि-गुणास्त्रि-प्रकाशाः ।
एतत् पुरं पूरकं पूरकाणामत्र प्रथेते मदनो मदन्या ।। ५ ।।
मदन्तिका मानिनी मङ्गला च । सुभगा च सा सुन्दरी शुद्ध - मत्ता ।
लज्जा मतिस्तुष्टिरिष्टा च पुष्टा लक्ष्मीरुमा ललिता लालपन्ती ।। ६ ।।
इमां विज्ञाय सुधया मदन्ति । परिस्रुता तर्पयन्तः स्व-पीठम् ।
नाकस्य पृष्ठे महतो वसन्ति । परं धाम त्रैपुरं चाविशन्ति ।। ७ ।।
कामो योनिः कमला वज्र - पाणिर्गुहा हसा मातरिश्वाऽभ्रमिन्द्रः ।
पुनर्गुहा सकला मायया च । पुरूच्येषा विश्व - माताऽऽदि - विद्या ।। ८ ।।
षष्ठं सप्तममथ वह्नि - सारथिमस्या । मूल - त्रिकमावेशयन्तः ।
कथ्यं कविं कल्पकं काममीशं । तुष्टुवांसो अमृतत्त्वं भजन्ते ।। ९ ।।
त्रि-विष्टपं त्रि-मुखं विश्व-मातुर्नव-रेखाः स्वर-मध्यं तदीले ।
वृहत्-तिथीर्दश-पञ्चादि-नित्या । सा षोडशी पुर-मध्यं विभर्त्ति ।। १० ।।
द्वा मण्डला द्वा स्तना बिम्बमेकं । मुखं चाधस्त्रीणि गुहा सदनानि ।
कामीं कलां काम्य-रूपां विदित्वा । नरो जायते काम-रूपश्च काम्यः ।। ११ ।।
परिस्रुतं झषमाद्यं पलं च । भक्तानि योनीः सु-परिष्कृतानि ।
निवेदयन् देवतायै महत्यै । स्वात्मीकृत्य सुकृती सिद्धिमेति ।। १२ ।।
सृण्येव सितया विश्व-चर्षणिः । पाशेन प्रति - बध्नात्यभीकान् ।
इषुभिः पञ्चभिर्धनुषा च विध्यत्यादि-शक्तिररुणा विश्व-जन्या ।। १३ ।।

भगः शक्तिर्भगवान् काम ईशः उभा दातारविह सौभगानाम् ।
सम-प्रधानौ सम-सत्त्वौ समोजौ तयोः शक्तिरजरा विश्व-योनिः ।। १४।।
परिस्रुता हविषा भावितेन प्र - सङ्कोचे गलिते वै मनस्कः ।
शर्वः सर्वस्य जगतो विधाता धर्ता हर्ता विश्व-रूपत्वमेति ।। १५।।
इयं महोपनिषत् त्रिपुरायाः यामक्षयं परमे गीर्भिरीट्टे ।
एषर्ग् - यजुः परमेतच्च सामेवायमथर्वेयमन्या च विद्या ॐ।।१६।।
।। ॐ ह्रीं ॐ ह्रीमिति त्रिपुरोपनिषत् ।।

॥ श्रीललिता-त्रिपुर-सुन्दरी को नमस्कार॥

श्री त्रिपुरोपनिषत् (हिन्दी-रूपान्तर)

वाणी मेरे **मन** में प्रतिष्ठित है। मेरा **मन-वाणी** में प्रतिष्ठित है। **वेद** का तत्त्व इन दोनों में स्थित है। मैंने **श्रुति** का जो अध्ययन किया है, उसे मैं अहर्निश मनन करता हूँ। मैं **ऋत** बोलूँगा, **सत्य** बोलूँगा। वह मेरी रक्षा करें, वह वक्ता की रक्षा करें।

तीन पुरों की जो **अधीश्वरी** हैं, जिसके **तीन पन्थ** हैं (**मुक्ति** ५ प्रकार की मानी गई हैं- **१ सालोक्य, २ सामीप्य, ३ सारूप्य ४ सायुज्य** और **५ कैवल्य**। इनमें से **सालोक्य** का एक मार्ग है और **कैवल्य** का एक। शेष तीन-**सामीप्य, सारूप्य** और **सायुज्य** का एक मार्ग है। इस प्रकार कुल मिलाकर **तीन मार्ग** हुए। **सालोक्य का मार्ग** है-अपने आश्रमोक्त कर्मों का **ऊर्ध्व-रेता** रहते हुए अनुष्ठान; मध्यम तीनों का मार्ग है-**प्रतीकोपासना, स्व-स्वाभिमान से उपासना** तथा **अहं-ग्रहोपासना**। **कैवल्य का मार्ग** है-**ब्रह्म-ज्ञान** अथवा **निर्गुणोपासना**), **विश्व** जिसकी **प्रजा** है, जो **अकारादि** १६, **ककारादि** १६ तथा **थकारादि** १६ अक्षर - रूपों में सन्निविष्ट है (यहाँ **'अ'** से आरम्भ करके **'अः'** तक १६ रूप हए, फिर **'क'** से आरम्भ करके **'त'** तक १६ रूप हुएं, फिर **'थ'** से आरम्भ करके **'स'** तक १६ रूप हुए। **'अकथा'** शब्द का यही अभिप्राय है। **'ह'** कार को इस गणना में इसलिए छोड़ दिया जाता है क्योंकि वह **विमर्श-स्वरूप** है। शेष वर्ण संयुक्ताकार होने से उनकी स्वतन्त्र सत्ता नहीं है)। जो **जरा-रहित** है, जो **जन्म - रहित** है, इसी (**त्रि-विन्दु-रूप त्रिपुरा**) का **देवताओं की महत्तरा महिमा** अधिष्ठान करती है, अर्थात् **ब्रह्मादि देवताओं की महिमा** का अधिष्ठान यही **त्रिपुरा** है।।१।।

वह **नौ योनियों** को, **नौ चक्रों** को, **नौ योगों** को, **नौ योगिनियों** को प्रकाशित करती है। वह **'स्योना'** (सुख-हेतु) **नौ चक्र-भूमियों, नौ मुद्राओं** और **नौ भद्राओं** की अधीश्वरी है।।२।।

वह सब **संसार की कारण-भूता** एक ही थी। फिर **विन्दु-चक्र-रूप नव-योन्यात्मक** थी। फिर **१९ प्रकार** की (**नव-योनियों** और **बहिर्दशार** के मेल से) हुई। फिर इन सबको

मिलाकर **उन्तीस प्रकार** की हुई। फिर वही देवी **४३ प्रकार** की हुई। वह कामना करती हुई **माता** की भाँति मेरे शरीर में प्रवेश करें।।३।।

पहले **स्थिति-चक्रोत्तर चक्रों** में **तमो-गुणात्मक अग्नि**-नामक **ज्योतिर्मण्डल** हुआ। (**'ऊर्ध्व-ज्वलत्'** विशेषण उसके अग्नि के ज्वाला-रूप को स्पष्ट करने के लिए दिया गया है।) उसके पश्चात् तिर्य्यक् रूप से फैलनेवाला **सूर्य-ज्योतिर्मण्डल** (रक्त-वर्ण होने के कारण) **रजो-गुण**-प्रधान हुआ। वह **अजर** था। उसके पश्चात् वैषयिक सुखोत्पादक **चन्द्र-ज्योतिर्मण्डल** हुआ। ये तीनों मण्डल (**अग्नि-मण्डल, सूर्य-मण्डल** और **चन्द्र-मण्डल**) **माता** को विभूषित करते हैं अर्थात् उसकी शोभा बढ़ाते हैं।।४।।

(इस ऋचा में **नवें भू-गृहात्मक चक्र** का उपदेश किया गया है।) **भूमि के सदन** की **तीन रेखाएँ** हैं। वे ही **त्रिभुवन - रूपा** हैं। वे **त्रिगुण - रूपा** हैं। **१ अग्नि, २ सूर्य, ३ चन्द्र**-इन तीन वृत्तों के प्रकाश से प्रकाशित हैं। यह **स-परिवार पर-देवता का निवास-स्थान चक्र-भक्तों के मनोरथों का पूरक** है। यह **शिव, विष्णु** आदि के मनोरथों का भी पूरक है। इस **श्री-चक्र** में **कामेश्वर शिव** (मदनः) और **शिव-काम-सुन्दरी** (मदन्या) अपनी किरण-रूपी **अणिमादि**-द्वारा **अनादि**-रूप का विस्तार करती हुई विलास कर रही हैं।।५।।

वह **देवी** पृथक् - पृथक् क्षेत्रों में **मदन्तिका, मानिनी, मङ्गला, सुभगा, सुन्दरी, शुद्ध - मत्ता, लज्जा, मति, तुष्टि, इष्टा, पुष्टा, लक्ष्मी, उमा, ललिता** और **लालपन्ती** नामों से अभिहित हैं। (**पद्म -पुराण** में **देवी - तीर्थों** की गणना करते हुए क्षेत्र - विशेष के आधार पर, **देवी** के कुछ नाम गिनाए हैं। यथा-**प्रयाग** में **ललिता देवी**, **लङ्का** में **मङ्गला**, **त्रिकूट** में **भद्र-सुन्दरी**, **करवीर**-देश में **महा-लक्ष्मी**, **विनायक**-देश में **देवी**, **देव-दास**-वन में **पुष्टि**, **काश्मीर** में **मेधा**, **वत्सेश्वर** में **तुष्टि** इत्यादि)।।६।।

पूर्वोक्त **पर-देवता** की विधि विशेष-पूर्वक जानकर, **दीक्षादि**-पूर्वक उपासना स्वीकार करके, **अपने शरीर से अभिन्न श्रीचक्र** में पीयूषी-कृत परिस्रुत द्रव से तृप्त करते हुए, जो भक्त **इन्द्रियों के विषयों को निर्विकल्प-रूप से भोगते** हैं, वे **महदाकाश** पृष्ठ पर स्थित **त्रिपुरा के धाम में निवास** करते हैं।।७।।

काम **(क)**, योनि **(ए)**, काम-कला **(ई)**, वज्र-पाणि **(ल)**, गुहा **(ह्रीं)**, हस **(ह, स)**, मातरिश्वा **(क)**, अभ्र **(ह)**, इन्द्र **(ल)**, पुनर्गुहा **(ह्रीं)**, सकला **(स, क, ल)**, मायया **(ह्रीं)**-यह **विश्व-माता पुरूची आदि-विद्या** है।।८।।

इस विद्या के **प्रथम तीन अक्षर** निकाल कर उनके स्थान पर छठा **(ह)**, सातवाँ **(स)** और 'वह्नि-सारथि' **(क)** रखकर जप करनेवाले **मोक्ष** के भागी होते हैं। वह **पर-शिव-**

कामना करनेवाला **काम**, विश्व-कल्पना का अधिष्ठान **(कल्पक)**, वेद-प्रणेता **(कवि)** और वेदों-द्वारा ज्ञातव्य **(कथ्य)** है।।९।।

नव रेखाओंवाले संहार-चक्र में **'अः'** स्वर का स्थान मध्य में है। इस **त्रि-मुख चक्र** को **त्रिपुर-सुन्दरी का निवास-स्थान** समझ कर मैं उसकी स्तुति करता हूँ। वह **त्रिपुर-सुन्दरी** पन्द्रह तिथियों के पति **(सूर्य)** की भाँति **श्री-चक्र** के मध्य में **निसर्ग-स्वर** के स्थान पर आसीन है।।१०।।

दो मण्डल, दो स्तन, एक बिम्ब-मुख, तीन भू-गृह (गुहा-सदन अर्थात् भू-पुर), **कामेश्वरात्मक मन्मथ-कला-युक्त कमनीय-स्वरूपा का ध्यान** करता हुआ मनुष्य **काम-देव** के समान सुन्दर हो जाता है।।११।।

मद्य, मांस, मत्स्य और ब्राह्मण, क्षत्रिय आदि विविध जातियों की दृष्टादृष्ट संस्कारों द्वारा परिष्कृत योनियाँ **महा-देवी की सेवा** में निवेदित करके और उसके बाद स्वयं भी सेवन करके भक्त **सिद्धि** को प्राप्त कर लेता है।।१२।।

जो **'अभीक'** हैं अर्थात् इस मार्ग में **लोभ-बुद्धि** से अथवा **भोग-बुद्धि** से प्रवेश करते हैं, उनको प्राणि-मात्र का शुभाशुभ जाननेवाली वह **विश्व-जननी** आदि-शक्ति **तीक्ष्ण श्वेत पाश** से बाँधकर **धनुष** और **पाँच बाणों** से बेधती है।।१३।।

१ ऐश्वर्य, २ धर्म, ३ यश, ४ श्री, ५ ज्ञान और **६ विज्ञान**-इन छहों गुणों के आधार **कामेश्वर** तथा **देवी शक्ति** दोनों इस लोक में **धर्मार्थ-काम**-रूपी विविध फलों के देने वाले हैं; अर्थात् उस **देवी की उपासना** चाहे **स्त्री** - रूप में की जाए या **पुरुष** - रूप में की जाए, दोनों का फल एक जैसा होता है। दोनों - **कामेश्वर** और **कामेश्वरी** - समान रूप से प्रधान हैं क्योंकि **कामेश्वरी** का ध्यान करने में वह **शिव** के अङ्क में आश्रित होने के कारण उसका आधार **शिव** प्रधान हुए और **शक्ति - हीन** स्वयं कुछ करने में असमर्थ होने से **शक्ति** प्रधान हुई। दोनों समान सामर्थ्यवाले हैं। फिर भी इन दोनों समानों में **शक्ति-जरा-रहित** है और **संसार को उत्पन्न करनेवाली** है, अतः वह प्रधान हुई।।१४।।

मन्त्र-संस्कार द्वारा संस्कृत, हवि और मद्य के सेवन द्वारा **मन से सङ्कोच** के दूर हो जाने पर वह उपासक **विश्व-रूपत्व** को प्राप्त हो जाता है। वही **विधाता (ब्रह्मा)**, **धर्त्ता (विष्णु)** और **हर्त्ता (शिव)**-सब कुछ हो जाता है।।१५।।

यह **महोपनिषत्** उस **त्रिपुरा** का है, जिसकी स्तुति **अखण्ड ब्रह्म** भी **अकार, उकार, मकार** द्वारा किया करता है। यह **उपनिषद्-ऋग्वेद, यजुर्वेद, साम-वेद, अथर्व-वेद** तथा **अष्टादश विद्याओं** का सार-भूत है।।१६।।

॥ श्रीललिता-त्रिपुर-सुन्दर्यै नमः॥

श्रीललितोपनिषत्

ॐ परम-कारण-भूता शक्तिः केन नव-चक्र-रूपो देहः। नव-चक्र-शक्ति-मयं श्री-चक्रं। पुरुषार्थाः सागराः। देहो नव-रत्ने द्वीपः। आधार-नवक-मुद्राः शक्तयः। त्वगादि-सप्त-धातुभिरनेकैः संयुक्ताः सङ्कल्पाः कल्प-तरवः। तेजः कल्पकोद्यानम्।

रसनया भासमाना मधुराम्ल-तिक्त-कटु-कषाय-लवण-रसाः षड्रसाः। क्रिया-शक्ति पीठं, कुण्डलिनी ज्ञान-शक्तिः, अहम् इच्छा-शक्तिः। महा-त्रिपुर-सुन्दरी ज्ञाता, होता, ज्ञानमर्घ्यं, ज्ञेयं हविः, ज्ञातृ-ज्ञान-ज्ञेया। नमो भेद-भावनं श्री-चक्र-पूजनम्।

नियति-सहित-शृङ्गारादयो नव-रसाः। अणिमादयः काम-क्रोध-लोभ-मोह-मद-मात्सर्य-पुण्य-पाप-मया ब्राह्म्यादयोऽष्ट-शक्तयः। आधार-नवक-मुद्रा शक्तयः। पृथ्व्यप्-तेजो-वाय्वाकाश-श्रोत्र-त्वक्-चक्षुर्जिह्वा-घ्राण-वाक्-पाणि-पाद-पायूपस्थ मनश्च विकाराः षोडश-शक्तयः। वचनादान-गमन-विसर्गानन्दादानोपादानोपेक्षा - बुद्धयोऽनङ्ग-कुसुमादि-शक्तयोऽष्टौ। अलम्बुषा-कुहू-विश्वोदरी-वरुणा-हस्ति-जिह्वा- यशस्विनी-गान्धारी-पूषा-सरस्वती-इडा-पिङ्गला-सुषुम्ना चेति चतुर्दश-नाड्यः सर्व-संक्षोभिण्यादि चतुर्दशार-देवताः।

प्राणापान-व्यानोदान-समान-नाग-कूर्म-कृकल-देवदत्त-धनञ्जया दश-वायवः सर्व-सिद्धि - प्रदादि बहिर्दशार - देवताः। एतद् - वायु - दशक - संसर्गोपाधि - भेदेन रेचक - पूरक - पोषक - दाहकाल्पावकामृतमिति प्राण - सख्यत्वेन पञ्च-विधोऽस्ति। जठराग्निर्मनुष्याणां मोहको भक्ष्य-भोज्य-लेह्य-चोष्यात्मकं चतुर्विधमन्नं पाचयति। तदा काश-वान् सकलाः सर्वज्ञत्वाद्यन्तर्दशार-देवताः।

शीतोष्ण - सुख - दुःखेच्छा सत्त्व - रजस्तमो - गुणादि वशिन्यादि - शक्तयोऽष्टौ। शब्द - स्पर्श - रूप - रस - गन्धाः पञ्च-तन्मात्राः पञ्च - पुष्प - बाणाः, मनेक्षु-धनुर्वल्यो वाणो, रागः पाशो, द्वेषो अंकुशोऽव्यक्त - महत् - तत्त्वाहङ्कार कामेश्वरी - वज्रेश्वरी-भग-मालिन्योऽन्तस्त्रिकोणाग्र -देवताः।

पञ्च - दश - तिथि - रूपेण कालस्य परिणामावलोकन पञ्च - दश - नित्या शुद्धानुरूपाधि - देवता निरुपाधि - सार्व - देव कामेश्वरी सदाऽऽनन्द - पूर्णाः स्वात्म्यैक्य-रूप-ललिता कामेश्वरी सदाऽऽनन्द-घन-पूर्णा स्वात्मैक्य-रूपा देवता ललितामिति।

साहित्य-करणं सत्त्वं कर्त्तव्यमकर्त्तव्यमिति भावना-मुक्ता उपचारा। अहं त्वमस्ति नास्ति कर्त्तव्याकर्त्तव्यमुपासितव्यानु - पासितव्यमिति विकल्पना। मनो-विलापनं होमः।

बाह्याभ्यन्तर - करणानां रूप - ग्रहण - योग्यतास्तीत्यावाहनं । तस्य बाह्याभ्यन्तर-करणानामेक-रूप-विषय-ग्रहणमासनं। रक्त-शुक्ल-पदैकी-करणं पाद्यं। उज्ज्वलदामोदाऽऽनन्दा सानन्दनमर्घ्यं। स्वछास्वतः शक्तिरित्याचमनं। चिच्चन्द्र-मयी स्मरणं स्नानं। चिदग्नि-स्वरूप परमानन्द-शक्ति-स्मरणं वस्त्रं। प्रत्येकं सप्त-विंशतिधा भिन्नत्वेन इच्छा - क्रियात्मक-ब्रह्म-ग्रन्थि-मयी स-तन्तु ब्रह्म-नाडी ब्रह्म-सूत्रं सव्यातिरिक्त-वस्त्रं। सङ्ग-रहितं स्मरणं विभूषणम्। स्वच्छन्द-परिपूर्ण-स्मरणं गन्धः। समस्त-विषयाणां मनःस्थैर्येणानु - सन्धानं कुसुमं। तेषामेव सर्वदा स्वीकरणं धूपः। पवनाच्छिन्नोर्ध्व- ज्वाला-सच्चिदाह्लादाकाश-देहो दीपः। समस्त-यातायात-वर्जनं नैवेद्यं। अवस्था-त्रयैकीकरणं ताम्बूलं। मूलाधारादाब्रह्म-रन्ध्र-पर्यन्तं ब्रह्मरन्ध्रादामूलाधार-पर्यन्तं गतागत - रूपेण प्रादक्षिण्यं। तुरीयावस्थानं संस्कार - देह - शून्यं प्रमादितावति - मज्जनं बलि - हरणं। सत्त्वमस्ति कर्त्तव्यमकर्त्तव्यमौदासीन्यमात्म - विलापनं होमः। भावना-विषयाणामभेद-भावना तर्पणं। स्वयं तत्-पादुका-निमज्जनं परिपूर्ण-ध्यानम्।

एवं मूर्ति-त्रयं भावनया युक्तो मुक्तो भवति। तस्य देवतात्मैक्य-सिद्धिः चितिकार्याण्यप्रयत्नेन सिध्यन्ति स एव शिव-योगीति कथ्यते।

॥ श्रीललिता-त्रिपुर-सुन्दरी को नमस्कार॥

श्री ललितोपनिषत् (हिन्दी-रूपान्तर)

परम-कारण-भूता शक्ति द्वारा मानव शरीर-**नौ चक्र-रूपात्मक** बना है । **'श्री-चक्र'** इन्हीं **नौ चक्रों** की शक्ति से परि-पूर्ण है। **पुरुषार्थ** ही **सागर**-स्वरूप है और उसमें **शरीर-नौ रत्नों में स्थित द्वीप** के समान है। **मूलाधार** की **नौ मुद्राएँ** ही **शक्तियाँ** हैं । **त्वचा** आदि **सात धातुओं** से युक्त अनेक **सङ्कल्प** ही **कल्प-वृक्ष** हैं। **तेज-सुन्दर उपवन** है।

जिह्वा के द्वारा अनुभूत होनेवाले मधुर, अम्ल, तिक्त, कटु, कषाय और लवणात्मक स्वाद ही **छः रस** हैं। **क्रिया-शक्ति-पीठ** है, **ज्ञान-शक्ति-कुण्डलिनी** है और **इच्छा-शक्ति-**

अहङ्कार है। **ज्ञाता** और **होता-महा-त्रिपुर-सुन्दरी** हैं; **ज्ञान-अर्घ्य** है और **ज्ञेय** ही **हवनीय प्रदार्थ** है। **नमन-पूर्वक भेद-भावना** ही **श्रीचक्र का पूजन** है।

शृङ्गार आदि नौ रस हैं; **अणिमा** आदि, **काम-क्रोध-लोभ-मोह-मद-मात्सर्य-पुण्य** और **पाप** तथा **ब्राह्मी** आदि **आठ शक्तियाँ** हैं; **मूलाधार** की **नौ मुद्राएँ** शक्तियाँ हैं। **पृथ्वी, जल, तेज, वायु** और **आकाश; श्रोत्र, त्वक्, चक्षु, जिह्वा** और **घ्राण, वाक्, पाणि, पाद, पायु, उपस्थ** और **मन के विकार-सोलह शक्तियाँ** हैं। **वचन, आदान, गमन, विसर्ग, आनन्द, आदान-उपादान, उपेक्षा** और **बुद्धि** ही **अनङ्ग-कुसुमादि आठ शक्तियाँ** हैं। **अलम्बुषा, कुहू, विश्वोदरी, वरुणा, हस्ति-जिह्वा, यशस्विनी, गान्धारी, पूषा, सरस्वती, इड़ा, पिङ्गला** और **सुषुम्ना** ये **नाड़ियाँ सर्व-संक्षोभिणी** आदि **चतुर्दशार की देवता** हैं।

प्राण, अपान, व्यान, उदान, समान, नाग, कूर्म, कृकल, देवदत्त और **धनञ्जय**-ये १० वायु **सर्व-सिद्धि-प्रदा** आदि **बहिर्दशार की देवता** हैं। इन्हीं १० वायुओं के सम्पर्क से उपाधि-भेद द्वारा **रेचक, पूरक, पोषक, दाहक** और **अल्पावकामृत** नाम से **प्राण** पाँच प्रकार का होता है। मनुष्यों की **जठराग्नि, भक्ष्य, भोज्य, लेह्य** और **चोष्य**-इन चार प्रकार के अन्नों का पाचन करती है। तभी **सर्वज्ञत्व** आदि **अन्तर्दशार के सभी देवता** प्रकाशमान होते हैं।

शीत, उष्ण, सुख, दुःख, इच्छा, सत्त्व, रज, तमो-गुण ही **वशिनी** आदि **८ शक्तियाँ** हैं। **शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध**-ये **५ तन्मात्राएँ- ५ पुष्प-वाण** हैं, **मन-ईख का धनुष** है, **वृत्तियाँ-बाण** हैं, **राग** (आसक्ति)-**पाश** है और **द्वेष-अंकुश** है। **अव्यक्त, महत्-तत्त्व** और **अहङ्कार** मध्यस्थ **त्रिकोण** की **कामेश्वरी, वज्रेश्वरी** और **भग-मालिनी देवता** हैं।

१५ तिथियों के द्वारा काल के परिणाम को देखनेवाली **१५ नित्याएँ** शुद्ध-स्वरूपा अधि-देवता हैं। उपाधि-रहिता **सर्व-देव-मयी कामेश्वरी** सदा आनन्द-पूर्णा हैं। साधक की अपनी आत्मा में मिली हुई स्थितिवाली **परिपूर्ण आनन्द-स्वरूपा ललिता कामेश्वरी** इष्ट-देवता हैं।

सहित करना-सामञ्जस्य करना ही **सत्त्व** है। **कर्तव्य** या **अकर्तव्य** इस भावना से मुक्त होना ही **उपचार** है। **'मैं'- 'तुम'** है, **कर्तव्य** या **अकर्तव्य** नहीं है, **उपासित** और **न उपासित**-यह **विकल्पना** है। **मन को विलय करना** ही **होम** है।

बाहरी और **भीतरी इन्द्रियों** की रूप - ग्रहण करने की योग्यता ही **आवाहन** है। साधक की **बाहरी** और **भीतरी इन्द्रियों** द्वारा **एक रूप-एक विषय का ग्रहण** करना ही

आसन है। **रक्त** और **शुक्ल**–इन दोनों पदों को एक करना **पाद्य** है। **उज्ज्वल आनन्द** से आनन्दित करना **अर्घ्य** है। **शक्ति की स्वच्छता–आचमन** है। **चिच्चन्द्र–मयी का स्मरण–स्नान** है। **चिदग्नि–स्वरूपा परमानन्द–शक्ति का स्मरण–वस्त्र** है। **इच्छा–क्रियात्मक ब्रह्म–ग्रन्थि–मयी ब्रह्म–नाड़ी– ब्रह्म–सूत्र** है। वही २७ प्रकार से भिन्न होकर **अतिरिक्त वस्त्र** है। **सङ्ग–रहित स्मरण** ही **आभूषण** है। **स्वच्छन्द परिपूर्ण स्मरण–गन्ध** है। **मन की स्थिरता द्वारा सभी विषयों का अनुसन्धान** करना–**पुष्प** है। **उन विषयों को सदा स्वीकार** करना–**धूप** है। पवन द्वारा उठी हुई **सच्चिदानन्द की ज्योति** ही **दीपक** है। सारे **आवागमन का त्याग–नैवेद्य** है। **तीनों अवस्थाओं को एक करना–ताम्बूल** है। **मूलाधार** से **ब्रह्म–रन्ध्र** तक और **ब्रह्म–रन्ध्र** से **मूलाधार** तक आना–जाना ही **प्रदक्षिणा** है। **तुरीय स्थिति** को प्राप्त **संस्कार–देह** से रहित होकर **परमानन्द** में डूबना **बलि** देना है। **कर्तव्य–अकर्तव्य की उदासीनता** से **आत्म–लय** कर मात्र **सत्त्व** ही है, यह भावना करना **होम** है। भावना के विषयों में **अभेद का विचार** रखना ही **तर्पण** है। अपने को **श्रीपादुका** में मग्न करना ही **पूर्ण ध्यान** है।

इस प्रकार **तीनों स्वरूपों की भावना** से युक्त होनेवाला मुक्त हो जाता है। उसे **देवता** और **आत्मा** के ऐक्य की सिद्धि बिना प्रयास के ही प्राप्त हो जाती है और वह **शिव–योगी** कहलाता है।

भगवती ललिता की स्तुति

पदाब्जों में तेरे भगवति! करूँ एक विनती,
अपर्णे! हो पूर्ण द्रुत वह दया से तव शिवे!
बसे तेरी मूर्ती मम हृदय में मन्त्र मुख में,
चरितों की गाथा सतत प्रविशे कर्ण–पुट में।।
तू ही काली तारा गल ललिता हारा जलधिजा,
शुभाङ्गी मातङ्गी अपिच भुवना षोडशि! शिवे!
कहावे तू धूमा जननि! बगला भैरव–प्रिया,
तू ही छिन्न–ग्रीवा सकल सुर 'योगीन्द्र' विनुते।।

–'कुल–मार्तण्ड' पं० योगीन्द्रकृष्ण दौर्गादत्ति शास्त्री

॥ श्रीललिता-त्रिपुर-सुन्दर्यै नमः॥

सिद्धि-यामलोक्त श्रीत्रिपुर-सुन्दरी स्तोत्रम्

श्वेत-पद्मासनारूढां, शुद्ध-स्फटिक-सन्निभाम्।
वन्दे वाग्-देवतां ध्यात्वा, देवीं त्रिपुर-सुन्दरीम् ।।१।।
शैलाधि - राज - तनयां, शङ्कर - प्रिय - वल्लभाम्।
तरुणेन्दु-निभां वन्दे, देवीं त्रिपुर-सुन्दरीम् ।।२।।
सर्व-भूत-मनोरम्यां, सर्व-भूतेषु संस्थिताम्।
सर्व-सम्पत्करीं वन्दे, देवीं त्रिपुर-सुन्दरीम् ।।३।।
पद्मालयां पद्म-हस्तां, पद्म-सम्भव-सेविताम्।
पद्म-राग-निभां वन्दे, देवीं त्रिपुर-सुन्दरीम् ।।४।।
पञ्च-वाण-धनुर्बाण-पाशांकुश-धरां शुभाम्।
पञ्च-ब्रह्म-मयीं वन्दे, देवीं त्रिपुर-सुन्दरीम् ।।५।।

श्रीत्रिपुर-सुन्दरी देवी का ध्यान करके **श्वेत पद्म** (कमल) के आसन पर विराजमान **शुद्ध स्फटिक-मणि** के समान प्रभावाली **वाग्-देवता** की वन्दना करता हूँ।।१।। **शैलाधिराज** (पर्वत-राज हिमालय) की पुत्री और **श्रीशङ्कर जी** की प्रिय वल्लभा, जो **तरुण चन्द्रमा** के समान प्रभावान् हैं, उन **देवी त्रिपुर-सुन्दरी** की मैं वन्दना करता हूँ।।२।। जो सभी भूतों (**मानव, दिव्य, अचेतन** आदि समस्त जीव-धारी) के लिए **अत्यन्त मनोरम** (मन को हरनेवाली, सुन्दर, सुघड़) हैं, जो समस्त भूतों में निवास करती हैं; जो **सभी प्रकार की सम्पत्ति** (भौतिक और आध्यात्मिक) करनेवाली (देनेवाली) हैं, उन **देवी त्रिपुर-सुन्दरी** की वन्दना करता हूँ।।३।। जिनका आलय (घर) **पद्म** है, जो हाथों में **कमल** धारण करती हैं, जो **पद्म-सम्भव** (**ब्रह्माजी**) से सेवित हैं (पूजी जाती हैं), उन **पद्म-राग मणि** (लाल-माणिक्य) के समान वर्णवाली **देवी त्रिपुर-सुन्दरी** की वन्दना करता हूँ।।४।। **पञ्च-वाण** (१ द्रावण, २ क्षोभण, ३ वशीकरण, ४ आकर्षण, ५ सम्मोहन), **धनुष, वाण, पाश** और **अंकुश** धारण करनेवाली, कान्ति-मयी, **पञ्च-ब्रह्म-मयी** (१ ब्रह्मा, २ विष्णु, ३ रुद्र, ४ ईश्वर और ५ सदा-शिव-मयी) **देवी त्रिपुर-सुन्दरी** की वन्दना करता हूँ।।५।।

षट् - पुण्डरीक - निलयां, षडानन - सुपूजिताम्।
षट् - कोणान्तः - स्थितां वन्दे, देवीं त्रिपुर - सुन्दरीम्।।६।।
हरार्ध - भाग - निलयामम्बामद्रि - सुतां मृडाम्।
हरि - प्रियाऽनुजां वन्दे, देवीं त्रिपुर - सुन्दरीम्।।७।।
अष्टैश्वर्य - प्रदामम्बामष्ट - दिक् - पाल - सेविताम्।
अष्ट - मूर्ति - मयीं वन्दे, देवीं त्रिपुर - सुन्दरीम्।।८।।
नव - माणिक्य - मुकुटां, नव - नाथ - सुपूजिताम्।
नव - यौवन - शोभाढ्यां, वन्दे त्रिपुर - सुन्दरीम्।।९।।

काञ्ची-वास-मनोरम्यां, काञ्ची-दाम-विभूषिताम्।
काञ्ची-पुरीश्वरीं वन्दे, देवीं त्रिपुर-सुन्दरीम् ।।१०।।

षट्-पुण्डरीक (छः दलों का कमल अर्थात् **स्वाधिष्ठान** अथवा षट्-कमल अर्थात् **षट्-चक्र** यथा-१ मूलाधार, २ स्वाधिष्ठान, ३ मणिपूर, ४ अनाहत, ५ विशुद्ध और ६ आज्ञा-चक्र) में निवास करनेवाली, **षडानन** (कुमार कार्तिकेय) से पूजित और षट्-कोण के अन्तस् (भीतर) में स्थित **देवी त्रिपुर-सुन्दरी** की वन्दना करता हूँ।।६।। **हर** (शिव) के आधे भाग में निवास करनेवाली **मृडानी** (पार्वती), जो **अद्रिसुता** (पर्वत-राज की पुत्री) हैं, **हरि-प्रिया** (लक्ष्मी) की अनुजा हैं, उन **जगदम्बा देवी त्रिपुर-सुन्दरी** की वन्दना करता हूँ।।७।। **आठ प्रकार के ऐश्वर्य** प्रदान करनेवाली **अम्बिका**, जिनकी सेवा **आठों दिक्-पाल** (१ इन्द्र, २ अग्नि, ३ यम, ४ निऋति, ५ वरुण, ६ वायु, ७ कुबेर तथा ८ ईशान) करते हैं, जो **अष्ट-मूर्ति-मयी** (१ शैली, २ दारु - मयी, ३ लोही, ४ लेप्या, ५ लेख्या, ६ सैकती अर्थात् रेत से निर्मित, ७ मनो-मयी और ८ मणि-मयी) हैं, उन **देवी त्रिपुर-सुन्दरी** की वन्दना करता हूँ।।८।। **नवीन (उज्ज्वल) माणिक्य-रत्नों से बना मुकुट** धारण करनेवाली, **नव - नाथों** (१ प्रकाशानन्द-नाथ, २ विमर्शानन्द-नाथ, ३ आनन्दानन्द-नाथ, ४ ज्ञानानन्द-नाथ, ५ सत्यानन्द-नाथ, ६ पूर्णानन्द-नाथ, ७ स्वभावानन्द-नाथ, ८ प्रतिभानन्द-नाथ, और ९ सुभगानन्द-नाथ) के द्वारा भली प्रकार से पूजी गई, नव-यौवन से शोभिता **श्री-त्रिपुर-सुन्दरी** की वन्दना करता हूँ।।९।। जिन्हें **काञ्ची-पुरी** में रहना अत्यन्त प्रिय है, जो **सुन्दर पुष्पों से निर्मित करधनी** से विभूषिता हैं अर्थात् धारण किए हैं और जो **काञ्ची-पुरी** की ईश्वरी(स्वामिनी) हैं, उन **देवी त्रिपुर-सुन्दरी** की वन्दना करता हूँ ।।१०।।

।। फल-श्रुति ।।

इति ते कथितं देवि!, सुन्दरी-प्रीति-दायकं। महा-निशा-काले पाठ-मात्रेण सिद्धिर्भवति।।१।।
एकादश-सहस्त्राणि, संख्या चास्य पुरस्क्रिया। ततः काम्यार्थे प्रयोगान्, साधयेत् साधकोत्तमः।।२।।
मारणं मोहनं वश्यं, स्तम्भनोच्चाटनादिकं। पाठ-मात्रेण सिद्ध्यन्ति, सत्यं सत्यं न संशयः।।३।।
निष्कामो यः पठेन्नित्यं, पञ्च-तत्त्व-समन्वितम्। धर्मार्थ-काम-मोक्षं च, लभते नात्र संशय।।
इह-लोके सुखं भुक्त्वा, चान्ते देवी-लोके वसेत् ।।४।।

।। सिद्धि-यामले श्रीत्रिपुर-सुन्दरी-स्तोत्रम् ।।

हे देवि, यह **त्रिपुर - सुन्दरी** की प्रीति (कृपा) देनेवाला स्तोत्र तुमसे कहा है। **महा-निशा-काल** में इसके पाठ-मात्र से सिद्धि मिलती है।।१।। **ग्यारह हजार** इसके पुरश्चरण की संख्या है अर्थात् **ग्यारह हजार पाठ** से इसका पुरश्चरण होता है, तब उत्तम साधक **काम्य प्रयोग** करे।।२।। **मारण, मोहन, वशीकरण, स्तम्भन, उच्चाटन** आदि केवल इसके पाठ-मात्र से सिद्ध हो जाते हैं। यह सत्य है, सत्य है, इसमें संशय नहीं ।।३।। जो **निष्काम** (केवल देवता की प्रीति चाहनेवाला) होकर **पञ्च- तत्त्वों** (१ मद्य, २ मांस, ३ मत्स्य, ४ मुद्रा और ५ मैथुन) सहित नित्य पाठ करता है, वह **धर्म, अर्थ, काम** और **मोक्ष** को पाता है, इसमें संशय नहीं। इस लोक में सुखों को भोगकर वह अन्त में **देवी-लोक** में निवास करता है।।१४।।

श्रीत्रिपुर-सुन्दरी सान्निध्य-स्तवः

क कल्प-भानु समान-भास्वर-धाम-लोचन- गोचरम्,
किं किमित्यति-विस्मिते मयि पश्यतीह समागताम् ।
काल-कुन्तल-भार-निर्जित-नील-मेघ-कुलां पुरः,
चक्र - राज - निवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमवलोकये ।। १।।

ए एक - दन्त - षडाननादिभिरावृतां जगदीश्वरीम्,
एनसां परि-पन्थिनीमहमेक-भक्ति-मदर्चिताम् ।
एक-हीन-शतेषु जन्मसु सञ्चितात् सुकृतादिमाम्,
चक्र - राज - निवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमवलोकये ।। २।।

ई ईदृशीति च वेद - कुन्तल-वाग्भिरप्य निरूपिताम्,
ईश -पङ्कज-नाभ-सृष्टि-कृदादि-वन्द्य - पदाम्बुजाम्।
ईक्षणान्त - निरीक्षणेन मदिष्टदां पुरतोऽधुना,
चक्र - राज - निवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमवलोकये ।। ३।।

ल लक्षणोज्ज्वल - हार-शोभि-पयोधर-द्वय-कैतवात्,
लीलयैव दया - रस-स्त्रवदुज्ज्वलत् - कलशान्विताम्।
लाक्षयाङ्कित - पादपाति - मिलिन्द - सन्ततिमग्रतः,
चक्र - राज - निवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमवलोकये ।। ४।।

ह्रीं ह्रीमिति प्रति - वासरं जप - सुस्थिरोऽहमुदारया,
योगि - मार्ग - निरूढयैक्य-सुभावनां गतया धिया ।
वत्स! हर्षमवाप्त - वत्यहमित्युदार - गिरं पुरः,
चक्र - राज - निवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमवलोकये ।। ५।।

ह हंस - वृन्दमलक्तकारुण - पाद -पङ्कज - नूपुर–
क्वाण - मोहितमादरादनु - धावितं मृदु शृण्वतीम्।
हंस - मन्त्र-महार्थ-तत्त्व-मयीं पुरो मम भाग्यतः,
चक्र - राज - निवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमवलोकये ।। ६।।

स सङ्गतं जलमभ्र-वृन्द-समुद्भवं धरणी - धराद्,
धारया वहदञ्जसा भ्रममाप्य सैकत - निर्गतम्।
एवमादि - महेन्द्र-जाल-सुकोविदां पुरतोऽधुना,
चक्र - राज - निवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमवलोकये ।। ७।।

क कम्बु-सुन्दर-कन्धरां कच-वृन्द-निर्जित-वारिदाम्,
कण्ठ-देश-लसत्-सुमङ्गल-हेम-सूत्र - विराजिताम्।
कादि - मन्त्रमुपासतां सकलेष्टदां मम सन्निधौ,
चक्र - राज - निवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमहमाश्रये ।। ८।।

ह हस्त-पद्म-लसत्-त्रिखण्ड-सुमुद्रिकामहमद्रिजाम्,
हस्ति-कृत्ति-परीत-कार्मुक-वल्लरी-सम-चिल्लिकाम् ।
हर्यज-स्तुत-वैभवां भव-कामिनीं मम भाग्यतः,
चक्र - राज - निवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमहमाश्रये ।। ९।।

ल लक्षणोल्लसदङ्ग-कान्ति-झरी-निराकृत-विद्युतम्,
लास्य-लोल-सुवर्ण-कुण्डल-मण्डितां जगदम्बिकाम् ।
लीलयाऽखिल-सृष्टि-पालन-कर्षणादि-वितन्वतीम्,
चक्र - राज - निवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमहमाश्रये ।। १०।।

ह्रीं ह्रींमिति त्रिपुरा-मनु-स्थिर-चेतसा बहुधाऽर्चिताम्,
हादि - मन्त्र-महाम्बु-जात-विराजमान-सुहंसिकाम् ।
हेम-कुम्भ-घन-स्तनां चल-लोल-मौक्तिक-भूषणाम्,
चक्र - राज - निवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमहमाश्रये ।। ११।।

स सर्व-लोक - नमस्कृतां जित-शर्वरी-रमणाननाम्,
शर्व-देव-मनः-प्रियां नव-यौवनोन्मद-गर्विताम् ।
सर्व-मङ्गल-विग्रहां मम पूर्व-जन्म-तपो-बलात्,
चक्र - राज - निवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमहमाश्रये ।। १२।।

क कन्द-मूल-फलाशिभिर्बहु - योगिभिश्च गवेषिताम्,
कुन्द - सुन्दर-दन्त-पंक्ति - विराजितामपराजिताम्।
कन्दमागम-वीरुधां सुर-सुन्दरीभिरिहागताम्,
चक्र - राज - निवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमहमाश्रये ।। १३।।

ल ल-त्रयाङ्कित-मन्त्र-राट्-समलंकृतां जगदम्बिकाम्,
लोल-नील-सुकुन्तलावलि-निर्जितालि-कदम्बकाम् ।
लोभ-मोह-विदारणीं करुणा-मयीमरुणां शिवाम्,
चक्र - राज - निवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमहमाश्रये ।। १४।।

ह्रीं ह्रीं - पराख्य - महा - मनोरधि-देवतां भुवनेश्वरीम्,
हृत्-सरोज-निवासिनीं हर-वल्लभां बहु-रूपिणीम् ।
हार-कुण्डल - नूपुरादिभिरन्वितां पुरतोऽधुना,
चक्र - राज - निवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमहमाश्रये ।। १५।।

श्रीं श्रीं सु-पञ्च-दशाक्षरीमपि षोडशाक्षर-रूपिणीम्,
श्री-सुधार्णव-मध्य-शोभि-सरोज-कानन-चन्द्रिकाम् ।
श्रीगुह-स्तुत-वैभवां पर-देवतां मम सन्निधौ,
चक्र - राज - निवासिनीं त्रिपुरेश्वरीमहमाश्रये ।। १६।।

श्रीत्रिपुर-सुन्दरी विजय-स्तवः

क

कल्पान्तोदित-चण्ड-भानु-विलसद्-देह-प्रभा-मण्डिता,
कालाम्भोद-समान-कुन्तल-भरा कारुण्य-वरां निधिः ।
काद्यर्णाङ्कित-मन्त्र-राज-विलसत्-कूट-त्रयोपासिता,
श्रीचक्राधि-निवासिनी विजयते श्रीराज-राजेश्वरी ।। १।।

ए

एतत्-प्राभव-शालिनीति निगमैरद्याप्यनालोचिता,
हेमाम्भोज-मुखी चलत्-कुवलय-प्रस्पर्धमानेक्षणा ।
एणाङ्कांश-समान-फाल-फलक-प्रोल्लासि-कस्तूरिका,
श्रीचक्राधि - निवासिनी विजयते श्रीराज-राजेश्वरी ।। २।।

ई

ईषत्-फुल्ल-कदम्ब-कुण्डला महा-लावण्य-गर्वापहा,
स्निग्ध-स्वच्छ-सुदन्त-कान्ति-विलसन्मन्द-स्मिताऽलंकृता।
ईशित्वाद्यखिलेष्ट-सिद्धि-फलदा भक्त्या नतानां सदा,
श्रीचक्राधि-निवासिनी विजयते श्रीराज-राजेश्वरी ।। ३।।

ल

लक्ष्यालक्ष्यावलग्न-देश-विलसद्-रोमावली-वल्लरी,
वृत्त-स्निग्ध-फल-द्वय-भ्रम-करोत्तुङ्ग-स्तनी सुन्दरी ।
रक्ताशोक-शुभ-प्रपाटल-दुकूलाच्छादिताङ्गी मुदा,
श्रीचक्राधि - निवासिनी विजयते श्रीराज-राजेश्वरी ।। ४।।

ह्रीं

ह्रीङ्कारी सुर-वाहिनी जल-गभीरावर्तनाभिर्घन—
श्रोणी-मण्डल-भार-मन्द गमना-काञ्ची-कलापोज्ज्वला ।
शुण्डादण्ड-सुवर्ण-वर्ण-कदली-काण्डोपमोरु-द्वयी,
श्रीचक्राधि-निवासिनी विजयते श्रीराज-राजेश्वरी ।। ५।।

ह

हस्त-प्रोज्ज्वलदिक्षु-कार्मुक-लसत्-पुष्पेषु-पाशांकुशा,
ह्याद्यर्णाङ्कित - मन्त्र - राज-निलया हारादिभिर्भूषिता ।
हस्त-प्रान्त-रणत्-सुवर्ण-वलया हर्यक्ष-सम्पूजिता,
श्रीचक्राधि-निवासिनी विजयते श्रीराज-राजेश्वरी ।। ६।।

स

संरक्ताम्बुज - पाद - युग्म - विलसन्मञ्जु-क्वणन्नूपुरा,
संसारार्णव - तारणैक - तरणिर्लावण्य - वारां निधिः ।
लीला-लोल-तमं शुकं मधुरया संलालयन्ती गिरा,
श्रीचक्राधि-निवासिनी विजयते श्रीराज-राजेश्वरी ।। ७।।

क

कल्याणी करुणा-सार्द्र-हृदया कल्याण-सन्दायिनी,
काद्यर्णाङ्कित-मन्त्र-लक्षित-तनुस्तन्वी तमो-नाशिनी ।
कामेशाङ्क-विलासिनी कल-गिरामावास-भूमिः शिवा,
श्रीचक्राधि-निवासिनी विजयते श्रीराज-राजेश्वरी ।। ८।।

ह हन्तुं दानव-पुङ्गवं रण-भुवि प्रोच्चण्ड-भण्डाभिधम्,
हर्यक्षाद्यमरार्थिता भगवती दिव्यां तनूमाश्रिता ।
श्रीमाता ललितेत्यचिन्त्य-विभवैर्नाम्नां सहस्रैः स्तुता,
श्रीचक्राधि-निवासिनी विजयते श्रीराज-राजेश्वरी ।। ९।।

ल लक्ष्मीर्वाग-गजादिभिर्बहु-विधैः रूपैः स्तुताऽपि स्वयम्,
नी-रूपा गुण-वर्जिता त्रि-जगतां माता च चिद्-रूपिणी ।
भक्तानुग्रह - कारणेन ललितं रूपं समासादिता,
श्रीचक्राधि-निवासिनी विजयते श्रीराज-राजेश्वरी ।। १०।।

ह्रीं ह्रीङ्कारैक - परायणार्त - जनता संरक्षणे दीक्षिता,
हार्दसं तमसं व्यपोहित-मलं भूष्णुर्हर - प्रेयसी ।
हत्यादि-प्रकटाघ-सङ्घ -दलने दक्षा च दाक्षायणी,
श्रीचक्राधि-निवासिनी विजयते श्रीराज-राजेश्वरी ।। ११।।

स सर्वानन्द - मयी समस्त - जगतामानन्द - सन्दायिनी,
सर्वोत्तुङ्ग-सुवर्ण-शैल-निलया सा सार-साक्षी सती ।
सर्वैर्योगि - चयैः सदैव विचिता साम्राज्य-दान-क्षमा,
श्रीचक्राधि-निवासिनी विजयते श्रीराज-राजेश्वरी ।। १२।।

क कन्या-रूप-धरा गलाब्ज-विलसन्मुक्ता-लताऽलंकृता,
कादि - क्षान्तमनु -प्रविष्ट-हृदया कल्याण-शीलान्विता ।
कल्पान्तोद्भट-ताण्डव-प्रमुदिता श्रीकाम-जित्-साक्षिणी,
श्रीचक्राधि-निवासिनी विजयते श्रीराज-राजेश्वरी ।। १३।।

ल लक्ष्या भक्ति-रसार्द्र-हृत्-सरसिजे सद्भिः सदाऽऽराधिता,
सान्द्रानन्द-मयी सुधाकर-कला-खण्डोज्ज्वलन्मौलिका ।
शर्वाणी शरणागताऽऽर्ति-शमिनी सच्चिन्मयी सर्वदा,
श्रीचक्राधि-निवासिनी विजयते श्रीराज-राजेश्वरी ।। १४।।

ह्रीं ह्रीङ्कार-त्रय-सम्पुटाऽऽति-महता मन्त्रेण सम्पूजिता,
होत्री चन्द्र-समीरणाऽग्नि-जल-भू-भास्वन्नभो-रूपिणी ।
हंसः सोहमिति प्रकृष्ट - धिषणैराराधिता योगिभिः,
श्रीचक्राधि-निवासिनी विजयते श्रीराज-राजेश्वरी ।। १५।।

श्रीं श्रीङ्काराम्बुज - हंसिकाऽऽश्रित-जन-क्षेमङ्करी शङ्करी,
शृङ्गारैक - रसाकरस्य मदनस्योज्जीविका - वल्लरी ।
श्रीकामेशरहः-सखी च ललिता श्रीमद्-गुहाऽऽराधिता,
श्रीचक्राधि-निवासिनी विजयते श्रीराज-राजेश्वरी ।। १६।।

श्रीत्रिपुर-सुन्दरी चक्र-राज-स्तोत्रम्

क

कर्तुं देवि! जगद्-विलास-विधिना सृष्टेन ते मायया,
सर्वानन्द-मयेन मध्य-विलसच्छ्री-विन्दुनाऽलंकृतम् ।
श्रीमद्-सद्-गुरु-पूज्य-पाद-करुणा-संवेद्य-तत्त्वात्मकम्,
श्री-चक्रं शरणं व्रजामि सततं सर्वेष्ट-सिद्धि-प्रदम् ।। १।।

ए

एकस्मिन्नणिमादिभिर्विलसितं भूमी-गृहे सिद्धिभिः,
वाह्याद्याभिरुपाश्रितं च दशभिर्मुद्राभिरुद्भासितम् ।
चक्रेश्या प्रकटेड्यया त्रिपुरया त्रैलोक्य-सम्मोहनम्,
श्री-चक्रं शरणं व्रजामि सततं सर्वेष्ट-सिद्धि-प्रदम् ।। २।।

ई

ईड्याभिर्नव-विद्रुम -च्छवि-समाभिख्याभिरङ्गी-कृतम्,
कामाकर्षिणी कादिभिः स्वर-दले गुप्ताभिधाभिः सदा।
सर्वाशा-परि-पूरके परि-लसद्-देव्या पुरेश्या युतम्,
श्री-चक्रं शरणं व्रजामि सततं सर्वेष्ट-सिद्धि-प्रदम् ।। ३।।

ल

लब्ध-प्रोज्ज्वल-यौवनाभिरभितोऽनङ्ग-प्रसूनादिभिः,
सेव्यं गुप्त-तराभिरष्ट-कमले संक्षोभकाख्ये सदा ।
चक्रेश्या पुर-सुन्दरीति जगति प्रख्यातयासङ्गतम्,
श्री-चक्रं शरणं व्रजामि सततं सर्वेष्ट-सिद्धि-प्रदम् ।। ४।।

ह्रीं

ह्रीङ्काराङ्कित-मन्त्र-राज-निलयं श्रीसर्व-संक्षोभिणी,
मुख्याभिश्चल-कुन्तलाभिरुषितं मन्वस्त्र-चक्रे शुभे ।
यत्र श्री-पुर-वासिनी विजयते श्री-सर्व-सौभाग्यदे,
श्री-चक्रं शरणं व्रजामि सततं सर्वेष्ट-सिद्धि-प्रदम् ।। ५।।

ह

हस्ते पाश-गदादि-शस्त्र-निचयं दीप्तं वहन्तीभिः,
उत्तीर्णाख्याभिरुपास्य पाति शुभदे सर्वार्थ-सिद्धि-प्रदे ।
चक्रे बाह्य-दशारके विलसितं देव्या पूर-श्र्याख्यया,
श्री-चक्रं शरणं व्रजामि सततं सर्वेष्ट-सिद्धि-प्रदम् ।। ६।।

स

सर्वज्ञादिभिरिन्दु-कान्ति-धवला कालाभिरारक्षिते,
चक्रेऽन्तर्दश-कोणकेऽति-विमले नाम्ना च रक्षा-करे ।
यत्र श्रीत्रिपुर-मालिनी विजयते नित्यं निगर्भा स्तुता,
श्री-चक्रं शरणं व्रजामि सततं सर्वेष्ट-सिद्धि-प्रदम् ।। ७।।

क

कर्तुं मूकमनर्गल-स्त्रवदति-द्राक्षादि-वाग्-वैभवम्,
दक्षाभिर्वशिनी-मुखाभिरभितो वाग्-देवताभिर्युताम् ।
अष्टारे पुर-सिद्धया विलसितं रोग-प्रणाशे शुभे,
श्री-चक्रं शरणं व्रजामि सततं सर्वेष्ट-सिद्धि-प्रदम् ।। ८।।

ह

हन्तुं दानव-सङ्घमाहव भुवि स्वेच्छा समाकल्पितैः,
शस्त्रैरस्त्र-चयैश्च चाप-निवहैरत्युग्र-तेजो-भरैः ।
आर्त-त्राण-परायणैररि-कुल-प्रध्वंसिभिः संवृतम्,
श्री-चक्रं शरणं व्रजामि सततं सर्वेष्ट-सिद्धि-प्रदम् ।। ९।।

ल

लक्ष्मी-वाग-गजादिभिः कर-लसत्-पाशासि-घण्टादिभिः,
कामेश्यादिभिरावृतं शुभ-करं श्री-सर्व-सिद्धि-प्रदम् ।
चक्रेशी च पुराम्बिका विजयते यत्र त्रिकोणे मुदा,
श्री-चक्रं शरणं व्रजामि सततं सर्वेष्ट-सिद्धि-प्रदम् ।। १०।।

ह्रीं

ह्रीङ्कारं परमं जपद्भिरनिशं मित्रेश-नाथादिभिः,
दिव्यौघैर्मनुजौघ-सिद्ध-निवहैः सारूप्य-मुक्तिं गतैः ।
नाना-मन्त्र-रहस्य-विद्भिरखिलैरन्वासितं योगिभिः,
श्री-चक्रं शरणं व्रजामि सततं सर्वेष्ट-सिद्धि-प्रदम् ।। ११।।

स

सर्वोत्कृष्ट - वपुर्धराभिरभितो देवी समाभिर्जगत्,
संरक्षार्थमुप - गताऽभिरसकृन्नित्याभिधाभिर्मुदा ।
कामेश्यादिभिराज्ञयैव ललिता - देव्याः समुद्भासितम्,
श्री-चक्रं शरणं व्रजामि सततं सर्वेष्ट-सिद्धि-प्रदम् ।। १२।।

क

कर्तुं श्रीललिताङ्ग-रक्षण-विधिं लावण्य-पूर्णां तनूम्,
आस्थायास्त्र-वरोल्लसत्-कर-पयोजाताभिरध्यासितम् ।
देवीभिर्हृदयादिभिश्च परितो विन्दुं सदाऽऽनन्ददम्,
श्री-चक्रं शरणं व्रजामि सततं सर्वेष्ट-सिद्धि-प्रदम् ।। १३।।

ल

लक्ष्मीशादि - पदैर्युतेन महता मञ्चेन संशोभितम्,
षट्-त्रिंशद्भिरनर्घ-रत्न-खचितैः सोपानकैर्भूषितम् ।
चिन्ता - रत्न - विनिर्मितेन महता सिंहासनेनोज्ज्वलम्,
श्री-चक्रं शरणं व्रजामि सततं सर्वेष्ट-सिद्धि-प्रदम् ।। १४।।

ह्रीं

ह्रीङ्कारैक-महा-मनुं प्रजपता कामेश्वरेणोषितम्,
तस्याङ्के च निषण्णया त्रि-जगतां मात्रा चिदाकारया ।
कामेश्या करुणा-रसैक-निधिना कल्याण-दात्र्या युतम्,
श्री-चक्रं शरणं व्रजामि सततं सर्वेष्ट-सिद्धि-प्रदम् ।। १५।।

श्रीं

श्रीमत्-पञ्च-दशाक्षरैक - निलयं श्रीषोडशी-मन्दिरम्,
श्रीनाथादिभिरर्चितं च बहुधा देवैः समाराधितम् ।
श्रीकामेश-रहस्सखी-निलयनं श्रीमद्-गुहाराधितम्,
श्री-चक्रं शरणं व्रजामि सततं सर्वेष्ट-सिद्धि-प्रदम् ।। १६।।

॥ श्रीललिता-त्रिपुर-सुन्दर्यै नमः॥

श्रीललिताम्बा-नीराजनम्

जय देवि!, जय देवि!, जय सुन्दरि तनये!, जय सुन्दरि ललिते! ।
शश्वद्-वसतिं कुरु भोरीश्वरि! मम हृदये।। जय देवि!, जगदम्ब!।

बिन्दु-त्रिकोण-सहितं षट्-कोणं वृत्तम् । तदुपरि वसु-दल-पत्रं वर्तुलमपि धत्तम् ।।
द्वि-गुणी-कृत-वसु-पत्रं मोहित-हर-चित्तं। द्वार चतुष्टय-निर्मित-यन्त्रोपरि तन्त्रम्।।

जय देवि!, जय देवि!, जय सुन्दरि तनये!, जय सुन्दरि ललिते! ।
शश्वद्-वसतिं कुरु भोरीश्वरि! मम हृदये।। जय देवि!, जगदम्ब!।।१।।

वामे कलशे पूजित - पूरितमाधारम् । तस्मिन्नर्पित-पूजित-पूरितमाधारम् ।।
एवं पञ्चावरणित-कर्णित-गुण-सारम् । मां देहि त्वं-भुवने! दुर्घट-संसारम् ।।

जय देवि!, जय देवि!, जय सुन्दरि तनये!, जय सुन्दरि ललिते! ।
शश्वद्-वसतिं कुरु भोरीश्वरि! मम हृदये।। जय देवि!, जगदम्ब!।।२।।

कलशामृत-जल-पूजित-नव-पात्र-समेतं । गणपति-योगिनी-बटुक-क्षेत्राधिप-युक्तम् ।।
अर्चन-विधिना सहितं श्रीगुरु-विधि-युक्तं, तारक-पण्डित-विद्या-भक्त्याऽखिल-दत्तम्।।

जय देवि!, जय देवि!, जय सुन्दरि तनये!, जय सुन्दरि ललिते! ।
शश्वद्-वसतिं कुरु भोरीश्वरि! मम हृदये।। जय देवि!, जगदम्ब!।।३।।

॥ श्रीललिता-त्रिपुर-सुन्दर्यै नमः॥

श्रीललिता-पुष्पाञ्जलि-स्तोत्रम्

ॐ समस्त-मुनि-यक्ष-किंपुरुष-सिद्ध-विद्याधर-
ग्रहा - सुर-सुराप्सरो-गण - मुखैर्गणैः सेविते!
निवृत्ति-तिलकाम्बरा-प्रकृति-शान्ति-विद्या-कला-
कलाप - मधुराकृते कलित एष पुष्पाञ्जलिः।।१।।
त्रिवेद-कृत-विग्रहे, त्रिविध-कृत्य-सन्धायिनि,
त्रिरूप - समवायिनि, त्रिपुर - मार्ग - सञ्चारिणि!
त्रिलोचन - कुटुम्बिनि, त्रिगुण - संविदुद्यत्-पदे,
त्रयि, त्रिपुर-सुन्दरि, त्रि-जगदीशि ! पुष्पाञ्जलिः ।।२।।

पुरन्दर - जलाधिपान्तक - कुबेर - रक्षोहर-
प्रभञ्जन - धनञ्जय - प्रभृति - वन्दनानन्दिते!
प्रवाल - पद-पीठिका-निकट-नित्य-वर्त्ति - स्वम्भू-
विरिञ्चि-विहित-स्तुते! विहित एष पुष्पाञ्जलिः ।। ३।।
यदानति-बलादहंकृतिरुदेति विद्या - वयस्तपो-
द्रविण - रूप - सौरभ - कवित्व - संविन्मयि!।
जरा-मरण-जन्मजं भयमुपैति तस्यै समाखिल-
समीहित - प्रसव - भूमि! तुभ्यं नमः ।। ४।।
निरावरण - संविदुद्भ्रम - परास्त - भेदोल्लसत्-
परात्पर - चिदेकता - वर-शरीरिणि, स्वैरिणि!।
रसायन - तरङ्गिणी - रुचि - तरङ्ग-सञ्चारिणि!,
प्रकाम - परिपूरिणि! प्रकृत एष पुष्पाञ्जलिः ।।५।।
तरङ्गयति सम्पदं तदनु-संहरत्यापदं
सुखं वितरति श्रियं परि-चिनोति हन्ति द्विषः।
क्षिणोति दुरितानि यत् प्रणतिरम्ब! तस्यै सदा शिवङ्करि!,
शिवे पदे, शिव - पुरन्ध्रि तुभ्यं नमः ।। ६।।
शिवे, शिव-सुशितलामृत-तरङ्ग-गन्धोल्लसन्नवावरण-देवते!,
नव-नवामृत- स्पन्दिनि! गुरु-क्रम-पुरस्कृते!, गुण-शरीर-नित्योज्ज्वले!,
षडङ्ग-परिवारिते! कलित एष पुष्पाञ्जलिः ।। ७।।
त्वमेव जननी पिता त्वमथ बन्धवस्त्वं सखा
त्वमायुरपरा त्वमाभरणमात्मनस्त्वं कलाः ।
त्वमेव वपुषः स्थितिस्त्वमखिला यतिस्त्वं गुरुः
प्रसीद परमेश्वरि! प्रणत-पात्रि, तुभ्यं नमः ।। ८।।
कञ्जासनादि-सुर-वृन्द-लसत्-किरीट-कोटि-प्रघर्षण-समुज्ज्वलदंघ्रि-पीठे!
त्वमेव यामि शरणं विगतान्यभावं दीनं विलोकय यदार्द्र-विलोकनेन ।। ९।।

भगवती श्री ललिता की आराधना

भारत में प्राचीन काल से **भगवती श्री ललिता-त्रिपुर-सुन्दरी की आराधना** प्रचलित है। '**ऋग्वेद**' के अनुसार '**लोपामुद्रा**' और **अम्भृण ऋषि** की कन्या '**वाक्**' ने **भगवती श्रीललिता की आराधना** की थी।

'**लोपामुद्रा**'–राज-कन्या थीं। आपमें पितृ-गृह में ही **परा-शक्ति भगवती ललिता** के प्रति भक्ति उत्पन्न हो गई थी। आपके पिता **त्रिपुरा** की मुख्य शक्ति '**भग-मालिनी देवी**' की उपासना करते थे। पिता की उपासना देखकर आपने भी **देवी** को प्रसन्न कर वर प्राप्त किया। आपके द्वारा **त्रिपुरा-विद्या** का उद्धार हुआ। अत: आपको **त्रिपुरा-विद्या** का **ऋषि** कहा गया।

'**अगस्त्य ऋषि**' ने पत्नी '**लोपामुद्रा**' से दीक्षित होकर **भगवती त्रिपुरा** की आराधना की।

ऋषि दत्तात्रेय, दुर्वासा ने **भगवती त्रिपुरा** की उपासना का विस्तार किया। **ऋषि दत्तात्रेय** ने '**त्रिपुरा-तत्त्व**' पर १८ हजार श्लोकों की '**दत्त-संहिता**' लिखी। **ऋषि दत्तात्रेय** से **भगवान् परशुराम** ने दीक्षा लेकर ५० खण्डों एवं ६ हजार सूत्रों में ग्रन्थ लिखा। **भगवान् परशुराम** के बाद इनके शिष्य **हारितायन सुमेधा** ने इस सम्बन्ध में '**संक्षिप्त-सार**', '**हारितायन संहिता**' एवं '**परशुराम कल्प-सूत्र**' नामक महत्त्व-पूर्ण ग्रन्थ लिखे, जिनके आधार पर आज तक **भगवती की आराधना** हो रही है। **महर्षि दुर्वासा** द्वारा रचित साहित्य लुप्त हो गया है, किन्तु आपका '**श्रीत्रिपुरा-महिम्न-स्तोत्र**' आज भी सुलभ है, जिससे स्पष्ट होता है कि आप '**त्रिपुरा-विद्या**' के महान् ऋषि थे। महा-भारत-काल के बाद **आदि-शङ्कराचार्य** के **परम-गुरु श्रीगौड़पाद आचार्य** ने **श्रीत्रिपुर-सुन्दरी की साधना** की और '**सुभगोदय**', '**श्रीविद्या-रत्न-सूत्र**' आदि महत्त्व-पूर्ण ग्रन्थों की रचना की। **परम-गुरु श्री गौड़पाद आचार्य** के बाद **आदि-शङ्कराचार्य जी** ने न केवल '**सौन्दर्य-लहरी**', '**श्रीललिता-त्रिशती-भाष्य**' जैसे प्रसिद्ध ग्रन्थों की रचना की, अपितु देश के चारों कोनों में '**मठ**' की स्थापना कर उनके द्वारा **श्रीत्रिपुर-सुन्दरी की आराधना** की विधि-वत् प्रतिष्ठा भी की।

आदि-शङ्कराचार्य द्वारा रचित '**सौन्दर्य-लहरी**' की **३५ टीकाएँ** प्राप्त होती हैं, इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि देश में आपके बाद **श्रीत्रिपुर-सुन्दरी की आराधना** की परम्परा कितनी विस्तृत हुई।

श्रीलक्ष्मी-धर ('सौन्दर्य-लहरी' की लक्ष्मी-धरा टीका), **श्रीपुण्यानन्दनाथ** (काम-कला-विलास), **श्रीनटनानन्दनाथ** (चिद्-वल्ली), **श्रीअमृतानन्दनाथ** (योगिनी-हृदय-दीपिका), **श्रीभास्करराय** (सेतु-बन्ध, वरिवस्या-रहस्य, सौभाग्य-भास्कर), **श्रीउमानन्दनाथ** (नित्योत्सव), **श्रीरामेश्वर सूरि** (सौभाग्य-सुधोदय), **श्रीपूर्णानन्द** (तत्त्व-चिन्तामणि, शाक्त-क्रम) आदि ऐसी महान् विभूतियाँ हमारे देश में हुईं, जिनके द्वारा **श्रीविद्या-साधना** का विकास हुआ।

रजि० सं० ३२९८१/५७

जगद्-गुरु श्रीशङ्कराचार्य जी द्वारा चारों दिशाओं में श्रीत्रिपुर-सुन्दरी की आराधना

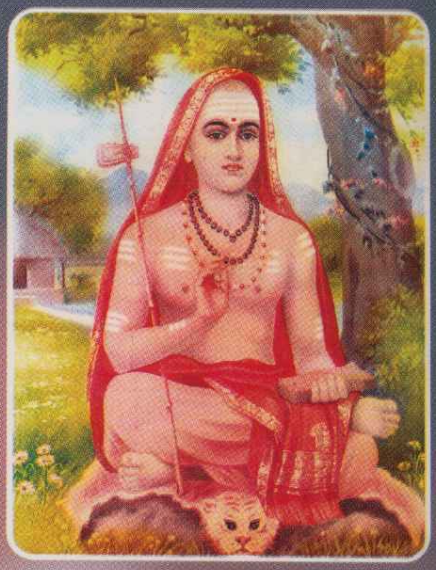

श्री शृङ्गेरी मठ
(श्रीशारदा-पीठ)

श्री गोवर्धन मठ
(श्रीविमला-पीठ)

श्री द्वारका मठ
(श्रीभद्रकाली-पीठ)

श्रीज्योति मठ
(श्रीपूर्णागिरि-पीठ)

प्रकाशक : श्रीऋतशील शर्मा, श्रीचण्डी-धाम, प्रयाग-६ ☎ ०९४५०२२२७६७